

**मीठे बच्चे - अपनी उन्नति के लिए पुरुषार्थ करते रहो, ज्ञान रत्नों का दान कर सदा अपना और दूसरों का कल्याण करने के निमित्त बनो**

**प्रश्न:-** ईश्वरीय सेवा करने के लिए कौन सा गुण होना जरूरी है? सेवा करने वाले बच्चों में कौन से ख्याल नहीं होने चाहिए?

**उत्तर:-** ईश्वरीय सर्विस में स्वभाव बहुत मीठा चाहिए। क्रोध में आकर किसी को आँख दिखलाई तो बहुतों का नुकसान हो जाता है। सर्विसएबुल बच्चों में अंहकार वा क्रोध बिल्कुल नहीं होना चाहिए। यही विकार बहुत विघ्न रूप बनता है। फिर माया प्रवेश कर कई बच्चों को संशयबुद्धि बना देती है। ईश्वरीय सर्विस करने के लिए यह ख्याल न आये कि नौकरी छोड़कर यह सर्विस करूँ। अगर नौकरी छोड़कर फिर यह सर्विस भी न करे तो बोझ चढ़ेगा।

**गीत:-** ओम् नमो शिवाए....

**ओम् शान्ति।** भगत लोग जब ओम् नमो शिवाए कहेंगे तो शिव के लिंग और शिव के मन्दिर को याद करेंगे। नमः कहकर पूजा करेंगे। वो हुई भक्ति। हम तो शिवबाबा को कहेंगे तुम मात पिता... अब तुम चित्र को नहीं कहेंगे। तुम जानते हो वह शिवबाबा हमको पढ़ा रहे हैं। रात दिन का फ़र्क हो गया। यह दुनिया को पता नहीं है। शिवबाबा निराकार आकर पाठशाला में पढ़ते हैं। क्या पढ़ते हैं? सहज राजयोग और ज्ञान। जैसे क्राइस्ट का पुस्तक है। क्राइस्ट ने जो ज्ञान दिया उनका बाइबिल बना। यहाँ शिव पुराण है परन्तु वह तो दूसरे किसी ने बनाया है। वास्तव में सच्चा शिव पुराण गीता है। बाप ने तुमको समझाया है। तुमको फिर औरों को समझाना है। शिवबाबा ने क्या समझाया? शिव का जन्म भी सुनाते हैं। अब शिव पुराण गीता को कहें? वा शिव पुराण को कहें? दो तो हो न सकें। भारत का धर्मशास्त्र एक होना चाहिए। जो धर्म स्थापन करते हैं उनकी जीवन कहानी बनाते हैं। इसने यह-यह सुनाया। क्राइस्ट ने भी ज्ञान सुनाया होगा जिसका बाइबिल बना। तो उस पुराण में बहुत कथायें हैं। अब कथा सुनाई है बच्चों को, परन्तु पार्वती का नाम डाल दिया है। उसमें तो दिखाया नहीं है कि पवित्रता की प्रतिज्ञा कराई है। मनमनाभव अक्षर शिव पुराण में नहीं होगा। शिव पुराण अलग है। यह है श्रीमत भगवत गीता। भगवान तो एक सिद्ध करना है। उनका नाम शिव है। वह गीता फिर कृष्ण पुराण हो जाती है। वास्तव में श्रीकृष्ण तो पतित-पावन है नहीं। शिव पतित-पावन है। भारत का धर्म शास्त्र है गीता। शिव पुराण को तो सब नहीं मानेंगे। अब कहेंगे गीता से देवी-देवता धर्म स्थापन हुआ। वह तो शिव ही कर सकता है। श्रीकृष्ण भी सांवरे से गोरा बनता है। फ़र्क बहुत है। बच्चों को समझाया जाता है, जो समझते हैं उनका फ़र्ज है अलौकिक कार्य करना। खुशी होनी चाहिए। अथाह खजाना मिलता है तो दान देना है। बाप का परिचय देना बहुत सहज है। भगत भगवान को याद करते हैं। भगवान आकर फल देते हैं। फल कौन सा? भगवान जीवनमुक्ति ही देंगे। सर्व का सद्गति दाता श्रीकृष्ण को नहीं कहा जाता। परमपिता परमात्मा को कहेंगे। तुम जानते हो परमात्मा निराकार है। श्रीकृष्ण को परमात्मा नहीं कह सकते। श्रीकृष्ण सभी आत्माओं का बाप बन नहीं सकता। सभी आत्माओं का पिता परमपिता परमात्मा ही गाया हुआ है। बच्चों को अच्छी रीति बाप का परिचय देना है। वह तो सर्वव्यापी या लिंग कह देते हैं। भला लिंग का आक्यूपेशन क्या होगा? परमपिता परमात्मा की तो महिमा है पतित-पावन ज्ञान का सागर। यह पोस्टर बाहर लगा देना चाहिए। कोई भी आये तो पढ़े। तुम जाकर राधे कृष्ण वा लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में समझाओ। हमारा लक्ष्मी-नारायण का चित्र बहुत अच्छा है, इस पर समझाना चाहिए। लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर वाले अक्सर गीता जरूर पढ़ते होंगे। अपनी उन्नति के लिए पुरुषार्थ करना है। बाप से ऊंच वर्सा पाने का शौक चाहिए। अपना और दूसरों का कल्याण करना है। शिवबाबा तो सभी का कल्याण करने वाला है। तुमको भी कल्याणकारी बनना है। बाबा कहते हैं मेरा अकल्याण कब होता नहीं। अकल्याणकारी रावण है, यह मनुष्य नहीं जानते। तुमको जाकर समझाना है। बादल भरकर फिर जाए बरसना है। शौक कितना होना चाहिए। अगर दान नहीं करते तो जरूर कहेंगे अपना कल्याण नहीं किया है, तब औरों का नहीं कर सकते हैं। सेन्टर्स पर बहुत अच्छे-अच्छे आते हैं। परन्तु औरों का कल्याण करें, वह नहीं करते। सुनते हैं फिर धन्धे में थक कर घर गये तो खलास। दान नहीं देते हैं तो वह कोई ब्राह्मण नहीं ठहरे। ब्राह्मण जानते हैं कि हमको देवता बनना है। हर एक को अपनी

दिल से बात करनी है। अगर किसको देवता नहीं बनाया तो ब्राह्मण कैसा? शिवबाबा कहते हैं मैं तो हूँ ही कल्याणकारी। तुमको भी कल्याणकारी बनना है। भल जिनको धारणा नहीं होती, उनके लिए स्थूल सर्विस है। यहाँ बच्चे आते हैं - जिनकी सर्विस की हुई है। सर्विस सेन्टर्स पर बच्चों को अपने से पूछना है कि हमने कितनों का कल्याण किया? आते बहुत हैं। थोड़े बहुत हैं जो सर्विस करते हैं। बाकी धर्थे आदि में लग जाते हैं। समझते हैं पवित्र बनना है सिफ। परन्तु धन दान भी करना है। अपने से पूछना है - अगर हम किसका कल्याण नहीं करेंगे तो पद क्या पायेंगे। बहुत बच्चियाँ कल्याण कर पण्डा बनकर आती हैं, उनमें भी नम्बरवार हैं। कोई फर्स्टक्लास, कोई सेकण्ड, कोई थर्ड में रखेंगे। तो अपना कल्याण करना चाहिए। जिनको अपने कल्याण का नहीं, वह क्या पद पायेंगे! बहुत ऐसे सेन्टर्स हैं जिनमें कई बच्चे सर्विस नहीं करते। इतनी ताकत नहीं जो जाकर दान करें। सबरे मन्दिरों में बहुत जाते हैं। जाकर ढूँढना पड़े - देवता धर्म वाला कौन है।

अब बाप कहते हैं मैं इस तन में आया हूँ। वह तो छोटे शरीर में जाकर आत्मा प्रवेश करती है। घोस्ट छाया के मुआफ़िक आते हैं। यह भी बन्डर है। कैसे घूमते-फिरते रहते हैं, कौन बैठ पता निकाले! ड्रामा में आत्मा को शरीर न मिलने कारण भटकती है। छाया रूप ले लेती है। जैसे परछाई होती है। घोस्ट की परछाई नहीं पड़ती। आया गुम हो गया। इन बातों में अपने को नहीं जाना है। दरकार ही नहीं है। इस खोज में जायें तो शिवबाबा भूल जाये। बाबा का फरमान है - निराकार बाप को याद करो। अपनी और दूसरों की देह को भूलना है। सबका प्यारा है शिवबाबा। बाप कहते हैं और कोई बात में न जाकर बाप को याद करो। यह है याद की यात्रा। मनमनाभव का अर्थ भी यह है। श्रीकृष्ण तो ऐसे कह न सके। श्रीकृष्ण को गाइड नहीं कहेंगे। निराकार ही गाइड बन सभी आत्माओं को ले जाते हैं - मच्छरों सदृश्य। आत्माओं का गाइड श्रीकृष्ण हो न सके। उनको पुर्नजन्म में जाना है, तो बाप का परिचय सबको देना है। भक्तों का भगवान एक है। वह बाप कहते हैं मामेकम् याद करो तो विकर्म विनाश हों। सर्विस का बच्चों को शौक होना चाहिए।

बच्चे मधुबन में आते हैं - मुरली सुनने, तो सुनाने वाला जरूर चाहिए। बाबा जहाँ जायेंगे तो सर्विस ही करेंगे। सर्विस का शौक रहता है। बच्चे याद करते हैं। वह सम्मुख मुरली सुनकर खुश होंगे। एक पंथ 10 कार्य सिद्ध होते हैं। बड़ी-बड़ी सभाओं में बाप नहीं जा सकता। वह बच्चों का काम है। बच्चों से सवाल जवाब करेंगे। संन्यासी आदि तो बाप के आगे आयेंगे ही नहीं। उनको तो मान चाहिए। बाप का पार्ट बन्डरफुल है। जो पास्ट हुआ ड्रामा। आगे चलकर बहुत बच्चे मिलने आयेंगे। पहले बच्चों को समझाना पड़े। गोप गोपियों को ही घर-घर में परिचय देना है। कोई भी उल्हना न दे, रह न जाये कि हमको पता नहीं पड़ा। राजा रानी तो कोई है नहीं जो इतला करें। नया हुनर निकालते हैं तो गवर्नेंट को दिखलाकर बृद्धि कराते हैं। यहाँ तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। निमन्त्रण बच्चों को देना है। इसके लिए चित्र आदि छपाते रहते हैं। यह चित्र बाहर भी जायेंगे। बच्चों को मेहनत करनी है। जो जो भाषा जानता है, वह उस भाषा में जाकर समझाये। अनेक भाषायें हैं। बाबा राय देते हैं - पूना और बैंगलोर तरफ सर्विस को खूब बढ़ाओ। सबको मालूम पड़े, सब भाषाओं में पर्चे छपाने हैं। बेहद की बुद्धि चाहिए। ऐसे भी नहीं कि बाबा नौकरी छोड़ूँ। नौकरी छोड़ी फिर यह सर्विस भी न कर सके तो बोझ चढ़ेगा। इसमें स्वभाव बहुत मीठा चाहिए। क्रोध बहुतों में है। ऑख दिखला देते हैं, फिर रिपोर्ट आती है। अच्छे-अच्छे बच्चे लिखते हैं कि हमारी सुनते नहीं हैं। यह अक्षर निकलना नहीं चाहिए। बच्चों में देह-अंहकार वा क्रोध है तो बहुतों को नुकसान पहुँचा देते हैं। बाप को बच्चों का कितना ख्याल रहता है। सब बच्चों पर नज़र रखनी होती है। मम्मा बच्ची थी, फिर भी माँ कहलाती थी, उनको फुरना रहता था। ज्ञान में भी कहाँ माया प्रवेश हो जाती है। फिर कई संशयबुद्धि भी बन पड़ते हैं। कितने कदम-कदम पर विघ्न पड़ते हैं। आज बच्चा है कल बदल जाता है। विकार पर कितना झगड़ा होता है। बहुत पूछते हैं इस संस्था की ग्लानि क्यों है? समझते नहीं हैं ना - शास्त्रों में श्रीकृष्ण की कितनी ग्लानि की है। फलानी को भगाया, यह हुआ। श्रीकृष्ण तो ऐसे कर न सके। यहाँ भी भगाने का कलंक लगाते हैं। घरबार छुड़ाते हैं। क्यों छुड़ाते हैं? वह तो कोई जानते नहीं। जब तक समझाया जाए - क्यों विघ्न पड़ते हैं? मुख्य है काम विकार, जिस पर तुम बच्चे विजय पाते हो। यह बन्डरफुल बाप है। बह्ना द्वारा ही ब्राह्मण रचे जाते हैं। पहले-पहले शिवबाबा का परिचय देना है। उनसे वर्सा मिलना है। माया ऐसी है तकदीर में नहीं है तो भूल जाते हैं, कितना माया के विघ्न पड़ते हैं। धारणा नहीं होती है। यह भी विघ्न है ना,

क्यों नहीं इतनी सहज सर्विस कर सकते हैं। भगवान बाप तो वह है। उस अल्फ को याद करो। भगवानुवाच, मामेकम् याद करो तो मुझ से वर्सा मिलेगा। ओ गाड फादर, भगत कहते हैं ना। तो बाप से वर्सा मिल रहा है। कुछ सर्विस का शौक होना चाहिए। नहीं तो पद ऊंचा पा नहीं सकते। सर्विस तो ढेर है। रोला बहुत है। बाप का नाम भी गुम। नॉलेज भी गुम है। तो पहचान देनी पड़े। हमको बाप का हुक्म मिला है। निमन्त्रण देना है। इसमें कोई क्रोध नहीं करेंगे। पोस्टर्स छपे हैं सर्विस के लिए, रखने के लिए नहीं बने हैं। शिवाए नमः अक्षर बहुत अच्छा है। पूरा शिवबाबा का परिचय है। निराकार शिवबाबा आया है, जरूर वर्सा दिया है। आकर पतित दुनिया को पावन बनाया है। ऐसे-ऐसे अपने से ख्याल कर फिर जाकर कोई को समझाना पड़ता है। शिव के मन्दिर भी बहुत हैं, गुप्त वेष में जाकर बोलना चाहिए। यह शिव कौन है? शिवबाबा को तो निराकार परमात्मा कहा जाता है। उन्होंने क्या किया जो इतना मन्दिर बनाया है। युक्ति से जाकर समझाना चाहिए। अब भल समझें वा न समझें, अन्त में याद आयेगा कि कोई ने हमको समझाया था। अच्छ!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) अपना कल्याण करने के लिए सर्विस का बहुत-बहुत शौक रखना है। थककर बैठ नहीं जाना है, मनुष्य को देवता बनाने की सेवा जरूर करनी है।
- 2) ऐसा कोई कर्म नहीं करना है जो कोई रिपोर्ट निकाले या मात-पिता को फुरना हो, किसी भी हालत में विघ्न रूप नहीं बनना है।

**वरदान:-** मर्यादा की लकीर के अन्दर सदा छत्रछाया की अनुभूति करने वाले मायाजीत, विजयी भव बाप की याद ही छत्रछाया है, जितना याद में रहते उतना साथ का अनुभव होता है। छत्रछाया में रहना अर्थात् सदा सेफ रहना। जो संकल्प से भी छत्रछाया से बाहर निकलते हैं उन पर माया का वार होता है। छत्रछाया के नीचे, मर्यादा की लकीर के अन्दर रहने से कोई की हिम्मत नहीं अन्दर आने की। लेकिन यदि लकीर से बाहर निकले तो माया है ही होशियार, इसलिए साथ के अनुभव से मायाजीत बनो।

**स्लोगन:-** अशरीरी बनने का अभ्यास ही समाप्ति के समय को समीप लाने का आधार है।

“मीठे बच्चे – कछुये मिसल सब कुछ समेटकर चुप बैठ स्वदर्शन चक्र फिराओ, बाप जो सर्व सम्बन्धों की सैक्रीन है, उसे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे”

**प्रश्न:-** ईश्वरीय कुल के बच्चों प्रति बाप की श्रीमत क्या है?

**उत्तर:-** तुम जब ईश्वर के बच्चे बने, उनके सम्मुख बैठे हो तो प्यार से उसे याद करो। उनकी श्रीमत पर चलो। जितना उसे याद करेंगे उतना नशा रहेगा। परन्तु माया रावण देखता है कि मेरे ग्राहक छिनते हैं तो वह भी युद्ध करता है। बाबा कहते हैं बच्चे कमज़ोर मत बनो। मैं तुम्हें शक्ति देने लिए बैठा हूँ।

**गीत:-** धीरज धर मनुआ ....

**ओम् शान्ति**। यह कौन कहते हैं बच्चों को कि हे बच्चे, क्योंकि मनुआ कहा जाता है आत्मा को। आत्मा में ही मन-बुद्धि हैं। तो यह भी नाम रख दिया है। नाम तो बहुत चीज़ों के बहुत रखे हैं जैसे परमपिता परमात्मा, बाबा, कोई फिर फादर कहते हैं। तो बाबा है सबसे सिम्पुल। बाबा कहते हैं तुम किसकी सन्तान हो, वह याद आता है? अब तुम बच्चे बैठे हो, सामने कौन है? आत्मायें कहेंगी बाबा बैठा है। कितनी सिम्पुल बात है। बच्चे जानते हैं हम आत्माओं का परमपिता परम आत्मा पिता है। मनुष्य तो छोटे, बड़े सबको बाबा कह देते हैं और यह फिर आत्मा अपने बाबा को बाबा कहती है। ओ गॉड फादर कहते हैं। अब शरीर के फादर को तो गॉड फादर नहीं कहेंगे। तुम जानते हो हम उस बाबा के सामने बैठे हैं, यह आत्मा की बात है शिवबाबा समझाते हैं तो मैं कौन हूँ! मैं परम आत्मा हूँ। मैं तुम सभी आत्माओं का परमधाम में रहने वाला पिता हूँ, इसलिए मुझे परम आत्मा कहते हैं। इकट्ठा करने से हो जाता है परमात्मा। कितना सहज है। यह कौन बैठा है? शिवबाबा, वह न होता तो यह ब्रह्मा भी नहीं होता। तुम बच्चों की दिल में हमेशा उनकी याद रहती है। है वह भी आत्मा, कोई फ़र्क नहीं है। जैसे आत्मा स्टार है, उस स्टार का साक्षात्कार होता है। वैसे बाप का भी स्टार रूप में साक्षात्कार होगा। बाकी यह जो कहते हैं कि बहुत तेज है, सहन नहीं कर सकते। यह मन की भावना है। बाकी तो बाप यथार्थ करके समझाते हैं कि जैसे तुम आत्मा हो वैसे मैं भी आत्मा हूँ। मुझे भी इस तन में इस आत्मा के बाजू में भ्रकुटी में बैठना है। तो वह बैठ समझाते हैं कि तुम आत्माओं में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। सो भी हर एक में अपना-अपना पार्ट है। कहते हैं आत्मा परमात्मा अलग रहे बहुकाल.... अब परम आत्मा अक्षर क्लीयर है। उनको परमात्मा कहने से मूँझ गये हैं। है तो आत्मा परन्तु सदा परमधाम में रहने वाली परम आत्मा है। ब्रह्मा को परम आत्मा नहीं कहेंगे। यह सब हैं जीव आत्मायें। इनमें कोई पाप आत्मा, कोई पुण्य आत्मा है। बाप कहते हैं मुझे पाप वा पुण्य आत्मा नहीं कहा जाता है। मुझे परमात्मा ही कहा जाता है। मेरा भी पार्ट है। एक बार आकर पतित दुनिया को पावन बनाता हूँ। याद भी करते हैं कि पतित-पावन आओ। परन्तु कोई समझते थोड़े ही हैं कि हम पतित, रावण सम्प्रदाय हैं। कहते हैं रामराज्य चाहिए। रावण को जलाते भी हैं परन्तु यह नहीं जानते कि हम ही रावण सम्प्रदाय हैं। जरूर पतित हैं तब तो बुलाते हैं। कृष्ण को तो नहीं बुलाते। उनको तो परम आत्मा नहीं कहते। हम सबका बाप जो परमधाम से आया है, उसको ही परम आत्मा कहा जाता है। ईश्वर वा भगवान कहने से रोला पड़ जाता है। बाप इस जीव आत्मा द्वारा समझाते हैं। तुमको कहते हैं बच्चे अशरीरी भव। तुम मेरे बच्चे थे, जब तुमको भेजा था। स्वर्ग में शरीर धारण कर आये, चक्र लगाते-लगाते अब तुमने 84 का चक्र पूरा किया। इस समय सब रावण की सन्तान हैं। रावण ने ही पतित बनाया है। अब तुम बने हो ईश्वरीय सन्तान। अब बाबा आया है। कहते हैं मेरा पार्ट है आसुरी सम्प्रदाय को दैवी सम्प्रदाय बनाना। मैं भी ड्रामा अनुसार अपने टाइम पर आता हूँ – कल्प के संगमयुगे। कलियुग है पतित पुरानी तमोप्रथान दुनिया, तब मैं आता हूँ सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी कुल का राज्य स्थापन करने। न हो तब तो स्थापन करूँ। फिर जब सूर्यवंशी चन्द्रवंशी होंगे तो वैश्य, शूद्र वंशी नहीं होंगे। अब तुम ईश्वरीय सन्तान बने हो, दैवी सन्तान बनने के लिए। तो बाप के साथ योग चाहिए जिससे विकर्म विनाश हों। एकरहेल्दी, एकरवेल्दी बनने के लिए स्वदर्शन चक्र फिराना पड़े। बाबा को याद करना है, इसमें ही मेहनत है। यह चार्ट रखो कि कितना समय बाबा को याद करते हैं? जितना याद में रहेंगे तो अतीन्द्रिय सुख की भासना आयेगी। तब कहा जाता है अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोपी वल्लभ के गोप गोपियों से पूछो। वल्लभ कहा जाता है बाप को। बाप का रूप भी बेटे जैसा ही होता है। वैसे आत्माओं का बाप भी आत्मा ही है परन्तु परमधाम में रहने वाला है। अगर वह बीज नीचे चक्र में चला आये तो झाड़ ऊपर चला जाये।

जैसे वह झाड़ होता है, उनका बीज नीचे झाड़ ऊपर। परन्तु यह उल्टा झाड़ है, जिसका बीजरूप परम आत्मा परमधाम में निवास करते हैं। आत्मायें भी पार्ट बजाने ऊपर से नीचे आती हैं। टाल टालियां निकलती जाती हैं, अब बाप कहते हैं तुमको रावण ने काला कर दिया है। अब तुमको गोरा बनना है। कृष्ण और नारायण दोनों को काला कर दिया है। लक्ष्मी को गोरा बनाते हैं, क्यों? काम चिता पर तो दोनों बैठे होंगे। कृष्ण के लिए कहते उनको तक्षक सर्प ने डसा, नारायण को फिर किसने डसा? कुछ भी समझते नहीं हैं। चित्र आदि भी सब रावण की मत पर बनाये हैं। अब बाबा आया है श्रीमत देकर रावण से लिबरेट करने के लिए। मैं सबका सदगति दाता हूँ, श्री श्री 108 जगतगुरु का टाइटल भी इनका है, जगत की सदगति करते हैं। ग्रंथ में इनकी महिमा बहुत लिखी है। सदगुरु सच्चा पातशाह, सचखण्ड स्थापन करने वाला। बाबा को यह सब कण्ठ था। परतु अर्थ का पता नहीं था। अपने को बहुत रिलीजस माइन्ड समझते थे। परन्तु थे रावण के कुल के। अब तुम ईश्वर के कुल के बने हो तो कितना प्यार से उनको याद करना चाहिए। बाबा आप कितने मीठे हो। हमको स्वर्ग में ले चलते हो, हेविनली गॉड फादर को जितना याद करेंगे तो नशा चढ़ेगा। अब किसके सामने बैठे हो? बाप कहते हैं हे लाडले बच्चे मैं तेरा परमपिता, तुम आत्माओं से बात कर रहा हूँ। अब मेरी श्रीमत पर क्यों नहीं चलते। परन्तु काम रूपी भूत गिरा देता है। बाप कहते हैं कमजोर क्यों बनते हो? श्रीमत मिल रही है फिर आसुरी मत पर क्यों चलते हो? यह युद्ध तो करनी है। माया समझती है मेरे ग्राहक छिनते हैं तो लड़ती है। तुमको बाप शक्ति दे रहा है। इतना पाठ पढ़ाते हैं, सब वेद शास्त्रों का सार समझाते हैं। सूक्ष्मवत्तन में तो नहीं सुनायेंगे। दिखाया है विष्णु की नाभी से ब्रह्मा निकला। सूक्ष्मवत्तन में नाभी कहाँ से आई? क्या-क्या बैठ लिखा है। अभी तुमको जो नॉलेज मिल रही है यह परम्परा नहीं चलती, यहाँ ही खलास हो जाती है। पीछे जो शास्त्र आदि बनाते हैं वह परम्परा से चलते हैं, यह ज्ञान तो प्रायः लोप हो जाता है।

अब बाप कहते हैं मेरी मत पर चलो, देही अभिमानी बनो, इसमें दौड़ी लगाकर मेरे गले का हार बनो। यह बुद्धि की दौड़ी है, संन्यासी नहीं कह सकते कि अशरीरी भव, मामेकम् याद करो। परमात्मा सभी को कहते हैं क्योंकि सभी मेरी सन्तान हैं, सबको वापिस ले जाने लिए आया हूँ। परन्तु सम्मुख तो बच्चे सुनते हैं, सारी दुनिया नहीं सुनती। शिवरात्रि मनाते हैं, शिव का मन्दिर भी है। जरूर आया है परन्तु शिव का इतना बड़ा चित्र नहीं है। वह तो स्टार है। अगर कहो तो कहेंगे कि क्या मन्दिर में चित्र रांग हैं? इसलिए बाप समझाते हैं बच्चे मैं भी आत्मा हूँ सिर्फ तुम जन्म-मरण में आते हो, मैं नहीं आता हूँ, तब तो तुमको लिबरेट कर सकूँ। मैं पतित-पावन हूँ तो जरूर पतित दुनिया में आना पड़े ना। अगर पतित-पावन न कहें तो समझेंगे नई दुनिया बनाते हैं। प्रलय हो जाती है फिर नई सृष्टि क्रियेट करते हैं। परन्तु उनको पतित-पावन कहा जाता है, तो इससे सिद्ध होता है कि यह सृष्टि तो अनादि है, इसकी प्रलय नहीं होती है। सिर्फ पतित होती है, उनको पावन बनाता हूँ इसलिए मैं नंदीगण पर वा भाग्यशाली रथ पर आता हूँ—तुम्हें नर से नारायण बनाने। सब चाहते भी हैं हम सूर्यवंशी बनें। कथा भी है—एक भक्त ने कहा कि मैं लक्ष्मी को वर सकता हूँ! नारद भक्त था ना। तो कहा तुम अपनी शक्ति तो देखो, पहले बन्दर से मन्दिर तो बनो तब तो लक्ष्मी को वर सकेंगे। अभी तुम मन्दिर लायक बन रहे हो। यह इस समय की ही सारी बात है। यह सब तुमको कौन बता रहे हैं? शिवबाबा ब्रह्मा दादा की भ्रकुटी के बीच में बैठ तुमको समझा रहे हैं। जैसे इनकी आत्मा भ्रकुटी में बैठी है तो जरूर उनके बाजू में बैठा होगा ना। यह नॉलेजफुल बाप तुमको सारा राज आदि मध्य अन्त का समझा रहे हैं, जिससे तुमको स्वदर्शन चक्र फिराना सहज हो। स्वदर्शन चक्र फिराने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, नहीं तो सजायें खायेंगे। विजय माला में भी नहीं आयेंगे। कछुए मिसल जब फ्री हो तो चुप बैठकर चक्र को फिराओ। अब तुमको घर वापिस जाना है। यह अन्तिम जन्म पवित्र रहो। इसको कहा जाता है लोकलाज, पतित बनने की मर्यादायें तोड़ो और कोई को याद नहीं करो। आप मुझे मर गई दुनिया। अशरीरी बन मेरा बनो तो विकर्म विनाश हो जायेंगे। सबको मरना तो है ही फिर कौन किसके लिए रोयेगा। हिरोशिमा में सब मर गये, कोई रोने वाला बचा ही नहीं इसलिए अब रोने वाली दुनिया से वापिस जाना है। इस गन्दी दुनिया में तो हर एक के अंग-अंग में कीड़े पड़े हैं, उसको याद क्यों करें। स्वर्ग में थोड़ेही ऐसे शरीर होंगे। वहाँ तो अंग-अंग में खुशबू होती है। बाबा कैसे गन्दे बांसी को गुल-गुल (फूल) बनाते हैं, तो उनको आना भी ऐसे पुराने लांग बूट में पड़ता है। बाबा कहते हैं कि भल घर में रहो परन्तु श्रीमत पर चलो। विकार में मत जाओ। तुम्हारे सामने शिवबाबा बैठा है, उनको भूलो मत। अच्छा!

गीत - धरती को आकाश पुकारे.. धरती पर रहने वालों को आकाश में रहने वाला बाप पुकारते हैं। अब मेरे पास आना है इसलिए नष्टेमोहा बनो। मैं तुम्हें स्वर्ग के अथाह सुख दूँगा। बाप है सभी सुखों का सैक्रीन। मामा, चाचा यह सब तुमको दुःख देने वाले हैं। तुम्हारा है सारी आसुरी दुनिया नर्क का संन्यास। संन्यासियों का है सिर्फ घर का संन्यास। तुमको इस डर्टी दुनिया नर्क को भूलना है।

इस समय मनुष्यों को थोड़ा भी धन मिलता है तो समझते हैं हम तो स्वर्ग में हैं। परन्तु इस दुनिया में कोई कितना भी साहूकार हो, देवाला निकला, एरोप्लेन आदि गिरा तो सब खलास, फिर रोने पीटने लग पड़ते हैं। वहाँ तो एक्सीडेंट की बात नहीं। कोई रोता पीटता नहीं। बाबा कहते हैं अच्छा तुम स्वर्ग में हो तो खुश रहो। मैं आया हूँ गरीबों के लिए, जो नर्क में हैं। दान भी गरीबों को दिया जाता है। साहूकार, साहूकार को दान करते हैं क्या? मैं तो सबसे साहूकार हूँ, मैं गरीबों को दान देता हूँ। इस समय के साहूकार तो अपने धन के, फैशन के नशे में ही चूर हैं।

अच्छा - बाबा समझानी देते हैं यह है इन्द्रप्रस्थ, यहाँ हंस मोती चुगेंगे। बाकी जो बगुले होंगे वह तो पत्थर ही उठायेंगे इसलिए बाबा कहते हैं यहाँ हंस (गुणग्राही) ही आने चाहिए, बगुले (अवगुण देखने वाले) नहीं। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) बाप की श्रीमत पर चल, देही-अभिमानी बन बाप के गले का हार बनना है। बाप की याद में रह अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करना है।
- 2) इस दुनिया से पूरा नष्टेमोहा बनना है। किसी के भी छी-छी शरीरों को याद नहीं करना है।

**वरदान:- सेवा के बंधन द्वारा कर्म-बन्धनों को समाप्त करने वाले विश्व सेवाधारी भव**

प्रवृत्ति में रहते हुए कभी यह नहीं समझो कि हिसाब-किताब है, कर्मबन्धन है...लेकिन यह भी सेवा है। सेवा के बन्धन में बंधने से कर्मबन्धन खत्म हो जाता है। जब तक सेवा भाव नहीं होता तो कर्मबन्धन खींचता है। कर्मबन्धन होगा तो दुख की लहर आयेगी और सेवा का बन्धन होगा तो खुशी होगी इसलिए कर्मबन्धन को सेवा के बंधन से समाप्त करो। विश्व सेवाधारी विश्व में जहाँ भी हैं विश्व सेवा अर्थ हैं।

**स्लोगन:- अपने दैवी स्वरूप की स्मृति में रहो तो आप पर किसी की व्यर्थ नज़र नहीं जा सकती।**

“मीठे बच्चे - बाप आये हैं तुम्हें सब घुटकों से छुड़ाने, तुम अभी इस शोक वाटिका से अशोक वाटिका में चलते हो, इस विषय वैतरणी नदी से पार जाते हो”

**प्रश्न:-** याद में बैठते समय किस बात का विष्ण नहीं पड़ता और किस बात का विष्ण पड़ता है?

**उत्तर:-** याद में बैठने के समय किसी भी आवाज का या शोरगुल का विष्ण नहीं पड़ता वह ज्ञान में पड़ता है लेकिन याद में माया का विष्ण जरूर पड़ता है। माया याद के समय ही विष्ण डालती है। अनेक प्रकार के संकल्प-विकल्प ले आती है इसलिए बाबा कहते हैं बच्चे सावधान रहो। माया का धूंसा मत खाओ। शिवबाबा जो तुम्हें अपार सुख देता है, सर्व संबंधों की सैक्रीन है—उसे बहुत-बहुत प्यार से याद करो। याद में तीखी दौड़ी लगाओ।

**गीत:-** रात के राही.....

**ओम् शान्ति**। मीठे-मीठे बच्चे जो यात्रा पर हैं। वैसे जो बैठे हैं उनको यात्रा पर थोड़ेही कहा जाता। यह यात्रा कैसी बन्दरफुल है। शान्ति की यात्रा, शान्तिधाम में जाने की यात्रा। रावण के राज्य में घुटका खाकर मरना होता है। एक सत्यवान सावित्री की कहानी है ना कि काल से भी सावित्री, सत्यवान की आत्मा को वापिस ले आई। वास्तव में ऐसी कोई बात है नहीं। बाकी आधाकल्प काल खाता है। अन्त में घुटका आता है ना। रावण जिसको वर्ष-वर्ष जलाते रहते हैं, वह हमारा दुश्मन है, यह नहीं जानते। बाबा कहते हैं मैं आया हूँ तुमको शोक वाटिका से निकाल अशोक वाटिका में ले जाने, जहाँ घुटका खाना नहीं होता। यहाँ तो अनेक प्रकार के घुटके हैं। माँ बाप पति बच्चों के घुटके खाते रहते हैं। पति विकार में फंसाते हैं। बाप आकर इन सब घुटकों से छुड़ाते हैं और नई दुनिया में ले जाते हैं। अभी आत्मा के पंख टूट गये हैं। आत्मा उड़ नहीं सकती। फिर याद की यात्रा नहीं कर सकते हैं। बरोबर यह बुद्धियोग की यात्रा है, लिखा है ना - मनमनाभव। इसका अर्थ कोई यात्रा थोड़ेही समझते हैं। कहते हैं राम ने बन्दरों की सेना ली और बन्दरों ने पुल बनाई। बन्दर पुल कैसे बनायेंगे। यह तुम्हारी याद के यात्रा की पुल बन रही है, जिस पुल से तुम विषय वैतरणी नदी पार हो जाते हो। बाप इस नदी में तैरना सिखलाते हैं। खिवैया है ना। विषय वैतरणी नदी से पार कराए शिवालय में ले जाते हैं। कहते हैं अमृत छोड़ विष काहे को खाए। तो ज्ञान को अमृत कहा जाता है। ज्ञान से सद्गति होती है। शास्त्रों को ज्ञान नहीं कहेंगे। वह है भक्ति की सामग्री। शास्त्र पढ़ने से सत्युग आ नहीं सकता, सद्गति हो नहीं सकती इसलिए उनको ज्ञान अमृत नहीं कहेंगे, वह है भक्ति। ज्ञान में पहले 100 प्रतिशत सद्गति फिर धीरे-धीरे नीचे उतरते हैं। यह नहीं कहेंगे कि सत्युग में भी दुर्गति होती है, वहाँ दुर्गति का नाम नहीं होता। कलियुग में सबकी दुर्गति होती है।

तुम जानते हो सर्व पर दया करने वाला बाप एक ही है जिसको श्री-श्री कहा जाता है। फिर श्री श्री का टाइटल सब पर रख देते हैं। श्री कहा जाता है देवताओं को। श्री लक्ष्मी-नारायण, श्री राम-सीता, तो ऐसा श्री बनाने वाले को श्री श्री कहा जाता है। तुम बाप के सामने प्रतिज्ञा करते हो कि हम कभी विकार में नहीं जायेंगे। अगर प्रतिज्ञा कर फिर भूल की तो बाप का राइट हैण्ड धर्मराज भी बैठा है। धर्मराज माफ नहीं करेगा। बाप भी गुप्त, ज्ञान भी गुप्त, मर्तबा भी गुप्त। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो कि हमको श्रीमत देने वाला कोई मनुष्य हो नहीं सकता। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा बाप रचना रचते हैं। प्रजापिता सूक्ष्मवतन में तो होता नहीं। जरूर यहाँ ही होगा। तुम बच्चे समझ गये हो कि ब्रह्मा इस समय ब्राह्मण है। इनको भविष्य में बादशाही मिलती है। देवतायें पतित दुनिया में तो राजाई कर न सकें। तो पुरानी दुनिया का विनाश चाहिए, विनाश होना भी है जरूर। अभी थोड़ी देरी है। तुम्हारा अभी नये झाड़ का सैपलिंग ही पूरा नहीं लगा है। आगे गाते थे - त्वमेव माताश्च पिता... सबके आगे यह महिमा गाते रहते हैं। समझते कुछ भी नहीं। अच्छा विचार करो ब्रह्मा माता कैसे हो सकते? लक्ष्मी-नारायण की भी अपनी राजाई चलती है। तो उनको मात पिता कह न सकें। तो इस समय परमपिता परमात्मा प्रैक्टिकल में मात-पिता का पार्ट बजा रहे हैं। फिर भक्ति मार्ग में महिमा गाई जाती है। उसमें भी पहले-पहले शिवबाबा को त्वमेव माताश्च पिता कहते हैं। पीछे लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम सबको कहते रहते। अक्ल तो कुछ है नहीं। शिवबाबा है सैक्रीन। यह मनुष्य-मात्र सब आसुरी मत पर दुःख ही देते हैं और मैं सबके एकज में सबसे जास्ती सुख देता हूँ। मैं दाता हूँ।

मैं तुम बच्चों को श्रीमत देता हूँ कि बच्चे तुम जितना याद की यात्रा पर रहेंगे, स्वदर्शन चक्र फिरायेंगे, कमल फूल समान बनेंगे उतना ऊंच पद पायेंगे। इन अलंकारों का अर्थ कोई समझा न सके। अलंकार तुम ही धारण करते हो। निशानी विष्णु को दे दी है। तीसरा नेत्र भी देवताओं को दे दिया है। वास्तव में तीसरा नेत्र भी तुमको मिलता है। त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी.... अक्षर है ना। इसका अर्थ भी इस समय तुम आत्मा की बुद्धि में है। आत्मा की बुद्धि में ही सब कुछ रहता है। मेरी आंख, नाक, कान भी शरीर नहीं कहता है। आत्मा कहती है यह मेरा शरीर रूपी महल है। आत्मा को मालूम पड़ा है कि मुझ आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट नूंधा हुआ है। कितनी गुप्त बातें हैं। आत्मा को राकेट भी कहते हैं, जिस आत्मा को शरीर छोड़ लण्डन में जाना होगा तो सेकेण्ड में चली जायेगी। उन्होंने कितना तीखा राकेट बनाया है, जो सुबह चले तो शाम को पहुँच जाये। आगे स्टीम्बर में 3-4 मास लग जाते थे। अभी भी स्टीम्बर में एक मास लग जाता है। एरोप्लेन में एक दिन। परन्तु आत्मा बहुत तीखा राकेट है, जो एक सेकेण्ड में पहुँच जाती है, जो कोई भी देख न सके। तुम आत्मा का आलराउन्ड पार्ट है। अच्छा परमात्मा का पार्ट क्या है? द्वापर से मेरा साक्षात्कार कराने का पार्ट है, जो-जो जिस भावना से मुझे याद करता है, उनकी मनोकामना पूर्ण करता हूँ। अभी मेरा ज्ञान देने का पार्ट है, पतितों को पावन बनाने का पार्ट है। तुमको मास्टर नॉलेजफुल गॉड के बच्चे मास्टर गॉड बनाता हूँ। जिन्होंने कल्प पहले पुरुषार्थ किया था, वहीं करेंगे। बच्चे कहते हैं कल्प पहले आये थे, अब फिर से वर्सा ले रहे हैं। किसके पास? मात-पिता के पास। सरस्वती सबकी माता है। उनकी माता यह ब्रह्मा। इनकी माता तो कोई है नहीं। शिवबाबा खुद कहते हैं तुम मेरी बन्नी (पत्नी) हो तो फिर मैं कहता हूँ पति बिगर खाना मैं कैसे खाऊंगा। तो अच्छा शिवबाबा और हम दोनों इकट्ठे खाते हैं। नशा तो रहता है ना। तुम भी खुद कहते हो कि बाबा दलाल बन आया है, अपने साथ सगाई कराने। तुम श्रीमत पर परमात्मा के साथ सबकी सगाई कराते हो। पण्डितों ने जो विकार का हथियाला बांधा है वह बाप कैन्सिल कराते हैं। बाप कहते हैं तुम ज्ञान चिता पर बैठो तो गोरे बनेंगे। काम चिता पर बैठ तुम काला मुँह क्यों करते हो! श्याम-सुन्दर का अर्थ तुम जानते हो। श्रीकृष्ण है सुन्दर, अभी तो वह भी श्याम है। अब बाप ने आकर अपना परिचय दिया है।

तुम हो पतित-पावन गॉड फादर के स्टूडेन्ट। तो यह पाठशाला है। पाठशाला में पढ़ाई होती है। मेहनत करनी पड़ती है और उन सतसंगों में मेहनत नहीं है। वहाँ तो गीता सुनी, ग्रंथ सुना और घर गया। वहाँ कोई थोड़ेही कहता है कि पवित्र बनो, यात्रा करो। आगे चल यह सब जिस्मानी यात्रायें आदि बन्द हो जायेंगी। बर्फ पड़ी वा एक्सीडेन्ट हुआ तो कोई जायेंगे नहीं क्योंकि तुम्हारी यात्रा जोर होती जायेगी। हमारी यात्रा है शिवालय तरफ। पहले शिव की पुरी शिवालय में जायेंगे। फिर शिव की स्थापन की हुई पुरी शिवालय (स्वर्ग) में जायेंगे। शिवपुरी और विष्णुपुरी दोनों को शिवालय कहेंगे क्योंकि मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों शिवबाबा ही देते हैं। तो सतयुगी दैवी घराना शिवबाबा स्थापन करते हैं।

अच्छा—याद में आवाज का विघ्न पड़ नहीं सकता। ज्ञान सुनने में शोर का विघ्न पड़ेगा। मनुष्य तो कहते हैं शान्ति करो, नहीं तो याद में विघ्न पड़ेगा। परन्तु योग में आवाज विघ्न नहीं डालता। विघ्न डालती है माया। बच्चों के साथ माया की युद्ध है। बच्चों को युद्ध के मैदान में हार नहीं खानी चाहिए। माया तो घूंसा लगाती रहती है। माया ने नाक पर घूंसा लगाया तो यह गिरा। फिर खड़े हुए फिर नाक पर लगाया तो यह गिरे। तो बाप कहते हैं यह माया काम क्रोध के घूंसे मारती है, इससे तुम्हें बहुत-बहुत सावधान रहना है। घूंसे नहीं खाने हैं।

अच्छा - मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) ज्ञान के सब अलंकारों को धारण कर स्वदर्शन चक्रधारी, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी अर्थात् मास्टर गॉड बनना है।
- 2) बाप के राइट हैंड धर्मराज को स्मृति में रख कोई भी विकर्म नहीं करने हैं। पावन बनने की प्रतिज्ञा करके विकार में नहीं जाना है।

**वरदान:-** दृढ़ प्रतिज्ञा द्वारा अलबेलेपन के लूज स्कू को टाइट करने वाले तीव्र पुरुषार्थी भव प्रतिज्ञा में लूज होने का मूल कारण है—अलबेलापन। जैसे कितनी भी बड़ी मशीनरी हो लेकिन एक छोटा सा स्कू लूज हो जाता है तो सारी मशीन को बेकार कर देता है, वैसे प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए प्लैन बहुत अच्छे बनाते हो, पुरुषार्थ भी करते हो लेकिन पुरुषार्थ वा प्लैन को कमजोर करने का स्कू एक ही है—अलबेलापन। वह नये-नये रूप में आता है। इसी लूज स्कू को टाइट करो। मुझे बाप समान बनना ही है—इसी दृढ़ संकल्प से तीव्र पुरुषार्थी बन जायेंगे।

**स्लोगन:-** बेहद की वैराग्य वृत्ति ही समय की समीपता का फाउण्डेशन है।

### मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य

अभी तो यह सारी दुनिया जानती है कि परमात्मा एक है, उस ही परमात्मा को कोई शक्ति मानते हैं, कोई कुदरत कहते हैं मतलब तो कोई न कोई रूप में जरूर मानते हैं। तो जिस वस्तु को मानते हैं अवश्य वह कोई वस्तु होगी तब तो उनके ऊपर नाम पढ़े हैं परन्तु उस एक वस्तु के बारे में इस दुनिया में जितने भी मनुष्य हैं उतनी मतें हैं, परन्तु चीज़ फिर भी एक ही है। उसमें मुख्य चार मतें सुनाते हैं - कोई कहता है ईश्वर सर्वत्र है, कोई कहता है ब्रह्म ही सर्वत्र है, कहते हैं सर्वत्र ब्रह्म ही ब्रह्म है। कोई कहता ईश्वर सत्यम् माया मिथ्यम्, कोई कहता ईश्वर है ही नहीं, कुदरत ही कुदरत है। वो फिर ईश्वर को नहीं मानते। अब यह हैं इतनी मतें। वो तो समझते हैं जगत् प्रकृति है, बाकी कुछ है नहीं। अब देखो जगत् को मानते हैं परन्तु जिस परमात्मा ने जगत् रचा उस जगत् के मालिक को नहीं मानते! दुनिया में जितने अनेक मनुष्य हैं, उन्हों की इतनी मतें, आखरीन भी इन सभी मतों का फैंसला स्वयं परमात्मा आकर करता है। इस सारे जगत् का निर्णय परमात्मा आकर करता है अथवा जो सर्वोत्तम शक्तिवान होगा, वही अपनी रचना का निर्णय विस्तारपूर्वक समझायेगा, वही हमें रचता का भी परिचय देते हैं और फिर अपनी रचना का भी परिचय देते हैं।

कई मनुष्य ऐसे प्रश्न पूछते हैं, हमको क्या साबती है कि हम आत्मा हैं! अब इस पर समझाया जाता है, जब हम कहते हैं अहम् आत्मा उस परमात्मा की संतान हैं, अब यह है अपने आपसे पूछने की बात। हम जो सारा दिन मैं मैं कहता रहता हूँ, वो कौनसी पॉवर है और फिर जिसको हम याद करते हैं वो हमारा कौन है? जब कोई को याद किया जाता है तो जरूर हम आत्माओं को उन्हों द्वारा कुछ चाहिए, हर समय उनकी याद रहने से ही हमको उस द्वारा प्राप्ति होगी। देखो, मनुष्य जो कुछ करता है जरूर मन में कोई न कोई शुभ इच्छा अवश्य रहती है, कोई को सुख की, कोई को शान्ति की इच्छा है तो जरूर जब इच्छा उत्पन्न होती है तो अवश्य कोई लेने वाला है और जिस द्वारा वो इच्छा पूर्ण होती है वो अवश्य कोई देने वाला जरूर है, तभी तो उनको याद किया जाता है। अब इस राज्ञ को पूर्ण रीति से समझना है, वह कौन है? यह बोलने वाली शक्ति मैं स्वयं आत्मा हूँ, जिसका आकार ज्योति बिन्दू मिसल है, जब मनुष्य स्थूल शरीर छोड़ता है तो वो निकल जाती है। भल इन ऑर्खों से नहीं दिखाई पड़ती है, अब इससे सिद्ध है कि उसका स्थूल आकार नहीं है परन्तु मनुष्य महसूस अवश्य करते हैं कि आत्मा निकल गई। तो हम उसको आत्मा ही कहेंगे जो आत्मा ज्योति स्वरूप है, तो अवश्य उस आत्मा को पैदा करने वाला परमात्मा भी उसके ही रूप मुआफिक होगा, जो जैसा होगा उनकी पैदाइस भी वैसी होगी। फिर हम आत्मायें उस परमात्मा को क्यों कहते हैं कि वो हम सर्व आत्माओं से परम हैं? क्योंकि उनके ऊपर कोई भी माया का लेप-छेप नहीं है। बाकी हम आत्माओं के ऊपर माया का लेप-छेप अवश्य लगता है क्योंकि हम जन्म मरण के चक्र में आती हैं। अब यह है आत्मा और परमात्मा में फर्क। अच्छा। ओम् शान्ति।

‘‘मीठे बच्चे - भारत जो साहूकार था वही अब गरीब बना है, बाप ही इस गरीब भारत को फिर से साहूकार बनाते हैं’’

**प्रश्न:-** तुम गोप-गोपियों में सबसे खुशनसीब कौन और कैसे?

**उत्तर:-** सबसे खुशनसीब वह है जो गॉडली ज्ञान डांस करते हैं, वही फिर सतयुग में जाकर प्रिन्स-प्रिन्सेज के साथ डांस करेंगे। ऐसे खुशनसीब बच्चे अभी बाप पर पूरा-पूरा बलि चढ़ते हैं, कहते हैं बाबा मैं तेरा, मेरा कुछ भी नहीं। आप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हो तो मैं क्यों नहीं बलिहार जाऊं।

**ओम् शान्ति**। बाप बच्चों को धीरज दे रहे हैं कि हे भारतवासी बच्चे, कौन से बच्चे? जो देवताओं के पुजारी हैं। वह मानते हैं हमारे ईष्ट देव बड़े देवतायें थे। क्रिश्णन क्राइस्ट की पूजा करेंगे। बौद्धी बुद्ध की पूजा करेंगे। जैन महावीर की पूजा करेंगे। हर एक अपने-अपने धर्म के बड़े की पूजा करेंगे अथवा याद करेंगे। देवी देवताओं के मन्दिर हैं। उनमें शिव का मन्दिर भी आ जाता है। वह है निराकार। ब्रह्मा, विष्णु, शंकर आकारी हैं और लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम, जगत अम्बा, जगत पिता है साकार। इन बातों को दुनिया वाले नहीं जानते हैं। तो जो देवताओं के पुजारी हैं उनके लिए बाबा कहते हैं कि धीरज धरो, अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है। भारत स्वर्ग था, लक्ष्मी-नारायण के राज्य को स्वर्ग कहा जाता है। लक्ष्मी-नारायण के राज्य को 5 हजार वर्ष हुए। सीताराम के लिए कहेंगे 3750 वर्ष हुए। यह तुम ब्रह्मा मुख वंशी ब्राह्मण कुल भूषण ही जानते हो। दुनिया में सब अंधकार में होने के कारण बुद्धिहीन हैं। उनको समझाना है कि तुम्हारा एक है लौकिक बाप, दूसरा है पारलौकिक बाप। वह है नई दुनिया का रचयिता। बाप नया घर बनाते हैं ना। बेहद का बाप नई सृष्टि बनाते हैं। अभी वह भारतवासी धर्म भ्रष्ट बन पड़े हैं। देवताओं की महिमा गाते हैं – सर्वगुण सम्पन्न... यह महिमा और कोई धर्म वाले की नहीं है। कोई भी धर्म वाले अपने ईष्ट देव की ऐसी महिमा नहीं गाते हैं। उनको देवताओं के भक्त मिलेंगे भी लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में। श्रीकृष्ण के भगत कृष्ण के मन्दिर में मिलेंगे। तुम जानते हो लक्ष्मी-नारायण सतयुग में भारत के मालिक थे। गोया भारतवासी सतयुग के मालिक थे। भारत बहुत साहूकार मालामाल था। जब आदि सनातन देवी-देवता धर्म था। यह है भारत का प्राचीन सहज राजयोग और सहज ज्ञान। देवी-देवता धर्म है पुराना। परन्तु मनुष्य भूल गये हैं कि देवी-देवता धर्म की स्थापना किसने की। बाबा ने समझाया है तुम हो संगमयुगी ब्राह्मण। वह कलियुगी ब्राह्मण भी कहते हैं कि हम प्रजापिता ब्रह्मा वंशी हैं। परन्तु वह यह नहीं जानते कि ब्रह्मा कब आये थे। तुम अब प्रैक्टिकल में हो। तुम जानते हो लक्ष्मी-नारायण इस भारत में ही राज्य करके गये हैं। उनसे ऊंच मनुष्य कोई है नहीं। मनुष्यों को यह मालूम ही नहीं कि सतयुग को कितने वर्ष हुए! वह तो सतयुग की आयु कितने अरब कह देते हैं। शास्त्र बनाने वालों ने अपनी मत डाल दी है। अब बाप तुम बच्चों को समझाते हैं जो भारत के असुल देवी-देवता धर्म के थे, उन्हें बहुत जन्मों के अन्त के जन्म में यहाँ आना है जरूर। यह वर्ण है ही भारतवासी देवी-देवता धर्म वालों के। पिछाड़ी वाले और धर्मों के नहीं हैं। तुम अभी ब्रह्मा वंशी ब्राह्मण बने हो। तुम पुजारी से पूज्य बन रहे हो। तुम माताओं को भारत माता शक्ति अवतार कहा जाता है। जगत अम्बा का भी रीइनकारनेशन कहेंगे। शिवबाबा ने इस संगमयुग में अवतार लिया है। तुमको अपना बच्चा बनाया है। तुम बच्चे जानते हो परमपिता परमात्मा जो सभी आत्माओं का बाप है वह है ब्रह्माण्ड का मालिक। उनको सृष्टि का मालिक नहीं कह सकते। भल पिता है परन्तु मालिक नहीं बनता है। यह भी गुह्य बात है। वह क्रियेटर है तो क्रियेशन का मालिक होना चाहिए। परन्तु बाबा कहता है मैं जो स्वर्ग स्थापन करता हूँ, उनका मालिक नहीं बनता हूँ। मालिक तुम बच्चों को बनाता हूँ। दुनिया में सब कहेंगे कि भगवान् सृष्टि का मालिक है, परन्तु वह मालिक है रचने के लिए। बाकी स्वर्ग का मालिक तो तुमको ही बनाते हैं। बाप का काम है बच्चों को सिर पर चढ़ाना। बाप सेवाधारी है ना। बच्चों को सब कुछ देकर चला जाता हूँ। बाप भी कहते हैं तुमको लायक बनाए नई सृष्टि रचवाकर उनका मालिक बनाए मैं रिटायर हो जाता हूँ। तुम ब्रह्माण्ड के भी मालिक कहलायेंगे क्योंकि तुम ब्रह्माण्ड के मालिक के बच्चे हो। तुम भी ब्रह्म महतत्व में जायेंगे तो ब्रह्माण्ड के मालिक कहलायेंगे। वहाँ भल तुम आत्मायें चैतन्य हो परन्तु आरग्न्स नहीं हैं। जब परमधाम में हो तो ब्रह्माण्ड के मालिक हो फिर तुम सृष्टि के मालिक बनेंगे। फिर तुमको राज्य भाग्य गँवाना पड़ेगा। यह ज्ञान न देवताओं को, न शूद्रों को हो सकता है। यह ज्ञान सिर्फ तुम ब्राह्मणों को है। बाबा कितनी गुह्य बातें समझाते हैं। कहते हैं तुम्हारा ही हीरो पार्ट है।

जगत अम्बा ज्ञान ज्ञानेश्वरी है। फिर राज-राजेश्वरी बनती है, ततत्वम्। ऐसे नहीं सिर्फ 2-4 का पार्ट है। सृष्टि का राज्य लेना और गँवाना यह भारतवासियों का खेल है। भारतवासी ही सृष्टि के मालिक थे, आज कंगाल बने हैं। अपवित्र राजाओं का भी राज्य नहीं है, पंचायती राज्य है। कहा जाता है रिलीजन इज माइट, सर्वशक्तिमान बाप बैठ देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। कितनी माइट देते हैं, जो हम सृष्टि के मालिक बन जाते हैं। भारत में तो अनेक धर्म हैं। गुजरात में रहने वाले कहते हैं हम गुजराती हैं। सतयुग में एक ही धर्म था। बाप कहते हैं तुमको फिर से गीता का ज्ञान सुनाता हूँ। जब तक जियेंगे तब तक ज्ञान अमृत पियेंगे। अनेक जन्मों का बोझा है, वह उत्तरने का है। उन्होंने तो युद्ध का मैदान दिखलाए कृष्ण का नाम डाल दिया है। भगवान कहते हैं तुम्हारे रथ में प्रवेश कर माया पर जीत पहनाने के लिए युद्ध के मैदान में खड़ा करता हूँ। साथ-साथ बच्चों को भी खड़ा करता हूँ। तुम जानते हो माया जीत बन स्वर्ग के मालिक बनेंगे। वह लोग फिर सिपाहियों को कहते हैं, कितना रात-दिन का फ़र्क है। तुमको मन्दिरों में जाकर सर्विस करनी चाहिए। उनको बताओ यह लक्ष्मी-नारायण ही भारत के मालिक थे। फिर ऐसे स्लोगन बनाओ कि भारतवासी स्वर्ग के मालिक थे। अब मिलकियत गँवा दी है। शास्त्रों में कृष्ण और महाभारत लड़ाई दिखा दी है। भक्ति में भगवान से मिलने के लिए साधना करते हैं। पुकारते हैं कि आकर माया रावण से लिबरेट करो। कितना हाहाकार मचा हुआ है। लड़ाई लगेगी तो अन्न, कपड़ा, कुछ भी नहीं मिलेगा। बाम्बे को क्वीन आफ इण्डिया कहते हैं क्योंकि उन्हें स्वर्ग के सुखों का पता नहीं है। हमको मालूम हैं तो हम अन्दर डांस करते रहते हैं। ज्ञान को सद्गति कहा जाता है। ज्ञान कौन सा? सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का। तुम अब बुद्धि से काम लो कि हम कैसे सबको समझायें। देवतायें जो पावन थे वही अब पतित बन गये हैं, उन्होंने दूँढ़ना पड़े। वह मन्दिरों में जल्दी मिलेंगे और वह भी खुश होंगे। जगत अम्बा का मन्दिर नीचे है वास्तव में दोनों का इकट्ठा होना चाहिए। तुम जानते हो ब्रह्मा की बेटी नम्बरवन प्रिन्सेज़ बनेगी। तुम जगत अम्बा के 84 जन्मों की बायोग्राफी बता सकते हो। तुम शिवबाबा की बायोग्राफी को जानते हो। ऐसे नहीं वह पत्थर-भित्तर में है। आगे हम भी ऐसे समझते थे। यह भी अभी कहते हैं। आगे तो अपने को बहुत ऊँचा समझते थे। सबसे ऊँचा जवाहरात का धन्धा है, उनसे ऊँचा यह अविनाशी ज्ञान रत्नों का धन्धा है। तुम 9 रत्न की अंगूठी भी पहनते हो। वह भी इनसे भेट है। आगे तो कुछ पता नहीं था।

आज मुख्य बात समझाई कि ब्रह्माण्ड का मालिक सृष्टि का रचयिता परमात्मा है। वह राज्य नहीं करते। राज्य हम बच्चों को देते हैं। हमको ही राज्य लेना और गँवाना है। यह भी तो मालूम होना चाहिए ना। गँवाये हुए राज्य में कितना जन्म लेते हैं? फिर अपने राज्य में कितने जन्म लेते हैं? और बाकी क्या चाहिए। मनुष्य तो देह अभिमानी होने कारण उल्टे लटके हुए हैं। तुम अभी सुल्टे हुए हो। मनुष्य जब मरते हैं तो फिर उनका मुँह फेर देते हैं। अब हमारा मुँह है परमधाम तरफ। हम यह शरीर छोड़ सीधे चले जायेंगे। अच्छा, बाप कहते हैं मनमनाभव। मेरे को याद करने से तुम मेरे पास आ जायेंगे। यहाँ बेहद में क्लास अच्छा है। अन्दर कमरे में बाबा को जैसे गर्भजेल भासता है। बेहद के बाप को बेहद चाहिए। इतना बड़ा बेहद का मालिक इस हृद (शरीर) में आकर बैठते हैं, तुम्हारी सर्विस करने। इनको आना ही है पतित शरीर, पतित दुनिया में। कहते हैं तुम बच्चों को पतित से पावन बनाए, स्वर्ग का मालिक बनाए फिर मैं चला जाता हूँ। अभी उथल-पाथल होगी। तो कई जो कच्चे हैं उनके तो देखकर ही प्राण निकल जायेंगे। किसको मरता हुआ देखकर भी कईयों को बड़ा शॉक आ जाता है और मर जाते हैं। तुमको तो बहुत मजबूत होना चाहिए। गाया भी जाता है कि मिरूआ मौत मलूका शिकार। स्वर्ग के लायक तो अब हम बन रहे हैं। बाप कहते हैं इस लड़ाई द्वारा ही गेट खुलते हैं। अब चलो वापिस, खेल पूरा हुआ। बाबा है रुहानी गाइड, रुहानी धाम में ले जाते हैं इसलिए अब बाप को याद करो तो अन्त मर्ती सो गति हो जायेगी। कोई-कोई का तो यहाँ बहुत छोटा जन्म होता है। गर्भ में बहुत सजायें खाते हैं। बाहर आया और बच्चा मर गया फिर दूसरा हिसाब-किताब भोगने जाता है। बाप कहते हैं मीठे-मीठे बच्चे इन ज्ञान रत्नों को बुद्धि में धारण करो। मन्दिरों में जाकर सर्विस करो, इसको मेहनत कहा जाता है। डरो मत। जो अपने धर्म के होंगे उनको तीर लगेगा। संन्यासियों के पास जाकर देखना चाहिए। (बिछू के डंक का मिसाल) देखो पत्थर है तो डंक नहीं लगाओ। ट्राई करनी चाहिए। कोशिश करते-करते सक्सेसफुल हो ही जायेंगे। अभी अजुन वह ज्ञान और योग की ताकत आई नहीं है इसलिए अभी संन्यासियों, राजाओं आदि को कहाँ समझाया है। जनक, परिक्षित, संन्यासी आदि सब पिछाड़ी में ही आते हैं। उनको ज्ञान देंगे तो फिर प्रभाव

निकल जायेगा। फिर उस समय तुम कहेंगे टू लेट। बाबा आया था झोली भरने, परन्तु तुम आये ही नहीं। हमेशा विचार करो कि कैसे सर्विस करनी चाहिए। निमन्त्रण छपाओ। आइडिया निकालो। सर्विस भी ड्रामा अनुसार ही होती है। हम साक्षी हो देखते हैं। भगवानुवाच बच्चों प्रति, गोप गोपियों प्रति। गोपी बल्लभ भगवान है। वह है बाप। गोप गोपियाँ सब तो यहाँ ही हैं। सत्युग में थोड़ेही होंगे। यह है गॉडली ज्ञान का डांस। फिर वहाँ जाकर प्रिन्स प्रिन्सेज के साथ डांस करेंगे। तुम बच्चे बड़े ही खुशनसीब हो, सिर्फ बलि चढ़ जाओ। बाबा मैं तेरी हूँ, क्यों नहीं बलिहार जाऊँगी। आप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हो। बड़ी जबरदस्त कमाई है। बाकी सब तो कब्राखिल होने हैं। कब्रिस्तान फिर परिस्तान होगा। देहली परिस्तान थी, परियों का स्थान था। देवी-देवताओं को परिस्तान की परियां कहा जाता है। अब कब्रिस्तान है। अच्छा!

**धारणा के लिए मुख्य सार:-**

- 1) सदा इस नशे में रहना है कि हम ब्रह्माण्ड और विश्व के मालिक बन रहे हैं। हम ब्राह्मण ही फिर देवता बनेंगे।
- 2) अपनी अवस्था मजबूत बनानी है। मौत से भी डरना नहीं है। बाप की याद में रहना है। धारणा कर औरों की सर्विस करनी है।

**वरदान:- बहानेबाजी के खेल को समाप्त करने वाले मास्टर दातापन के स्वमानधारी भव**

जिन बच्चों को बहानेबाजी का खेल आता है वह कहेंगे—ऐसे नहीं होता तो वैसा नहीं होता। इसने ऐसे किया, सरकमस्टांश वा बात ही ऐसी थी....अब इस बहानेबाजी की भाषा को समाप्त कर दृढ़ प्रतिज्ञा करो कि ऐसा हो या वैसा लेकिन मुझे तो बाप जैसा बनना है। दूसरा सहयोग दे तो मैं सम्पन्न बनूँ, नहीं। इस लेने के बजाए मास्टर दाता बन सहयोग, स्नेह, सहानुभूति देना ही लेना है। इस भावना से मास्टर दातापन के स्वमानधारी बन जायेंगे।

**स्लोगन:- जब मैं और मेरेपन के भावों से वैराग्य हो तब कहेंगे बेहद के वैरागी।**

“मीठे बच्चे - इस समय स्वयं भगवान् तुम्हारे सामने हाजिर-नाजिर है, वह बहिश्त की सौगात लेकर आया है, इसलिए अपार खुशी में रहो”

**प्रश्न:-** बाप अपने बच्चों पर कौन सी ब्लैसिंग करते हैं?

**उत्तर:-** बच्चों को आप समान नॉलेजफुल बनाना - यह उनकी ब्लैसिंग है। जिस नॉलेज के आधार से नर से श्री नारायण बन जाते हैं। बाबा कहते हैं बच्चे मैं तुम्हें राजयोग की शिक्षा देकर राजाओं का राजा बनाता हूँ। मेरे सिवाए ऐसी ब्लैसिंग कोई कर नहीं सकता।

**गीत:-** मुझे गले से लगा लो....

**ओम् शान्ति**। यह इस समय बांधेलियों का बुलावा है क्योंकि सारी दुनिया उदास है। उसमें भी गोपिकायें बहुत उदास हैं। वह गाती हैं हम सहन नहीं कर सकते। भक्ति में तो बुलाते रहते हैं परन्तु उनको मालूम नहीं है कि भगवान् कौन है? यहाँ की गोपिकायें जानती हैं परन्तु बांधेली हैं, दुःखी हैं। चाहती हैं कि बाप हमको गले का हार बना दे। रूद्र माला शिव की मशहूर है। तो इस समय ब्राह्मण ब्राह्मणियाँ चाहती हैं कि हम शिवबाबा के गले में पिरोये रहें क्योंकि इस समय स्त्री पुरुष आसुरी गले का हार है। बच्चियाँ चाहती हैं हम अब ईश्वरीय गले का हार बनें। जरूर जब बाप हाजिर-नाजिर है तब तो कहते हैं। जब कसम उठाते हैं तब कहते हैं ईश्वर को हाजिर-नाजिर जान सच कहेंगे। बड़े-बड़े गवर्मेन्ट के मिनिस्टर भी कसम उठाते हैं। गीता हाथ में लेते हैं क्योंकि भारत का धर्म शास्त्र है। तो एक ईश्वर का कसम उठाते हैं, ऐसे नहीं सब ईश्वर हैं, सबका कसम उठाते हैं। तो जरूर बाप कभी हाजिर-नाजिर हुआ होगा। इस समय तो नहीं है। सिर्फ तुम्हारे लिए हाजिर नाजिर है, जो तुम बच्चों को पढ़ा रहे हैं। शिवरात्रि भी मनाते हैं, जरूर आया होगा! कैसे आया, क्या आकर किया? यह कोई को पता नहीं है। इतना बड़ा सोमनाथ का मन्दिर है परन्तु उसने क्या किया, वह पता नहीं क्योंकि शिव के बदले श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। संगमयुग निकाल द्वापर डाल दिया है। तुम बच्चे जानते हो कि वह निराकार है, उनका मनुष्य जैसा आकार नहीं। अब वह हमारे सामने बैठा है। तुम उनको हाजिर-नाजिर देखती हो। बरोबर नॉलेजफुल, ब्लिसफुल है। नॉलेज देते हैं, यही उनकी ब्लिस है। इस नॉलेज की ब्लिस से तुम नर से नारायण बनते हो। वह ब्रह्मा तन से खुद पढ़ा रहे हैं। बाप खुद कहते हैं लाडले बच्चे मैं तुमको राजयोग सिखलाकर राजाओं का राजा बनाता हूँ। श्रीकृष्ण नहीं सिखला सकते। वह खुद राजाओं का राजा बना है। वह सिर्फ एक श्रीकृष्ण या लक्ष्मी-नारायण नहीं होगा। यह तो सारी सूर्यवंशी डिनायस्टी थी। उनका राज्य अब माया ने छीन लिया है। अब मैं फिर सम्मुख आया हूँ। अब तुम ब्राह्मणों के सम्मुख हाजिर-नाजिर हूँ।

अब बाप जो इतना दूरदेश से आया होगा तो जरूर कोई सौगात लाई होगी। लौकिक बाप जब आते हैं तो कितनी सौगात लाते हैं। यह तो सबका बाप है, जिसको इतना सब याद करते हैं। दूरदेश से आते हैं तो हाथ खाली थोड़ेही आयेगा? बाप कहते हैं मैं तुम्हारे लिए सौगात लाता हूँ, जो कोई मनुष्य ला न सके। मैं बहिश्त हेविन लाता हूँ। कितनी बड़ी सौगात है। बाबा साक्षात्कार भी करते हैं, वहाँ कितना सुख है। अंग-अंग में सुगंध है। लक्ष्मी-नारायण के अंग-अंग में सुगंध है। यह तन तो कीड़ों से भरा हुआ है। बाबा कीड़ों को उठाकर भ्रमरी बनाते हैं। यहाँ के शरीर तो कीटाणुओं से भरे हुए रोगी हैं। वहाँ के शरीर कितने सुन्दर हैं। मन्दिरों में भी कितनी सुन्दर मूर्तियां बनाते हैं। कितना फ़र्क है - इस समय के शरीर और उन शरीरों में। 5 हजार वर्ष की बात है, यह भारत इन्द्रप्रस्थ था। वहाँ आत्मा भी पवित्र थी तो शरीर भी पवित्र था। बाबा ठिक्कर के बर्तन से तुमको सोने का बर्तन बनाते हैं। बाप तुम्हारी पूरी सर्विस कर क्या से क्या बनाते हैं। बाप का भी क्या पार्ट है फिर टीचर और सतगुरु का भी पार्ट बजाते हैं। उनको कोई बाप, टीचर, गुरु नहीं। तुम्हारे लौकिक बाप का तो बाप टीचर गुरु जरूर होगा। शिवबाबा कहते हैं मेरा कोई नहीं। परन्तु उनके आक्यूपेशन को कोई नहीं जानते। जब तक किसको स्वर्ग का मालूम न पड़े तब तक कोई भी जान नहीं सकते कि हम नर्क में हैं। ग्रंथ में पढ़ते हैं मूत पलीती... परन्तु अपने को वह नहीं समझते। बाप आया है ज्ञान देकर काले को गोरा बनाने के लिए। इस समय तुम ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा बन रहे हो। संन्यासी पवित्र प्रवृत्ति मार्ग नहीं बना सकते हैं, वह यह नहीं कह सकते कि हम तुमको राजाओं का राजा बनाते हैं। वह निवृत्ति मार्ग के हैं। डरकर घरबार छोड़ जाते हैं, यहाँ कोई डर नहीं। बाप के पास बच्चे आये हैं कहते हैं बाबा

हमारे में ताकत है। इकट्ठे रह पवित्र रह सकते हैं। अगर कोई कन्या पर मार पड़ती है तो कन्या को बन्धन से छुड़ाकर गन्धर्वी विवाह कर सकते हैं, हम जल नहीं मरेंगे। ज्ञान तलवार बीच में रखेंगे। दोनों ब्राह्मण ब्राह्मणी, भाई-बहन कैसे विष पी सकते। शास्त्रों में भी गन्धर्वी विवाह के लिए लिखा है। परन्तु इसका अर्थ नहीं समझते। संन्यासी तो कह देते नारी नर्क का द्वार है। उन्हों के पास ज्ञान तलवार तो है नहीं जो इकट्ठे रह पवित्र रह सकें। तुम उनसे बहादुर हो, काम चिता से उतर ज्ञान चिता पर बैठते हो। तो काले से गोरे बन जाते हो। संन्यासी तो आजकल शादी भी कराते हैं, चर्च में भी शादियाँ होती हैं। नहीं तो क्राइस्ट को क्यों क्रास पर चढ़ाया? इस पवित्रता के कारण। कहा यह कौन है जो कहते हैं पवित्र बनो। आफतें तो आती हैं। यहाँ भी शिवबाबा पर नहीं आती हैं परन्तु जिसमें प्रवेश करते हैं लांग बूट में, उस पर आती हैं। वाट वेन्डे....(रास्ते चलते ब्राह्मण फंस गया) पुरानी जुत्ती है ना। यह थोड़ेही कहते हैं मैं श्रीकृष्ण हूँ। कहते हैं राजयोग सीखूंगा तो नर से नारायण बनूंगा, परन्तु अब नहीं हैं। वैसे बच्चों को निश्चय है कि हम नर से नारायण, नारी से लक्ष्मी बनेंगे। फेल नहीं होंगे जो क्षत्रिय बनें। राम को 33 से कम मार्क्स मिली तो चन्द्रवंशी में चले गये। ऐसे तो सूर्यवंशी भी चन्द्रवंशी घराने में आते हैं। उस समय (सत्युग के अन्त में) लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम को राज्य देते हैं, लक्ष्मी-नारायण भी पुनर्जन्म लेते-लेते त्रेता में आते हैं, रजवाड़े कुल में जन्म लेते रहते हैं। फिर सीता राम नाम चला आता है। लक्ष्मी-नारायण नाम खलास हो जाता है।

अब प्रश्न पूछता हूँ स्वदर्शन चक्र कौन सा है? (एक दो से पूछा) हाँ, यह है चक्र। कैसे देवता से क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र... अब ब्राह्मण वर्ण में आते हैं.. यह चक्र जितना फिरायेंगे उतना विकर्म विनाश होंगे, इससे रावण का गला कटता है। तुम बच्चों का बेहद के बाप से अथाह प्यार है। तुम कहते भी हो बाबा हम आपका बिछुड़ना सहन नहीं कर सकते। ऐसी बच्चियाँ भी हैं जो बंधन में हैं, तड़फती हैं क्योंकि यह है मात-पिता... एक तो माता जगत अम्बा है, जिसको सब याद करते हैं। परन्तु जगत अम्बा का पिता कौन है, यह किसको पता नहीं कि ब्रह्मा, सरस्वती का बाप है। पुजारी लोग यह नहीं जानते हैं कि यह सरस्वती ही फिर लक्ष्मी बनती है। फिर 84 जन्म ले फिर यही सरस्वती बनती है। यह ज्ञान इस बाबा के पास थोड़ेही था। इसमें ज्ञान होता तो जरूर किसी गुरु से मिला हुआ होता। फिर उस गुरु की महिमा भी करते। फिर उस गुरु के शिष्य भी होते। वह भी बताते परन्तु बाबा का कोई साकार गुरु नहीं है। बाप कहते हैं मैं तुम्हारा बाप, टीचर, गुरु हूँ, मैं इस पुरानी जुत्ती में बैठ पढ़ता हूँ। तो यह फिर माता हो गई इसलिए उनको मात-पिता कहते हैं। तुम मात-पिता जो गाते हैं वह ब्रह्मा सरस्वती को नहीं कह सकते। ब्रह्मा थोड़ेही वैकुण्ठ का रचता है। बाप तो बाप है और यह ब्रह्मा तुम्हारी मम्मा है। कलष पहले इनको (ब्रह्मा को) मिलता है। परन्तु सरस्वती की महिमा बढ़ाने के लिए उनको आगे रखा है। सरस्वती का नाम गॉडेज ऑफ नॉलेज मशहूर है। विदुत मण्डली वाले भी सरस्वती का लकब रख लेते हैं।

अच्छा बाबा कहते हैं कितना समझाकर कितना समझायें, मनमनाभव। बस सिर्फ मुझे याद करो और मेरे वर्से को याद करो तो तुम स्वर्ग में चले जायेंगे। वहाँ भी तो नम्बरवार ही होंगे ना। सूर्यवंशी की रॉयल दास-दासियाँ भी तो हैं। तो प्रजा की भी दास-दासियाँ होंगी। चन्द्रवंशी राजा रानी की भी दास-दासियाँ तो हैं। वह सब यहाँ ही बन रही हैं। पूछो तो बता सकते हैं कि अगर अब तुम्हारा शरीर छूट जाए तो क्या जाकर बनेंगे? अच्छा कोई भी बात समझ में न आये तो पूछ सकते हो। याद रखना योग ठीक नहीं होगा तो वह सुख महसूस नहीं होगा। शोक वाटिका में बैठे होंगे, स्वर्ग है अशोक वाटिका। सीता अशोक वाटिका में नहीं, शोक वाटिका में थी। अब तो सब शोक वाटिका में बैठे हैं ना। मनुष्यों को चिता रहती है कि पता नहीं लड़ाई होगी तो क्या होगा? हम तो कहते हैं कि लड़ाई लगे तो स्वर्ग के गेट्स खुलेंगे।

अच्छा - याद रखना, सच्ची दिल पर साहेब राजी। अगर अन्दर शैतानी होगी तो विघ्न डालते रहेंगे। तो फिर कड़ी सजायें खायेंगे। ट्रेटर्स को हमेशा कड़ी सजायें मिलती हैं, यह तो सुप्रीम जज भी है। (श्रीकृष्ण का चित्र दिखलाकर) देखो इन पर भी कितने कलंक लगाये हैं। इसने तो न कपड़े चुराये और न ही कंस जरासंधी को मारा। उसका भी (श्रीकृष्ण का) मुँह काला कर दिया है। अच्छा।

बापदादा तो तुम बच्चों के सम्मुख हाजिर-नाजिर है। तुम कहेंगे हमारी नज़र के सामने है। पतित बूट में आया है। भगवान खुद कहते हैं मैंने पतित बूट में प्रवेश किया है तब तो पावन बने। अब ब्रह्मा की रात है, तो ब्रह्मा भी रात में होगा ना। फिर

विष्णु बनेंगे तो दिन हो जायेगा । अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों को यादप्यार दे रहे हैं । दादा कहो वा गुप्त माँ कहो । वन्डरफुल राज है । बापदादा मीठे-मीठे बच्चों को नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार क्यों कहते? जानते हो बाबा प्यार तब करेंगे जब बाबा मुआफ़िक सर्विस करते होंगे । जो जैसी मदद करते हैं, वह भी तो प्रजा में आयेंगे ना । उसमें भी नम्बरवार साहूकार प्रजा भी होती है ना । अच्छा । गुडमार्निंग । रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते ।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) सच्चे साहेब को राजी करने के लिए बहुत-बहुत सच्ची दिल रखनी है, कोई भी विघ्न नहीं डालना है ।
- 2) सुख का अनुभव करने के लिए अपना योग ठीक रखना है । स्वदर्शन चक्र फिराते विकर्मों को भस्म करना है ।

**वरदान:-** न्यारी अवस्था में स्थित रह हर कार्य करने वाले सर्व के वा परमात्म प्यार के अधिकारी भव जैसे बाप सबसे न्यारा और सबका प्यारा है । न्यारापन ही प्यारा बना देता है । जितना अपनी देह के भान से न्यारे होते जायेंगे उतना प्यारा बनेंगे । बीच-बीच में प्रैक्टिस करो देह में प्रवेश होकर कर्म किया और अभी-अभी न्यारे हो गये । ऐसे न्यारी अवस्था में स्थित रहने से कर्म भी अच्छा होगा और बाप के वा सर्व के प्यारे भी बनेंगे । परमात्म प्यार के अधिकारी बनना—कितना बड़ा फायदा है ।

**स्लोगन:-** शुभ भावना का स्टॉक फुल हो तो व्यर्थ को फुलस्टॉप लग जायेगा ।

### मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य -

“आत्मा कभी परमात्मा का अंश नहीं हो सकती है”

बहुत मनुष्य ऐसे समझते हैं, हम आत्मायें परमात्मा की अंश हैं, अब अंश तो कहते हैं टुकड़े को । एक तरफ कहते हैं परमात्मा अनादि और अविनाशी है, तो ऐसे अविनाशी परमात्मा को टुकड़े में कैसे लाते हैं! अब परमात्मा कट कैसे हो सकता है, आत्मा ही अज्ञर अमर है, तो अवश्य आत्मा को पैदा करने वाला अमर ठहरा । ऐसे अमर परमात्मा को टुकड़े में ले आना गोया परमात्मा को भी विनाशी कह दिया लेकिन हम तो जानते हैं कि हम आत्मा परमात्मा की संतान हैं । तो हम उसके वंशज ठहरे अर्थात् बच्चे ठहरे वो फिर अंश कैसे हो सकते हैं? इसलिए परमात्मा के महावाक्य हैं कि बच्चे, मैं खुद तो इमार्टल हूँ, जागती ज्योत हूँ, मैं दीवा हूँ मैं कभी बूझता नहीं हूँ और सभी मनुष्य आत्माओं का दीपक जगता भी है तो बुझता भी है । उन सबको जगाने वाला फिर मैं हूँ क्योंकि लाइट और माइट देने वाला मैं हूँ, बाकी इतना जरूर है मुझ परमात्मा की लाइट और आत्मा की लाइट दोनों में फर्क अवश्य है । जैसे बल्ब होता है कोई ज्यादा पॉवर वाला, कोई कम पॉवर वाला होता है वैसे आत्मा भी कोई ज्यादा पॉवर वाली कोई कम पॉवर वाली है । बाकी परमात्मा की पॉवर कोई से कम ज्यादा नहीं होती है तभी तो परमात्मा के लिये कहते हैं कि वह सर्वशक्तिवान है अर्थात् सर्व आत्माओं से उसमें शक्ति ज्यादा है । वही सृष्टि के अन्त में आता है, अगर कोई समझे परमात्मा सृष्टि के बीच में आता है अर्थात् युगे युगे आता है तो मानो परमात्मा बीच में आ गया तो फिर परमात्मा सर्व से श्रेष्ठ कैसे हुआ । अगर कोई कहे परमात्मा युगे युगे आता है, तो क्या ऐसा समझें कि परमात्मा घड़ी घड़ी अपनी शक्ति चलाता है । ऐसे सर्वशक्तिवान की शक्ति इतने तक है, अगर बीच में ही अपनी शक्ति से सबको शक्ति अथवा सद्गति दे देवे तो फिर उनकी शक्ति कायम होनी चाहिए फिर दुर्गति को क्यों प्राप्त करते हो? तो इससे साबित (सिद्ध) है कि परमात्मा युगे युगे नहीं आता है अर्थात् बीच बीच में नहीं आता है । वो आता है कल्प के अन्त समय और एक ही बार अपनी शक्ति से सर्व की सद्गति करता है । जब परमात्मा ने इतनी बड़ी सर्विस की है तब उनका यादगार बड़ा शिवलिंग बनाया है और इतनी पूजा करते हैं, तो अवश्य परमात्मा सत् भी है चैतन्य भी है और आनंद स्वरूप भी है । अच्छा । ओम् शान्ति ।

‘‘मीठे बच्चे – अभी तुम्हें दिव्य दृष्टि मिली है - तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है,  
इसलिए इससे ममत्व मिटा देना है, पूरा-पूरा बलि चढ़ना है’’

**ग्रन्थ:-** जो अविनाशी बाप पर पूरा बलि चढ़े हुए बच्चे हैं उनकी निशानी क्या होगी?

**उत्तर:-** वह अपना पैसा आदि फालतू खर्च नहीं करेंगे। भक्ति मार्ग में दीपावली आदि पर कितना बारूद जलाते हैं। अल्पकाल की खुशी मनाते हैं। तुम जानते हो यह सब वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट आफ मनी, वेस्ट आफ एनर्जी है। यहाँ तुम्हें ऐसी खुशियाँ नहीं मनानी हैं क्योंकि तुम तो वनवास में हो। तुम्हें इन कांटों की दुनिया से फूलों की दुनिया में जाना है।

**गीत:-** तुम्हें पाके हमने.....

**ओम् शान्ति**। मीठे-मीठे बच्चों ने गीत का अर्थ समझा। अब तुम बच्चों ने बाप को पाया है, तुमको बाप मदद देते हैं। 5 विकारों को जीतने की अर्थात् माया पर जीत पहन जगतजीत बनने की। जगत सारी दुनिया को कहा जाता है। बच्चे जानते हैं हम सारे जगत के मालिक बनने वाले हैं। मालिक कब बनेंगे? जब रावणराज्य पूरा हो जायेगा। रावण को वर्ष-वर्ष जलाते हैं क्योंकि संगमयुग पर बाप आकर आत्मा का दीवा जगाए सतयुग का मालिक बनाते हैं। दशहरे के बाद दीपावली के दिन मनुष्य बहुत अच्छे-अच्छे कपड़े पहनते हैं। अक्सर करके लक्ष्मी-नारायण, राधे-कृष्ण और देवियों के मन्दिर में जाते हैं। परन्तु देवियों को और लक्ष्मी-नारायण को जानते नहीं। देवियाँ हैं शिव शक्तियाँ, ब्राह्मणियाँ। देवियों के हाथ में अस्त्र शस्त्र दिखाते हैं। वास्तव में देवियों के हाथ में कोई अस्त्र शस्त्र हैं नहीं। वे तो गुप्त हैं। रावण पर जीत पाते हैं तो तुम्हारी आधाकल्प के लिए खुशियाँ कायम हो जाती हैं। अभी तुम खुशियाँ नहीं मनायेंगे। यह कोई दीपमाला थोड़ेही है क्योंकि यह तो आज दीवे जलाते, कल बुझ जाते हैं। दशहरा भी हर वर्ष मनाते रहते हैं। तुम ब्राह्मण कोई अपने घरों में दीपक नहीं जलाते हो। मन्दिरों आदि में तो दीपक, बिजलियाँ आदि जलाते हैं। मनुष्य नहीं जानते कि दीप माला, दशहरा क्या है। उस समय सारा भारत ही नया होता है। दीपक आदि जगाना, यह सब भक्ति मार्ग है। भक्ति मार्ग में कितने पैसे वेस्ट करते हैं। उस दिन बारूद कितना जलाते हैं। वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट आफ मनी, वेस्ट ऑफ एनर्जी करते रहते हैं। यह है फारेस्ट आफ थार्नस। (कांटों का जंगल) सब जंगली बन गये हैं। तुम भी पहले ऐसे थे, कुछ भी नहीं समझते थे। सतयुग में फ़जूल (व्यर्थ) खर्चा नहीं करेंगे। यहाँ तो फ़जूल खर्चा बहुत है। दान पुण्य करने से भी अल्पकाल का फल मिलता है। तुम जानते हो हम अविनाशी बाप पर बलि चढ़े हैं तो हमारा सब कुछ अविनाशी बन जाता है। पुराना शरीर छोड़ नया ले लेते हैं। तुम बच्चों ने मोह जीत राजा की कथा तो सुनी है ना। यह कहानी सतयुग के लिए नहीं हैं क्योंकि वहाँ अकाले मृत्यु नहीं होता। यह सिर्फ मिसाल देने के लिए कहानी बनाई है कि उस समय सब नष्टोमोहा, मोहजीत रहते हैं। शरीर सहित पुरानी दुनिया से ममत्व मिटाना है क्योंकि तुम नई दुनिया में जा रहे हो। पुरानी दुनिया के साथ किसका ममत्व होता है क्या? इसको बेहद का संन्यास कहा जाता है। सिर्फ बाबा यह नहीं कहते कि देह से ममत्व मिटाओ। परन्तु जो भी इन आँखों से देखते हो सबको भूलो क्योंकि अब दिव्य दृष्टि मिली है कि सब खत्म होना है। पुरानी दुनिया विनाश हुई पड़ी है और नया विश्व बनेगा। शिवबाबा हमको राज्य देते हैं। शिवबाबा का नाम सदैव शिव है क्योंकि उनको अपना शरीर तो है नहीं। ब्रह्म, विष्णु, शंकर को भी अपना शरीर है। वह है ऊपर। अमरनाथ अमर बनाने की कथा सुनाते हैं। अमरलोक में ले जाने लिए। तुम बच्चे अभी फूल बन रहे हो। कांटों को फूल बनाने में मेहनत तो लगती है। यहाँ तो सब कांटे हैं। एक दूसरे को कांटा लगाते रहते हैं, बात मत पूछो। तो बाप कहते हैं तुम्हें अब किसी को कांटा नहीं लगाना है। काम कटारी नहीं चलाना है। यह काम की हिंसा आदि-मध्य-अन्त दुःख देती है। वैसे तो किसको मारो तो जान से खत्म हो जाते हैं। यहाँ तो जन्म-जन्मान्तर दुःखी होते रहते हैं। बाप कहते अभी तुम्हें काम कटारी नहीं चलाना है।

अभी तुम दशहरा मना रहे हो फिर दीपावली हो जाती है। सतयुग में दीपावली नहीं मनायेंगे। वहाँ लक्ष्मी स्वयं राज्य करती है, फिर उसकी बैठ पूजा नहीं करेंगे। मनुष्य जो मन्दिरों में रहते हैं वह देवताओं की बायोग्राफी को नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो। तुम बच्चे हो रूप-बसन्त। बाप कहते हैं मैंने भी शरीर धारण किया है। परन्तु मेरा धारण करने का तरीका अलग है। अभी हमको दीपावली की खुशी नहीं होती क्योंकि हम वनवास में हैं। हम पियरघर से ससुराल घर जाते हैं।

बाबा ने कहला भेजा था, 108 चत्ती वाला कपड़ा पहनो तो देह-अभिमान टूट जाए। इस समय तुम कांटों की दुनिया से फूलों की दुनिया में जा रहे हो। कहते हैं पढ़ेंगे लिखेंगे होंगे नवाब। बाप कहते हैं मैं तुमको नर से नारायण बनाता हूँ। तो पुरुषार्थ ऊंच करना है। जब मैं पढ़ाता हूँ तो क्यों पद खराब करते हो? मात-पिता को क्यों नहीं फालो करते हो? बाबा ने साक्षात्कार कराया है कि जो अच्छी तरह पढ़ेंगे वह डिनायस्टी में आयेंगे। तुम जानते हो हम पढ़ते हैं स्वर्गवासी बनने के लिए। लोग समझते हैं मनुष्य मरते हैं तो स्वर्गवासी होते हैं। तुम जानते हो कि बाबा ही आकर स्वर्ग में ले जाते हैं और रावण फिर नर्कवासी बना देते हैं। मनुष्य कहते हैं हिन्दू चीनी भाई-भाई, फिर एक दो को दुःख देते रहते हैं। तुम जानते हो मात-पिता से सुख घनेरे मिल रहे हैं। फिर धीरे-धीरे कला कमती होती जाती है। कहते हैं चढ़ती कला सर्व का भला... तो अभी सबका भला होता है। कोई नर्क से निकल स्वर्गवासी बनते, कोई शान्तिधाम निवासी बनते हैं तो भला हो गया। सत्युग में कोई दुःख देने वाली चीज़ होती नहीं। बड़े आदमियों का फर्नीचर भी बढ़िया होता है। वहाँ दुःखदाई जानवर आदि होते नहीं क्योंकि फर्नीचर अच्छा चाहिए। उसको हेविन कहा जाता है। अल्लाह अवलदीन का खेल है, ठका करने से राजाई मिलती है। तो अल्लाह बाप अवलदीन अर्थात् आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करते हैं। तो बाप सेकेण्ड में वैकुण्ठ का मालिक बना देते हैं। बाबा अवलदीन का साक्षात्कार कराते हैं। ऐसे नहीं बच्चे कहें साक्षात्कार में जायें। बाबा ने कहा है ध्यानी से ज्ञानी मुझे प्रिय हैं। ध्यान में माया प्रवेश करती है। ज्ञान में माया नहीं आती। जो नौंधा भक्ति करते हैं उनको बाप साक्षात्कार कराते हैं। यहाँ कोई नौंधा भक्ति नहीं की जाती है। छोटी-छोटी बच्चियों को साक्षात्कार हो जाता है। यहाँ तो कहा जाता है अगर ध्यान की आदत पढ़ गई तो पढ़ाई नहीं पढ़ सकते। शुरू में कितना ध्यान के प्रोग्राम ले आते थे। परन्तु आज हैं नहीं। ज्ञानी तू आत्मा को किसी बात में संशय नहीं आता, संशय आया पढ़ाई छोड़ी गोया बाप को छोड़ा। अब सूर्यवंशी देवी-देवताओं की राजधानी स्थापन हो रही है। और धर्म स्थापक कोई राजधानी स्थापन नहीं करते, वह तो जब धर्म की वृद्धि हो जाती है तब राजाई चलती है। तो तुम अब विश्व का मालिक बन रहे हो। कोई नया आये तो पूछो परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? कहेंगे बाबा है। बाबा स्वर्ग स्थापन करते हैं और रावण नर्क बनाते हैं, जिसने स्वर्ग बनाया उसकी पूजा करते हैं, जिसने नर्क बनाया उसको जलाते हैं क्योंकि नर्क में मनुष्य काम चिता पर जलते हैं, तो गुरुसे में आकर रावण को जलाते हैं। परन्तु रावण जलता नहीं। सिर्फ कहते हैं परम्परा से चला आता है। परन्तु परम्परा का अर्थ नहीं जानते। दुश्मन की एफीज़ी जलाते हैं। रावण को भला क्यों जलाते हो? क्योंकि रावण तुमको जलाते हैं। तुम रावण को जलाते हो, परन्तु मनुष्य कुछ भी नहीं जानते। सत्युग में तो सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं तो वहाँ रावण को नहीं जलाते हैं। उसको कहा जाता है वाइसलेस वर्ल्ड, हम पैराडाइज़ वासी बनने के लिए बाप से स्वर्ग का वर्सा ले रहे हैं। श्राप देने वाला है रावण। रावण किसको कहा जाता है? 5 विकार स्त्री के 5 विकार पुरुष के। सत्युग में यह विकार नहीं थे। संन्यासी तो बाद में आते हैं। अभी तो देवता धर्म है नहीं। वह फिर से स्थापन हो रहा है। 108 की माला बन रही है तो प्रजा भी तो चाहिए ना। जयपुर का राजा एक था, प्रजा कितनी थी। अभी माला तो बनती है, प्रजा भी चाहिए। जो यहाँ बच्चे बनकर फिर चले जाते हैं, वह हल्की प्रजा में चले जाते हैं। कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते जीवनमुक्ति चाहिए। जीवनमुक्ति तो एक नहीं होंगे। पूरा धराना चाहिए। अष्टावक्र गीता में लिखा है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति मिली। लेकिन कैसे मिली? वह नहीं जानते। आदि सनातन देवी-देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है। जबकि राजाई मिल रही है तो फिर हम क्यों न श्रीमत पर चलें! क्यों न कमल फूल समान बनें! तुम ब्राह्मण हो ना। तो शंख, चक्र, गदा, पदम तुम्हारे पास हैं।

मनुष्य दीपमाला पर सिर्फ एक दिन नया कपड़ा पहनते हैं, मन्दिरों में जाते हैं। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर नये कपड़े नहीं पहनते, दीपावली के दिन नये कपड़े पहनते हैं, एकरीथिंग न्यु। उस दिन दुकानदार अपना पुराना खाता खत्म कर नया खाता शुरू करते हैं। तुम भी अब पुराना खाता खत्म कर नया शुरू कर रहे हो। बाप फायदा कराते हैं, रावण घाटा कराते हैं। फायदा कैसे होगा? मनमनाभव, मध्याजीभव। विष्णु मध्य में है ना। मध्याजीभव माना बाप ब्रह्मा द्वारा विष्णु पुरी स्थापन करते हैं। तो पुरानी दुनिया विनाश हो जाती है। तो शिवबाबा कलियुग के अन्त में आते हैं फिर सत्युग की आदि होती है। लिखा भी है कि ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्रह्मा तो प्रजापिता है ना। तो तुम किसके बच्चे हो? शिव के हो या ब्रह्मा के बच्चे हो? कहते भी हैं तुम मात-पिता.... बरोबर प्रैक्टिकल में मात-पिता अब हैं। पढ़ाई पढ़कर फिर वर्सा पा रहे हो फिर रावण आकर दुःखी

बनाते हैं। दुःख भी धीरे-धीरे बढ़ता है। विषय सागर यह कलियुग है। सतयुग है क्षीरसागर। विष्णु को क्षीरसागर में दिखाते हैं। तुम जानते हो बरोबर - वह क्या जाने दशहरे, दीपावली को..... हम तो राजा को समझ गये हैं। जानते हो कल हम स्वर्ग में थे, अब नक्क में हैं। फिर कल स्वर्ग में होंगे। कल क्यों कहते हैं? क्योंकि रात के बाद दिन आता है। कोई आये तो पूछो यह आश्रम किसका है? नाम सुना है प्रजापिता ब्रह्मा? इतने ब्रह्माकुमार कुमारियाँ हैं तो ब्रह्मा बाप हुआ। बाप से वर्सा ही मिलेगा। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो मध्याजी भव। बाप धन्धे की मना नहीं करते। बाबा कहते हैं कि धन्धा भल करो। परन्तु बाबा को याद करो क्योंकि उनसे वर्सा मिलता है। यह भीती है ना, और जगह भीती नहीं होती। स्कूल में भी भीती होती है, तभी कहते हैं कि स्टूडेन्ट लाइफ इंज दी बेस्ट। यह बेहद की पढ़ाई है। बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम जानते हो। स्कूलों में जाकर बताओ कि बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी क्या है। उनको कहना है कि आप तो हृद की हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ाते हो। हम आपको लक्ष्मी-नारायण की बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी बतायें कि लक्ष्मी-नारायण ने यह पद कैसे पाया। आगे चल तुमको कॉलेजों में भी निमंत्रण मिलेंगे। यह है ईश्वरीय विश्व विद्यालय। वह है स्मीचुअल फादर। तो रुहों को स्मीचुअल नॉलेज देते हैं। निराकार साकार में आकर सुनाते हैं। श्रीकृष्ण की तो इसमें कोई बात नहीं है। किसी बात को समझते नहीं हैं। सूत मूँझा हुआ है। स्वतंत्र होने चाहते हैं परन्तु झगड़ा बढ़ता ही जाता है। कहते हैं फ्रीडम चाहिए। सच्ची-सच्ची फ्रीडम तुमको मिलती है रावण से। भारतवासी समझते हैं कि हमने क्रिश्चियन से फ्रीडम पाई, परन्तु फ्रीडम है कहाँ? फ्रीडम तुमको मिलती है, इंडिपिडेंट राजाई। गीत सुना ना कि तुम मिले तो धरती, आसमान, सागर सब हमारा हो जाता है। उसमें हृदें हैं नहीं। अच्छा!

मीठे-मीठे पाँच हजार वर्ष बाद फिर से मिले हुए, वर्सा पाने वाले बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) मात-पिता को पूरा फालो कर पढ़ाई में ऊंच पद पाना है। इस दुनिया में कोई भी शौक नहीं रखना है। बनवास में रहना है।
- 2) इन ऑर्खों से जो कुछ दिखाई देता है उसे देखते हुए भी नहीं देखना है। पूरा नष्टोमोहा बनना है। संगम पर कुछ भी बेस्ट नहीं करना है।

**वरदान:-** अपने आक्यूपेशन की स्मृति से सेवा का फल और बल प्राप्त करने वाले विश्व कल्याणकारी भव

कोई भी काम करते अपना आक्यूपेशन कभी नहीं भूलो। जैसे पाण्डवों ने गुप्त वेष में नौकरी की लेकिन नशा विजय का था। ऐसे आप भल गवर्मेन्ट सर्वेन्ट हो, नौकरी करते हो लेकिन नशा रहे मैं विश्व कल्याणकारी हूँ तो इस स्मृति से स्वतः समर्थ रहेंगे और सदा सेवा भाव होने के कारण सेवा का फल और बल मिलता रहेगा। गाया हुआ है भावना का फल मिलता है तो आपकी सेवा-भावना अनेक आत्माओं को शान्ति, शक्ति का फल देगी।

**स्लोगन:-** गॉडली स्टूडेण्ट स्वरूप सदा स्मृति में रहे तो माया आ नहीं सकती।

## नम्बरवन बनना है तो ज्ञान और योग को स्वरूप में लाओ

आज सत्‌शिक्षक अपनी श्रेष्ठ शिक्षा धारण करने वाले गॉडली स्टूडेन्ट को देख रहे हैं कि हर एक ईश्वरीय विद्यार्थी ने इस ईश्वरीय शिक्षा को कहाँ तक धारण किया है? पढ़ाने वाला एक है, पढ़ाई भी एक है लेकिन पढ़ने वाले पढ़ाई में नम्बरवार हैं। हर रोज का पाठ मुरली द्वारा हर स्थान पर एक ही सुनते हैं अर्थात्‌एक ही पाठ पढ़ते हैं। मुरली अर्थात्‌पाठ हर स्थान पर एक ही होता है। डेट का फर्क हो सकता है लेकिन मुरली वही होती है। फिर भी नम्बरवार क्यों? नम्बर किसलिए होते हैं? क्योंकि इस ईश्वरीय पढ़ाई पढ़ने की विधि सिर्फ सुनना नहीं है लेकिन हर महावाक्य स्वरूप में लाना है। तो सुनना सबका एक जैसा है लेकिन स्वरूप बनने में नम्बरवार हो जाते हैं। लक्ष्य सभी का एक ही रहता है कि मैं नम्बरवन बनूँ। ऐसा लक्ष्य है ना! लक्ष्य नम्बरवन का है लेकिन रिजल्ट में नम्बरवार हो जाते हैं क्योंकि लक्ष्य को लक्षण में लाना – इसमें लक्ष्य और लक्षण में फर्क पड़ जाता है।

इस पढ़ाई में सब्जेक्ट भी ज्यादा नहीं हैं। चार सब्जेक्ट को धारण करना – इसमें मुश्किल क्या है! और चारों ही सब्जेक्ट का एक-दो के साथ सम्बन्ध है। अगर एक सब्जेक्ट ‘ज्ञान’ सम्पूर्ण विधिपूर्वक धारण कर लो अर्थात्‌ज्ञान के एक-एक शब्द को स्वरूप में लाओ, तो ज्ञान है ही मुख्य दो शब्दों का जिसको रचयिता और रचना वा अल्फ और बे कहते हो। रचयिता बाप की समझ आ गई अर्थात्‌परमात्म-परिचय, सम्बन्ध स्पष्ट हो गया और रचना अर्थात्‌पहली रचना “मैं श्रेष्ठ आत्मा हूँ” और दूसरा “मुझ आत्मा का इस बेहद की रचना अर्थात्‌बेहद के ड्रामा में सारे कल्प में क्या-क्या पार्ट है” – यह सारा ज्ञान तो सभी को है ना। लेकिन श्रेष्ठ आत्मा स्वरूप बन हर समय श्रेष्ठ पार्ट बजाना – इसमें कभी याद रहता है, कभी भूल जाते हैं। अगर इन दो शब्दों का ज्ञान है, योग भी इन दो शब्दों के आधार पर है ना। ज्ञान से योग का स्वतः ही सम्बन्ध है। जो ‘ज्ञानी तू आत्मा’ है वह ‘योगी तू आत्मा’ अवश्य ही है। तो ज्ञान और योग का सम्बन्ध हुआ ना। और जो ज्ञानी और योगी होगा उसकी धारणा श्रेष्ठ होगी या कमजोर होगी? श्रेष्ठ, स्वतः होगी ना, सहज होगी ना कि धारणा में मुश्किल होगी? जो ‘ज्ञानी तू आत्मा’, ‘योगी तू आत्मा’ है वह धारणा में कमजोर हो सकता है? नहीं। होते तो हैं। तो ज्ञान-योग नहीं है? ज्ञानी है लेकिन ‘ज्ञानी तू आत्मा’ वह स्थिति नहीं है। योग लगाने वाले हैं लेकिन योगी जीवन वाले नहीं हैं। जीवन सदा होती है और जीवन नेचुरल होती है। योगी जीवन अर्थात्‌ओरीजनल नेचर योगी की है।

63 जन्मों के विस्मृति के संस्कार वा कमजोरी के संस्कार ब्राह्मण जीवन में कहाँ-कहाँ मूल नेचर बन पुरुषार्थ में विघ्न डालते हैं। कितना भी स्वयं वा दूसरा अटेन्शन खिचवाता है कि यह परिवर्तन करो वा स्वयं भी समझते हैं कि यह परिवर्तन होना चाहिए लेकिन जानते हुए भी, चाहते हुए भी क्या कहते हो? चाहते तो नहीं हैं लेकिन मेरी नेचर है यह, मेरा स्वभाव है यह। तो नेचर नेचुरल हो गई है ना। किसके बोल में वा व्यवहार में ज्ञान-सम्पन्न व्यवहार वा योगी जीवन प्रमाण व्यवहार वा बोल नहीं होते हैं तो वो क्या कहते हैं? यही बोल बोलेंगे कि मेरा नेचुरल बोल ही ऐसा है, बोलने का टोन ही ऐसा है। वा कहेंगे मेरी चाल-चलन ही आफिशियल वा गम्भीर है। नाम अच्छे बोलते हैं जोश नहीं है लेकिन आफिशियल है। तो चाहते भी, समझते भी नेचर नेचुरल वर्क (कार्य) करती रहती है, उसमें मेहनत नहीं करनी पड़ती है। ऐसे जो ज्ञानी जीवन वा योगी जीवन में रहते हैं, तो ज्ञान और योग सम्पन्न हर कर्म नेचुरल होते हैं अर्थात्‌ज्ञान और योग – यही उनकी नेचर बन जाती है और नेचर बनने के कारण श्रेष्ठ कर्म, युक्तियुक्त कर्म नेचुरल होते रहते हैं। तो समझा, नेचर नेचुरल बना देती है। तो ज्ञान और योग मूल नेचर बन जायें – इसको कहा जाता है ज्ञानी जीवन, योगी जीवन वाला।

ज्ञानी सभी हो, योगी सभी हो लेकिन अन्तर क्या है? एक हैं ज्ञान सुनने-सुनाने वाले, यथा शक्ति जीवन में लाने वाले। दूसरे हैं ज्ञान और योग को हर समय अपने जीवन की नेचर बनाने वाले। विद्यार्थी सभी हो लेकिन यह अन्तर होने के कारण नम्बरवार बन जाते हैं। जिसकी नेचर ही ज्ञानी-योगी की होगी उसकी धारणा भी नेचुरल होगी। नेचुरल स्वभाव-संस्कार ही धारणा स्वरूप होंगे। बार-बार पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा कि इस गुण को धारण करूँ, उस गुण को धारण करूँ। लेकिन पहले फाउण्डेशन के समय ही ज्ञान, योग और धारणा को अपनी जीवन बना दी इसलिए यह तीनों सब्जेक्ट ऐसी आत्मा की स्वतः और स्वाभाविक अनुभूतियां बन जाती हैं इसलिए ऐसी आत्माओं को सहज योगी, सहज ज्ञानी, सहज धारणा-मूर्त कहा जाता है। तीनों सब्जेक्ट का कनेक्शन है। जिसके पास इतनी अनुभूतियों का खजाना सम्पन्न

होगा, ऐसी सम्पन्न मूर्तियां स्वतः ही मास्टर दाता बन जाती हैं। दाता अर्थात् सेवाधारी। दाता देने के बिना रह नहीं सकता। दातापन के संस्कार से स्वतः ही सेवा का सब्जेक्ट प्रैक्टिकल में सहज हो जाता है। तो चारों का ही सम्बन्ध हुआ ना। कोई कहे कि मेरे में ज्ञान तो अच्छा है लेकिन धारणा में कमी है तो उसको ज्ञानी कहा जायेगा? ज्ञान तो दूसरों को भी देते हो ना। है तब तो देते हो! एक है समझना, दूसरा है स्वरूप में लाना। समझने में सभी होशियार हैं, समझाने में भी सभी होशियार हैं लेकिन नम्बरवान बनना है तो ज्ञान और योग को स्वरूप में लाओ। फिर नम्बरवार नहीं होंगे लेकिन नम्बरवान होंगे।

तो सुनाया कि आज सत् शिक्षक अपने चारों ओर के ईश्वरीय विद्यार्थियों को देख रहे थे। तो क्या देखा? सभी नम्बरवान दिखाई दिये वा नम्बरवार दिखाई दिये? क्या रिजल्ट होगी? वा समझते हो कि नम्बरवान तो एक ही होगा, हम तो नम्बरवार में ही आयेंगे? फर्स्ट डिवीज़न में तो आ सकते हो ना। उसमें एक नहीं होता है। तो चेक करो अगर बार-बार किसी भी बात में स्थिति नीचे-ऊपर होती है अर्थात् बार-बार पुरुषार्थ में मेहनत करनी पड़ती है, इससे सिद्ध है कि ज्ञान की मूल सब्जेक्ट के दो शब्द – ‘रचता’ और ‘रचना’ की पढ़ाई को स्वरूप में नहीं लाया है, जीवन में मूल संस्कार के रूप में वा मूल नेचर के रूप में वा सहज स्वभाव के रूप में नहीं लाया है। ब्राह्मण जीवन का नेचुरल स्वभाव-संस्कार ही योगी जीवन, ज्ञानी जीवन है। जीवन अर्थात् निरन्तर, सदा। 8 घण्टा जीवन है, फिर 4 घण्टा नहीं ऐसा नहीं होता। आज 10 घण्टे के योगी बने, आज 12 घण्टे के योगी बने, आज 2 घण्टे के योगी बने – वो योग लगाने वाले योगी हैं, योगी जीवन वाले योगी नहीं। विशेष संगठित रूप में इसीलिए बैठते हो कि सर्व के योग की शक्ति से वायुमण्डल द्वारा कमजोर पुरुषार्थियों को और विश्व की सर्व आत्माओं को योग शक्ति द्वारा परिवर्तन करें इसलिए वह भी आवश्यक है लेकिन इसीलिए योग में नहीं बैठते हो कि अपना ही टूटा हुआ योग लगाते रहो। संगठित शक्ति यह भी सेवा के निमित्त है लेकिन योग-भट्टी इसलिए नहीं रखते हो कि मेरा कनेक्शन फिर से जुट जाये। अगर कमजोर हो तो इसलिए बैठते हो और ‘‘योगी तू आत्मा’’ हो तो मास्टर सर्वशक्तिवान बन, मास्टर विश्व-कल्याणकारी बन सर्व को सहयोग देने की सेवा करते हो। तो पढ़ाई अर्थात् स्वरूप बनना। अच्छा!

आज दीपावली मनाने आए हैं। मनाने का अर्थ क्या है? दीपावली में क्या करते हो? दीप जलाते हो। आजकल तो लाइट जलाते हैं। और लाइट पर कौन आते हैं? परवाने। और परवाने की विशेषता क्या होती है? फिदा होना। तो दीपावली मनाने का अर्थ क्या हुआ? तो फिदा हो गये हो या आज होना है? हो गये हो या होना है? (हो गये है) तो दीपावली तो मना ली, फिर क्यों मनाते हो? जब फिदा हो गये तो दीपावली मना लिया कि बीच-बीच में चक्कर लगाने जाते हो? फिदा हो गये है लेकिन थोड़े पंख अभी हैं, उससे थोड़ा चक्कर लगा लेते हो। तो चक्कर लगाने वाले तो नहीं हो ना। चक्कर लगाना अर्थात् किसी न किसी माया के रूप से टक्कर खाना। माया से टक्कर खाते हो या माया को हार खिलाते हो? वा कभी विजय प्राप्त करते हो, कभी टक्कर खाते हो?

दीपमाला यह अपना ही यादगार मनाते हो। आपका यादगार है ना? कि मुख्य आत्माओं का यादगार है, आप देखने वाले हो? आप सबका यादगार है, इसीलिए आजकल बहुत अन्दाज में दीपक के बजाए छोटे-छोटे बल्ब जगा देते हैं। दीपक जलायेंगे तो संख्या फिर भी उससे कम हो जायेगी। लेकिन आपकी संख्या तो बहुत है ना। तो सभी की याद में अनेक छोटे-छोटे बल्ब जगमगा देते हैं। तो अपना यादगार मना रहे हैं। जब दीपक देखते हो तो समझते हो यह हमारा यादगार है? स्मृति आती है? यही संगमयुग की विशेषता है जो चैतन्य दीपक अपना जड़ यादगार दीपक देखते हो। चैतन्य में स्वयं हो और जड़ यादगार देख रहे हो। ऐसे तो जिस दिन दीपावली मनाओ उस दिन ही वास्तविक तिथि है। यह तो दुनिया वालों ने तिथि फिक्स की है, लेकिन आपकी तिथि अपनी है इसलिए जिस दिन आप ब्राह्मण मनाओ वही सच्ची तिथि है इसलिए कोई भी तिथि फिक्स करते हैं तो किससे पूछते हैं? ब्राह्मणों से ही निकालते हैं। तो आज बापदादा सभी देश-विदेश के सदा जगे हुए दीपकों को दीपमाला की मुबारक दे रहे हैं, बधाई दे रहे हैं। दीपावली मुबारक अर्थात् मालामाल, सम्पन्न बनने की मुबारक!

ऐसे सदा जागती ज्योत, सदा स्वयं प्रकाश स्वरूप बन अनेकों का अन्धकार मिटाने वाले सच्चे दीपक, सदा चारों ही सब्जेक्ट को साथ-साथ जीवन में लाने वाले, सर्व सब्जेक्ट में नम्बरवन के लक्ष्य को लक्षण में लाने वाले, ऐसे ज्ञानी तू आत्माएं, योगी तू आत्माएं, दिव्यगुण स्वरूप आत्माएं, निरन्तर सेवाधारी, श्रेष्ठ विश्व-कल्याणकारी आत्माओं को बापदादा का याद, प्यार और नमस्ते।

### अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात

#### खुशनसीब वह जिसके चेहरे और चलन से सदा खुशी की झलक दिखाई दे

सभी अपने को सदा खुशनसीब आत्माएं समझते हो? खुशनसीब आत्माओं की निशानी क्या होगी? उनके चेहरे और चलन से सदा खुशी की झलक दिखाई देगी। चाहे कोई भी स्थूल कार्य कर रहे हों, साधारण काम कर रहे हों लेकिन हर कर्म करते खुशी की झलक दिखाई पड़े। इसको कहते हैं निरन्तर खुशी में मन नाचता रहे। ऐसे सदा रहते हो? या कभी बहुत खुश रहते हो, कभी कम? खुशी का खजाना अपना खजाना हो गया। तो अपना खजाना सदा साथ रहेगा ना। या कभी-कभी रहेगा? बाप के खजाने को अपना खजाना बनाया है या भूल जाता है अपना खजाना? अपनी स्थूल चीज तो याद रहती है ना। वह खजाना आंखों से दिखाई देता है लेकिन यह खजाना आंखों से नहीं दिखाई देता, दिल से अनुभव करते हो। तो अनुभव वाली बात कभी भूलती है क्या? तो सदा यह स्मृति में रखो कि हम खुशी के खजाने के मालिक हैं। जितना खजाना याद रहेगा उतना नशा रहेगा। तो यह रुहानी नशा औरों को भी अनुभव करायेगा कि इनके पास कुछ है। माताओं को सारा समय क्या याद रहता है? सिर्फ बाप याद रहता है या और भी कुछ याद रहता है? वर्से की तो खुशी दिखाई देगी ना। जब ब्राह्मण जीवन के लिए संसार ही एक बाप है, तो संसार के सिवाए और क्या याद आयेगा। सदा दिल में अपने श्रेष्ठ भाग्य के गीत गाते रहो। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सारे कल्प में प्राप्त होगा? जो सारे कल्प में अभी प्राप्त होता है, तो अभी की खुशी, अभी का नशा सबसे श्रेष्ठ है। तो माताओं को और कोई सम्बन्धी याद आते हैं? कोई सम्बन्ध में नीचे-ऊपर हो तो मोह जाता है? मोह सारा खत्म हो गया? जो कहते हैं कुछ भी हो जाये, मेरे को मोह नहीं आयेगा वो हाथ उठायें। अच्छा, मोह का पेपर भले आवे? पाण्डव तो नष्टोमोहा हैं ना। व्यवहार में कुछ ऊपर-नीचे हो जाए, फिर नष्टोमोहा हैं? अभी भी बीच-बीच में माया पेपर तो लेती है ना। तो उसमें पास होते हो? या जब माया आती है तब थोड़ा ढीले हो जाते हो? तो सदा खुशी के गीत गाते रहो। समझा? कुछ भी चला जाये लेकिन खुशी नहीं जाये। चाहे किसी भी रूप में माया आये लेकिन खुशी न जाये। ऐसे खुश रहने वाले ही सदा खुशनसीब हैं। अच्छा!

अभी आन्धा और कर्नाटिक वालों को कौनसी कमाल करनी है? ऐसी कोई भी आत्मा वंचित नहीं रह जाये। हरेक को सन्देश देना है। जहां भी रहते हो सर्व आत्माओं को सन्देश मिलना चाहिए। जितना सन्देश देंगे उतनी खुशी बढ़ती जायेगी। अच्छा!

**वरदान:-** उमंग-उत्साह के आधार पर सदा उड़ती कला का अनुभव करने वाले हिम्मतवान भव

उड़ती कला का अनुभव करने के लिए हिम्मत और उमंग-उत्साह के पंख चाहिए। किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए उमंग-उत्साह बहुत जरूरी है। अगर उमंग-उत्साह नहीं तो कार्य सफल नहीं हो सकता क्योंकि उमंग-उत्साह नहीं तो थकावट होगी और थका हुआ कभी सफल नहीं होगा। इसलिए हिम्मतवान बन उमंग और उत्साह के आधार पर उड़ते रहो तो मंजिल पर पहुंच जायेंगे।

**स्नोगन:-** दुआयें दो और दुआयें लो यही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है।

‘‘मीठे बच्चे-बाप के मददगार बन सबको नई दुनिया का पुरुषार्थ कराओ - जैसे खुद नॉलेजफुल बने हो, ऐसे औरों को भी बनाते रहो’’

**प्रश्न:-** तुम बच्चों को अभी किस स्मृति में रहना है? स्मृति की कमाल क्या है?

**उत्तर:-** तुम्हें अभी बीज और झाड़ की जो नॉलेज मिली है, उस नॉलेज की स्मृति में रहना है। इस स्मृति से तुम चक्रवर्ती राजा बन जाते हो - यही है स्मृति की कमाल। बाप बच्चों को स्मृति दिलाते हैं - बच्चे स्मृति आई तुमने आधाकल्प बहुत भक्ति की है। अब मैं तुम्हें भक्ति का फल देने आया हूँ। तुम फिर से वैकुण्ठ का मालिक बनते हो। जैसे बाप मीठा है - ऐसे बाप की नॉलेज भी मीठी है, जिसका सिमरण कर सिमर-सिमर सुख पाना है।

**गीत:-** जाग सजनियाँ जाग....

**ओम् शान्ति।** मीठे-मीठे बच्चों ने गीत सुना। आज दीपमाला है। दीपमाला कहा जाता है नये युग को। सतयुग में कोई दीपमाला नहीं मनाई जाती क्योंकि वहाँ सभी की आत्मा रूपी ज्योति जगी हुई होती है। बच्चे जानते हैं कि हम नई दुनिया में राज्य भाग्य लेने का पुरुषार्थ कर रहे हैं - श्रीमत पर। तुम अभी त्रिकालदर्शी बने हो। त्रिकालदर्शी कहा जाता है पास्ट, प्रजेन्ट, फ्यूचर को जानने वाले को। तुमको अब तीनों कालों की नॉलेज है। तो तुमको औरों को भी समझाना है। खुद भी कांटों से फूल बनते हो, औरों को भी बनाना है। पास्ट की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानने से फ्यूचर क्या होने वाला है, वह भी जान जाते हो। फ्यूचर को जानने से पास्ट, प्रेजेन्ट को भी जान जाते हो - इसको कहा जाता है नॉलेजफुल। पास्ट था कलियुग, प्रेजेन्ट है संगमयुग, फिर फ्यूचर सतयुग त्रेता को आना है। तो तुम बच्चों ने इस चक्र को जान लिया है और नई दुनिया में जाने के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो और औरों को भी पुरुषार्थ कराने में लगे हुए हो, बाबा के मददगार बन। बाप है सिकीलधा और तुम भी सिकीलधे हो क्योंकि पाँच हजार वर्ष के बाद मिले हो। तो बाप आया है सजनियों को शृंगार कर नई दुनिया में ले जाने। बच्चों की बुद्धि में ऊपर से लेकर मूलवतन, सूक्ष्मवतन की नॉलेज है। बच्चे जानते हैं कि कौन-कौन धर्म स्थापक कब और कैसे ऊपर से आकर धर्म स्थापन करते हैं। बाप ने तुमको नॉलेजफुल बनाया है। उसको मोस्ट बिलवेड कहा जाता है। मीठे ते मीठा है। तुम जानते हो कितना मीठा है। उसकी महिमा अपरमअपार है तो उनके वर्से की महिमा भी अपरमअपार है। नाम ही है स्वर्ग, हेविन, पैराडाइज, बहिशत। परमात्मा को कहते हैं गॉड फादर, दुःख हर्ता सुख कर्ता। तो उनको कितना याद करना चाहिए। परन्तु इमाम अनुसार याद नहीं आता। यह गीत कितना अच्छा है। घर में 3-4 रिकार्ड जरूर हों। यह रिकार्ड भी बाप की याद दिलाते हैं। ब्रह्मण ही जानते हैं कि नई दैवी दुनिया स्वराज्य अर्थात् आत्मा को अब राज्य मिल रहा है। लौकिक बाप द्वारा जो वर्सा मिलता है वह यह नहीं कहते कि परमात्मा द्वारा मिला है। तुम जानते हो बाप से राज्य लिया फिर गँवाया। अब फिर ले रहे हैं। सतयुग में गोरे थे फिर काले बने। गाते भी हैं श्याम सुन्दर। श्याम था - अब सुन्दर बनने के लिए सतगुरु मिला है। अब सतगुरु और गोविन्द दोनों खड़े हैं। फिर कहते हैं बलिहारी गुरु आपकी... तुम श्रीकृष्ण बन रहे हो। बलिहारी तुम बच्चों की जो तुम ऐसा बन रहे हो। वह तो कह देते श्रीकृष्ण गऊ चराते थे। फिर ब्रह्मा के लिए भी कहते उनकी गऊशाला थी। तो गऊशाला न है श्रीकृष्ण की, न ब्रह्मा की। गऊशाला शिवबाबा की है।

अभी तुम बच्चे त्योहारों का रहस्य भी समझते हो। तुम जानते हो कि दीपमाला होती है सतयुग में। वहाँ ज्योति जगी रहती है। तुम्हारी 21 जन्म दीपमाला है। यहाँ वर्ष-वर्ष मनाते हैं। आज मनाते, कल दीवा बुझ जाता। अगर सतयुग में मनायेंगे तो भी कारोनेशन, उस दिन आतशबाजी जलाते हैं। यहाँ तो पाई पैसे की आतशबाजी खेलते हैं, जिससे कई एक्सीडेन्ट हो जाते हैं। वहाँ तो बड़ी कारोनेशन होती है। यहाँ राजाई मिलती है तो वर्ष-वर्ष मनाते हैं। परन्तु इस राजाई में सुख नहीं। यह है भ्रष्टाचारी दुनिया, वह थी श्रेष्ठाचारी दुनिया। बाप कहते हैं देखो तुमको कितना समझदार बनाते हैं। बाप को कहा जाता है त्रिलोकीनाथ। त्रिलोकी के मालिक नहीं बनते। उनमें नॉलेज है। तुमको वैकुण्ठ का मालिक बनाते हैं। तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। आधाकल्प तुमने भक्ति की, अब बाप मिला है। बाप अब स्मृति दिलाते हैं - कहते हैं, सिमरो,

सिमरो... किसको? बाप को और बाप के रचना की नॉलेज को। बीज और झाड़ को। इस स्मृति से तुम चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। देखा स्मृति की कमाल, क्या से क्या बनाती है। इसको कहा जाता है स्मीचुअल नॉलेज। आत्मा का जो बाप है वह नॉलेज सुनाते हैं। गीता में श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। परन्तु बाप तुमको नॉलेज दे अपने से भी ऊँचा बनाते हैं। तुम वैकुण्ठ के मालिक बनते हो। जैसे वह पढ़ाई पढ़ते हैं तो बुद्धि में रहता है कि हम बैरिस्टर बनेंगे। तुम जानते हो हम बेरर से प्रिन्स बनेंगे। फिर महाराजा बनेंगे। अब बाप टीचर रूप से पढ़ा रहे हैं। लौकिक में बच्चा ५ वर्ष बाप के पास रहता है फिर टीचर के पास जाता है, बुद्धियों में फिर गुरु करते हैं। यहाँ तो बाप के बने और बाप, टीचर रूप में शिक्षा देते हैं और सद्गति के लिए साथ ले जाते हैं। वह गुरु साथ नहीं ले जाते। खुद ही मुक्ति में नहीं जाते। वह यात्रा में ले जाते हैं, तुम भी पण्डे वह भी पण्डे। परन्तु वह ठिक्कर ठोबर की यात्रा है। यह ज्ञान तुमको है। तुमको खुशी रहनी चाहिए। यह स्टूडेन्ट लाइफ है तो भूलना क्यों चाहिए। परन्तु माया वह खुशी रहने नहीं देती है क्योंकि कर्मातीत अवस्था अन्त में आयेगी। कहा है ना स्मृतिलब्धा। सिमर-सिमर सुख पाओ, वहाँ क्लेष होता नहीं। कहा जाता है जीवनमुक्ति। जैसे बाप मीठा है वैसे बाप की नॉलेज मीठी है। बाबा की महिमा अपरमअपार है अर्थात् पार नहीं पाया जाता है। यह भक्ति में कहा जाता है। तुम यह नहीं कह सकते हो क्योंकि तुमको सारी नॉलेज मिली हुई है। तुमको बहुत मीठा बनना है। अपने को देखो कि मेरे में कोई विकार तो नहीं है? किसी का अवगुण तो नहीं देखते? बहुत मीठी दृष्टि रखनी है। बाबा के कितने बच्चे हैं। सब पर मीठी दृष्टि है ना। तुमको भी ऐसी रखनी है। मनुष्य यह नहीं जानते कि राधे-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण का क्या सम्बन्ध है इसलिए चित्र भी बनाया है। छोटेपन में राधे कृष्ण स्वयंवर के बाद लक्ष्मी-नारायण बनते हैं। बाप आकर स्मृति दिला रहे हैं कि बच्चे तुम देवता थे। बच्चे कहते बरोबर थे। कहते हैं ब्राह्मण देवी-देवताए नमः, ब्राह्मण लोग कहते हैं परन्तु जानते नहीं कि ब्राह्मण, देवता, क्षत्रिय तीन धर्म स्थापन करते हैं। तो ब्राह्मणों का बाप है – ब्रह्मा और शिव। बाप साधारण रूप में आते हैं। यह रथ मुकरर है, भाग्यशाली रथ।

मनुष्य दीपावली के दिन लक्ष्मी से पैसे मांगने के लिए आवाहन करते हैं। पहले तुम भी मांगते थे। अभी तुम लक्ष्मी-नारायण बन रहे हो। यहाँ पर तो भीख ही भीख मांगते हैं। चिल्लाते हैं, पुत्र दो, धन दो। सतयुग में ऐसे नहीं मांगते। शिवबाबा बच्चों के सब भण्डारे भरपूर कर देते हैं। बाप तो स्वर्ग रचेंगे - नर्क थोड़ेही रचेंगे। अभी नर्क में बाबा आया है स्वर्गवासी बनाने। सभी पतित हैं, यह नहीं जानते कि हम नर्कवासी हैं। जो स्वर्गवासी थे, अब वह नर्कवासी बने हैं। अब फिर स्वर्गवासी बन रहे हैं। शिवबाबा का अकालतख्त यह ब्रह्मा है, जिसमें अकालमूर्त परमात्मा आकर बैठते हैं। आत्मा भी अकालमूर्त है। आत्मा का तख्त यह भ्रकुटी है। निशानी भी है जो मस्तक में तिलक देते हैं, आजकल बैल को भी तिलक देते हैं। तो यह भ्रकुटी ब्रह्मा और शिवबाबा दोनों का तख्त है। तो मैं आकर नॉलेज देता हूँ, नॉलेजफुल हूँ। मैं कोई सभी के दिलों को नहीं जानता हूँ, थाट रीडर नहीं हूँ। हाँ दिल का मालिक कह सकते हो क्योंकि दिल कहा जाता है आत्मा को। तो मैं आत्मा का मालिक हूँ, शरीर का मालिक नहीं हूँ। ऐसा साधू लोग कहते हैं ना - मैं मालिक। तो मैं आविनाशी आत्मा का मालिक हूँ क्योंकि मैं खुद अविनाशी हूँ। तुम विनाशी चीज़ के मालिक बनते हो क्योंकि तुम एक विनाशी शरीर छोड़ दूसरा लेते हो। तुम अभी वैकुण्ठ में जाते हो, इसलिए पढ़ाई पढ़ रहे हो। कहते हैं ना - जब तक जीना है तब तक पीना है। जब पढ़ाई पूरी होगी तब यह शरीर ही छूट जायेगा। कहते हैं कि परमात्मा को संकल्प उठा सृष्टि रचने जाऊँ। जब समय होगा तब ही एक्ट करने का विचार आयेगा और आकर पार्ट बजायेगा। बाप कहते हैं - जैसे तुम पार्ट बजाते हो, वैसे मैं भी बजाता हूँ। बाकी मैं जन्म-मरण में नहीं आता हूँ इसलिए मेरी कितनी महिमा है। वैकुण्ठ की भी महिमा है। संन्यासियों को सतयुग के सुख का मालूम नहीं है। वहाँ का सुख उन्होंने को मिलना ही नहीं है। सतयुग के लिए भी उन्होंने सुना है ना कि कंस थे। तो समझते हैं वहाँ भी सुख नहीं था। तो औरों को भी ऐसे सुनाते कि काग विष्टा समान सुख है। तो ऐसे सुनाकर औरों को संन्यास करते हैं। तुम बच्चे तो स्वर्ग के सुख पाते हो। यह तो अन्तिम जन्म है। मरेंगे भी सभी। मैं आया ही हूँ लेने लिए तो क्या तुम यहाँ ही बैठे रहेंगे। मच्छरों सदृश्य सबको ले जाऊँगा। तो मम्मा बाबा सदृश्य पुरुषार्थ कर पद ले लेना चाहिए। ब्रह्मा मुख वंशावली हो ना। जितने सतयुग, त्रेतायुग में देवतायें होंगे उतने ही अब ब्रह्मा मुख वंशावली बनने हैं। तो कायदे अनुसार मात-पिता भी है फिर किसको मुकरर किया जाता है सम्भाल के लिए। नये-नये बच्चे तो आते रहेंगे, पढ़ाई चलती

रहेगी। पिछाड़ी तक वृद्धि को पाते रहेंगे। परवरिश बहुत अच्छी करनी चाहिए। वह है बागवान। तुम जो सेन्टर पर रहते हो वह हुए माली। माली को तो पौधों की सम्भाल करनी चाहिए। जो माली ही ठीक नहीं होगा तो वह पौधों की क्या सम्भाल करेगा। जो माली अच्छा-अच्छा बगीचा बनाते हैं, तो बागवान देख बहुत खुश होते हैं। फिर बागवान जाते हैं देखने कि किस-किस ने बड़ा अच्छा बगीचा बनाया है। तुम भी जानते हो कि कौन-कौन अच्छे माली हैं। जो अच्छे-अच्छे माली हैं उनको इनाम भी मिलता है। तुम मालियों की पघार (तनखा) बढ़ती जाती है।

अभी तुम बच्चों को अपनी मंजिल को याद करना है क्योंकि तुम्हें अभी वापिस घर जाना है तो घर को याद करना पड़े। सिवाए याद के शान्तिधाम नहीं जा सकते। नहीं तो मोचरा (सज्जा) बहुत खाना पड़ेगा, पद भी अच्छा पा नहीं सकेंगे। इस समय जो सूक्ष्मवत्तन में जाते हैं, सर्विस अर्थ जाते हैं। पहले नम्बर में बाबा सर्विस करते हैं, सेकेण्ड नम्बर में मम्मा क्योंकि मम्मा को सेकेण्ड नम्बर में आना है। तो तुम बच्चों को भी मम्मा बाबा को फालो करना है। अच्छा!

**मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।**

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) बाप समान बहुत मीठा बनना है। सबको मीठी दृष्टि से देखना है। किसी का भी अवगुण नहीं देखना है।
- 2) गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ की खुशी में रहना है। जब तक जीना है पढ़ाई रोज़ पढ़नी है।

**वरदान:-** लगन की अग्नि द्वारा एक दीप से अनेक दीप जलाकर सच्ची दीपावली मनाने वाले कुल दीपक भव

आप आत्मा रूपी दीपक की लगन एक दीपराज बाप के साथ लगना ही सच्ची दीपावली है। जैसे दीपक में अग्नि होती है ऐसे आप दीपकों में लगन की अग्नि है, जिससे अज्ञानता का अंधकार दूर होता है। लोग तो दीपावली पर मिट्टी का स्थूल दीपक जगाते हैं लेकिन आप चैतन्य दीपक, कुल के दीपक और बापदादा की आशाओं के दीपक हो। आपके एकरस, अटल अडोल जगे हुए दीपक से जब अनेक दीपक जग जायेंगे तब सच्ची दीपावली होगी।

**स्लोगन:-** समय के महत्व को जान लो तो सर्व प्राप्तियों के खजाने से सम्पन्न बन जायेंगे।

“मीठे बच्चे - तुम कर्मयोगी हो, कर्म करते हुए बाप की याद में रहो, याद में रहने से कोई भी विकर्म नहीं होगा”

**प्रश्न:-** बाप से बुद्धियोग न लगने का मुख्य एक कारण है - वह कौन सा?

**उत्तर:-** लोभ। कोई भी विनाशी चीज़ों में लोभ होगा, खाने का वा पहनने का शौक होगा तो उनकी बुद्धि बाप से नहीं लग सकती इसलिए बाबा विधि बताते हैं बच्चे लोभ रखो - बेहद के बाप से वर्सा लेने का। बाकी किसी भी चीज़ में लोभ नहीं रखो। नहीं तो जिस चीज़ से अधिक प्यार होगा वही चीज़ अन्त में भी याद आयेगी और पद भ्रष्ट हो जायेगा।

**गीत:-** जाग सजनियां जाग...

**ओम् शान्ति**। अभी यह तो बच्चे जानते हैं यूँ तो सारी दुनिया में सब कहते हैं कि हम सभी आपस में भाई-भाई हैं। वी आर आल ब्रदर्स। परन्तु क्यों नहीं उन आत्माओं को यह समझ में आता है कि हम बाप के बच्चे हैं। वह रचिता है, हम रचना हैं। जानवर तो नहीं कहेंगे हम ब्रदर्स हैं। मनुष्य ही समझते हैं और कहते भी हैं कि हम सब ब्रदर्स हैं। रचता बाप एक है। उसको कहा जाता है परमपिता परमात्मा। ऐसे हो नहीं सकता कि बहन को भाई कहें। जब सब अपने को आत्मा समझते हैं तब कहते हैं हम आपस में भाई-भाई हैं। सिवाए आत्मा के और कुछ हो नहीं सकता। एक बाप के जिसमानी बच्चे तो इतने नहीं हो सकते। अभी तुमको अच्छी तरह याद है कि हम आपस में भाई-भाई हैं। बाप बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं। भगवानुवाच - हे बच्चों, तो बहुतों को पढ़ाते हैं ना। सिर्फ ऐसे नहीं कहेंगे हे अर्जुन, एक का नाम नहीं लेंगे। सबको पढ़ाते हैं। स्कूल में मास्टर कहेंगे ना - हे बच्चों, अच्छी तरह पढ़ो। हैं तो स्टूडेन्ट। परन्तु टीचर बड़ा, बुजुर्ग है इसलिए स्टूडेन्ट को बच्चे-बच्चे कहते हैं। वहाँ कोई अपने को आत्मा तो समझते नहीं हैं। वहाँ तो जिस्मानी सम्बन्ध ही रहता है। जैसे गांधी को बापू का मर्तबा दे दिया है। मेरयर को भी फादर कहते हैं। ऐसे मर्तबे तो बहुतों को देते हैं। यहाँ तो तुम समझते हो हम आत्मायें भाई-भाई हैं। तो भाईयों का बाप जरूर चाहिए। सब आत्मायें जानती हैं वह हमारा बाप है जिसको गॉड फादर कहते हैं। यह आत्मा ने कहा हमारा गॉड फादर। लौकिक फादर को गॉड नहीं कहेंगे। तुम जानते हो हम आत्मा हैं। बाबा हमको पढ़ाने आये हैं अर्थात् पतितों को पावन बनाने आये हैं। हमको पतित से पावन बनाकर और फिर पावन दुनिया का मालिक बनाते हैं। यह बातें कोई भी जानते नहीं। यहाँ तुम बच्चे जानते हुए भी फिर कर्म करने में भूल जाते हो। याद में रहो तो विकर्म नहीं होगा। कर्मयोगी तो तुम हो ही। संन्यासियों का है कर्म संन्यास। सिर्फ ब्रह्म तत्व से योग लगाते हैं। परन्तु सारा दिन तो योग लगा नहीं सकते। ब्रह्म में जाने के लिए योग रखते हैं। समझते हैं ब्रह्म को याद करने से हम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे। परन्तु सारा दिन तो ब्रह्म को याद कर नहीं सकते और उस याद से विकर्म भी विनाश नहीं होते हैं। गाया हुआ है पतित-पावन। वह तो बाप ही है। ऐसे तो नहीं कहते पतित-पावन ब्रह्म अथवा पतित-पावन तत्व। सब बाप को ही पतित-पावन कहते हैं। ब्रह्म को कोई फादर नहीं कहते। न ब्रह्म की कोई तपस्या करते। शिव की तपस्या करते हैं। शिव का मन्दिर भी है। तत्व का मन्दिर बन सकेगा क्या? ब्रह्म में तो अण्डे सदृश्य आत्मायें रहती हैं इसलिए शास्त्रों में ब्रह्माण्ड कहा है। यह नाम कोई है नहीं। वो घर है, जैसे आकाश तत्व में कितने साकारी मनुष्य रहते हैं वैसे वहाँ फिर आत्मायें रहती हैं। तुम बच्चे जानते हो बाबा से हम द्वामा के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज ले सारे राज़ को जानकर, सारे झाड़ की नॉलेज समझकर मास्टर बीजरूप बन जाते हैं। परमपिता परमात्मा में सारी नॉलेज है, हम उनके बच्चे हैं। वह बैठ समझाते हैं। इस कल्प वृक्ष की उत्पत्ति, पालना और संहार कैसे होता है, उत्पत्ति कहने से जैसे नई दुनिया उत्पन्न करते हैं। स्थापना अक्षर ठीक है। ब्रह्मा द्वारा पतितों को पावन करते हैं। पतित-पावन अक्षर जरूर चाहिए। सतयुग में सब सद्गति में हैं, कलियुग में सब दुर्गति में हैं। क्यों, कैसे दुर्गति हुई? यह कोई को पता नहीं। गाते भी हैं सर्व का सद्गति दाता एक है। आत्मा समझती है - यह एक खेल है। बाप की महिमा गाते हैं “सदा शिव।” सुख देने वाला शिव, गाते भी हैं दुःख हर्ता सुख कर्ता। भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। अब तो नहीं है। लक्ष्मी-नारायण को भगवती भगवान कहते हैं, उन्हों की राजधानी किसने स्थापन की? भगवान निराकार है, उनसे आत्मायें वर्सा पाती हैं। आत्मा ही 84 जन्म लेते-लेते गिरती आती है। गिरते-गिरते दुर्गति को पाती है। यह बात समझानी है, परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। वह बाप सद्गति दाता है, हम सब भाई-

भाई हैं, न कि बाप। ऐसे थोड़ेही कहा जाता है - फादर ने ब्रदर्स का रूप धरा है। नहीं, इसलिए पहले यह बताओ कि परमपिता परमात्मा से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है? लौकिक सम्बन्ध को तो सब जानते हैं। आत्माओं का है निराकार बाप। उनको हेविनली गॉड फादर कहते हैं। फादर ने जरूर नई रचना का मालिक बनाया होगा। अभी हम मालिक नहीं हैं। हम सुखी थे। दुःखी किसने बनाया? यह नहीं जानते। आधाकल्प से रावण का राज्य चला है तो भारत की यह हालत हुई है। भारत परमपिता परमात्मा की बर्थ प्लेस है। भारत में भगवान आया है। जरूर स्वर्ग स्थापन किया होगा। शिव जयन्ती भी मनाई जाती है। तुम लिख भी सकते हो - हम फलाना बर्थ डे मना रहे हैं। तो मनुष्य बन्डर खायेंगे, यह क्या कहते हैं? बधाई भी दो। बताओ हम पतित-पावन, सद्गति दाता परमपिता परमात्मा शिव की जयन्ती मना रहे हैं। उस दिन बहुत शादमाना करना चाहिए। सर्व के सद्गति दाता की जयन्ती कम बात है क्या? ऐरोप्लेन द्वारा पर्चे बड़े-बड़े शहरों में गिराने चाहिए। तो अखबारों में भी पड़ेगा। बहुत सुन्दर-सुन्दर कार्ड बनाने चाहिए। मोस्ट बील्वेड बाप की बहुत महिमा लिखनी चाहिए। भारत को फिर से स्वर्ग बनाने आया है। वही बाप राजयोग सिखला रहे हैं। वर्सा भी वही देते हैं। शिव जयन्ती के कार्ड बहुत अच्छे सुन्दर छपाने चाहिए। प्लास्टिक पर भी छप सकते हैं। परन्तु अजुन छोटी बुद्धि हैं, राजा रानी तो कोटों में कोई बनेगा। बाकी जरूर अलबेले जो होंगे वह प्रजा बनेंगे। माला 108 की है, बाकी प्रजा तो बहुत होगी। ऐसे भी नहीं हम तो अलबेले हैं, खूब पुरुषार्थ करना चाहिए। बाबा समझाते बहुत हैं परन्तु अमल में मुश्किल लाते हैं। यहाँ अपने को अल्लाह के बच्चे समझते हैं, बाहर निकलने से माया उल्लू बना देती है, इतनी कड़ी माया है। राजाई लेने वाले थोड़े निकलते हैं। चन्द्रवंशी को भी हम नापास कहेंगे। तुम सबकी पढ़ाई और पद को जानते हो। दुनिया में रामचन्द्र के पद को कोई जानता होगा? बाबा अच्छी तरह समझाते हैं। कैसे हम शिव जयन्ती के लिए फर्स्टक्लास निमन्त्रण बनावें जो मनुष्य चक्रित हो जाएं। विचार सागर मंथन गाया हुआ है। शिवबाबा को थोड़ेही विचार सागर मंथन करना है। यह बच्चों का काम है। बाबा राय देते हैं - किसकी बुद्धि में आये और काम न करे तो बाबा उनको अनाड़ी कहेंगे। बच्चे जानते हैं परमपिता परमात्मा हमको ब्रह्म द्वारा विष्णुपुरी का मालिक बना रहे हैं। शंकर द्वारा विनाश होना है। त्रिमूर्ति ऊपर खड़ा है।

तुम सब पण्डे हो जो रुहानी यात्रा सिखलाते हो। तुम भी लिख सकते हो - सत्य मेव जयते... बरोबर सत्य बाबा हमको विजय पाना सिखलाते हैं अथवा विजय प्राप्त कराते हैं। कोई एतराज उठावे तो उनको समझाना है। बाबा का ख्याल चला कि शिव जयन्ती कैसे मनानी चाहिए। गीता का भगवान शिव है, न कि श्रीकृष्ण, इसका बहुत प्रचार करना है। वह रचयिता, वह रचना। वर्सा किससे मिलेगा? श्रीकृष्ण है पहली रचना। दिखाया है सागर में पीपल के पत्ते पर श्रीकृष्ण आया। यह है गर्भ महल की बात। स्वर्ग में गर्भ महल में मौज रहती है। यहाँ नर्क में गर्भ जेल में फथकते हैं। सत्युग में गर्भ महल, कलियुग में गर्भ जेल होता है। श्रीकृष्ण का चित्र कितना अच्छा है। नर्क को लात मार रहे हैं। श्रीकृष्ण के 84 जन्म भी लिखे हुए हैं। भगवानुवाच, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं तुमको बतलाता हूँ। तो जिसने पूरे 84 जन्म लिए हैं उनको ही समझाता हूँ। कितना सहज है। साथ में मैनर्स भी चाहिए। लोभ रखना चाहिए - बेहद के बाप से वर्सा लेने का और कोई चीज़ का लोभ नहीं इसलिए ऐसी कोई चीज़ अपने पास नहीं रखनी चाहिए जो बुद्धि जाये। नहीं तो पद भ्रष्ट हो जायेगा। देह सहित जो कुछ है सबसे बुद्धि निकालनी है। एक बाप को याद करना है। कोई मनुष्य बहुत फर्नीचर रखने वाला होगा तो मरने समय वह याद आता रहेगा। जिस वस्तु से जास्ती प्यार होगा वह पिछाड़ी में याद जरूर आयेगी। बाप बच्चों को समझाते हैं कोई भी चीज़ लोभ के वश छिपाकर मत रखो। यज्ञ से हर चीज़ मिल सकती है। छिपाके कुछ रखा तो बुद्धि जरूर लटकेगी। बाबा का फरमान है - शिवबाबा का भण्डारा है - बच्चों को सब कुछ मिलना है। ऐसा भी ख्याल नहीं आना चाहिए कि फलाने को साड़ी अच्छी पड़ी है, हम भी पहनें। अरे तुम बाप से राजाई का वर्सा लेने आई हो कि साड़ी का वर्सा लेने आई हो? जो अच्छी सर्विस करते हैं उन पर सब कुर्बान जाते हैं। बोलो, हम सिवाए शिव के भण्डारे से मिले हुए और कुछ पहन नहीं सकती। हम यज्ञ से ही लेंगी तो बाबा की याद रहेगी। शिवबाबा के भण्डारे से यह मिला। नहीं तो चोरी आदि की आदत पड़ जाती है। अरे यहाँ सैक्रीफाइज़ (त्याग) करेंगे तो वहाँ बहुत फर्स्टक्लास चीज़ें मिलेंगी। शिवबाबा कहाँ-कहाँ बच्चों की परीक्षा भी लेते हैं। देखें कितना देह-अभिमान है। तुम्हारा वायदा है - जो खिलायेंगे, जो पहनायेंगे... आदि। दिल में समझना चाहिए - यह शिवबाबा देते हैं। इतनी फर्स्टक्लास अवस्था होनी

चाहिए। बाबा से पूरा वर्सा लेना है तो श्रीमत पर पूरा-पूरा पुरुषार्थ करो। बाबा की राय पर चलो। बाबा मम्मा कहते हो तो पूरा-पूरा फालो करो। सबको रास्ता बताओ। बाबा से वर्सा मिला था, अब फिर मिल रहा है। याद की यात्रा करते रहो। बाबा समझते हैं – तुम जितना रूसतम बनेंगे उतना माया ज़ोर से आयेगी। तुम मूँझते क्यों हो? कोई-कोई बच्चे को बाबा लिखते हैं तुम तो बहुत अच्छी सर्विस करने वाले हो। माया के तूफान आयेंगे – क्या सारी आयु ब्रह्मचर्य में रहेंगे? बुढ़ापे में भी आकर चकरी लगेगी। शादी करें, यह करें। माया बूढ़े को भी जवान बना देगी। ऐसा फथकायेगी। तुम डरते क्यों हो? भल कितना भी तूफान आये, बाबा को याद करने से बच जायेंगे। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) लोभ के वश कोई भी चीज़ छिपाकर अपने पास नहीं रखनी है। बाप के फरमान पर चलते रहना है।
- 2) बाबा जो खिलाये, जो पहनाये, एक शिवबाबा के भण्डारे से ही लेना है। देह-अभिमान में नहीं आना है। मम्मा बाबा को पूरा फालो करना है।

**वरदान:-** सर्व खजानों को बांटते और बढ़ाते सदा भरपूर रहने वाले बालक सो मालिक भव  
बाप ने सभी बच्चों को एक जैसा खजाना देकर बालक सो मालिक बना दिया है। खजाना सबको एक जैसा मिला है लेकिन यदि कोई भरपूर नहीं है तो उसका कारण है कि खजाने को सम्भालना वा बढ़ाना नहीं आता है। बढ़ाने का तरीका है बांटना और सम्भालने का तरीका है खजाने को बार-बार चेक करना। अटेन्शन और चेकिंग–यह दोनों पहरे वाले ठीक हों तो खजाना सदा सेफ रहता है।

**स्लोगन:-** हर कर्म अधिकारीपन के निश्चय और नशे से करो तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

‘‘मीठे बच्चे - सदा इसी नशे में रहो कि हम शिव वंशी ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण हैं, हमारा ईश्वरीय कुल सबसे ऊंचा है’’

**प्रश्न:-** ऊपर घर में जाने की लिफ्ट कब मिलती है? उस लिफ्ट में कौन बैठ सकते हैं?

**उत्तर:-** अभी संगमयुग पर ही घर जाने की लिफ्ट मिलती है। जब तक कोई बाप का न बने, ब्राह्मण न बने तब तक लिफ्ट में बैठ नहीं सकते। लिफ्ट में बैठने के लिए पवित्र बनो, दूसरा स्वदर्शन चक्र घुमाओ – यहीं जैसे पंख हैं, इन्हीं पंखों के आधार से घर जा सकते हो।

**गीत:-** धीरज धर मनुआ....

**ओम् शान्ति**। मीठे-मीठे संगमयुगी ब्राह्मण जिनको स्वदर्शन चक्रधारी कहा जाता है वह अभी गुप्त वेष में पढ़ रहे हैं। तुमको कोई समझ न सके कि यह संगमयुगी ब्रह्मा मुख वंशावली हैं। तुम बच्चे जानते हो हम शिव वंशी ब्रह्मा मुख वंशावली हैं। तो कुल का भी नशा चढ़ता है क्योंकि तुम ही ईश्वरीय कुल के हो। ईश्वर ने ही बैठ तुमको अपना बनाया है, अपने साथ ले जाने के लिए। बच्चे जानते हैं तो बाप भी जानते हैं कि आत्मा पतित बन गई है, अब पावन बनना है। अब बच्चों को निश्चय हो गया है कि हम शिव वंशी ब्रह्मा मुख वंशावली हैं। तुम्हारा नाम भी है ब्रह्माकुमार कुमारी। सारी दुनिया शिव वंशी है। ब्राह्मण कुल भूषण भी बनें तब जब पहले शिवबाबा को पहचानें। इस समय तुम साकार में बाबा के बने हो। यूं तो जब निराकारी दुनिया में हो तो सर्वोत्तम शिव वंशी हो। परन्तु जब बाबा साकार में आते हैं तो तुम ब्रह्मा मुख वंशावली बनते हो। एक सेकेण्ड में बाबा क्या से क्या बनाते हैं। बाबा कहा और बच्चे बन गये। जैसे आत्मा मुख से बोलती है परन्तु देखने में नहीं आती। वैसे मैं भी इस समय साकार में आया हूँ, बोल रहा हूँ। जैसे तुमको जब तक शरीर न मिले तब तक पार्ट कैसे बजा सको। तुम तो बाल, युवा और वृद्ध अवस्था में आते हो। मैं इन अवस्थाओं में नहीं आता हूँ, तब तो कहा जाता है मेरा जन्म दिव्य और अलौकिक है। तुम तो गर्भ में प्रवेश करते हो। मैं खुद कहता हूँ कि मैं ब्रह्मा तन में, इनके बहुत जन्मों के अन्त के समय वानप्रस्थ अवस्था में प्रवेश करता हूँ और तुमको बैठ पढ़ाता हूँ। तुमको कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते क्योंकि किसी भी मनुष्य में ज्ञान नहीं है। कहते हैं पतित-पावन आओ तो पतित-पावन कौन? श्रीकृष्ण तो सतयुग का पहला प्रिन्स है। वह पतित-पावन हो न सके। जब मनुष्य मरते हैं तो कहते हैं राम-राम कहो, जब किसको फांसी पर चढ़ाते हैं तो भी पादरी लोग कहते हैं गॉड फादर को याद करो क्योंकि गॉड फादर ही सुखदाता है। बाप ही सब राज आकर समझाते हैं कि अब संगमयुग है और हमारे सुख के दिन आ रहे हैं। 84 जन्म पूरे हुए। अभी संगम का सुहावना समय है। यही एक युग है ऊपर चढ़ने का। जैसेकि ऊपर जाने की लिफ्ट मिलती है। परन्तु जब तक पवित्र न बनें, स्वदर्शन चक्रधारी न बनें तब तक लिफ्ट पर बैठ न सकें। इस समय जैसे पंख मिल रहे हैं क्योंकि माया ने पंख काट दिये हैं। जब बाबा के बनते हैं, ब्राह्मण बनते हैं तब ही पंख मिलते हैं। अब संगम पर ब्राह्मण हैं फिर देवता बनते हैं। तो तुम अभी संगमयुगी हो और सतयुगी राजधानी में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। बाकी सुख के दिन सबके लिए आ रहे हैं। तुमको धीरज मिल रहा है। बाकी दुनिया तो घोर अन्धियारे में है।

तुमको बाप कहते हैं स्वदर्शन चक्रधारी ब्राह्मण कुल भूषण। यह कोई नया सुने तो कहे यह कैसे स्वदर्शन चक्रधारी बन सकते हैं? स्वदर्शन चक्रधारी तो विष्णु है तो कितना फ़र्क हो गया। तुम्हारी बुद्धि में तो सारा चक्र है। इस समय तुम हो ईश्वरीय सन्तान फिर बनते हो दैवी सन्तान फिर वैश्य, शूद्र सन्तान बनते हो। इस समय सबसे ऊंचा है ईश्वरीय कुल। वास्तव में महिमा सारी शिव की है। फिर शिव शक्तियों की फिर देवताओं की क्योंकि तुम इस समय सेवा करते हो। जो सेवा करते हैं उनको ही पद मिलता है। तुम हो रूहानी सोशल वर्कर, जिस्मानी सोशल वर्कर बहुत हैं। तुमको अब रूहानी नशा है कि हम अशारीरी आये थे, आकर अपना स्वराज्य लिया था। तुमको अब बाप द्वारा नॉलेज मिली है। स्मृति आई है - इसको कहा जाता है स्मृतिर्लब्धा। अब बाप ही आकर स्मृति दिलाते हैं कि तुम ही देवता, क्षत्रिय बने हो। अब 84 जन्मों के बाद आकर मिले हो। यह है संगमयुगी कुम्भ मेला, आत्मा और परमात्मा का। परमात्मा आकर पढ़ा रहे हैं अर्थात् सर्व शास्त्र मई शिरोमणी गीता ज्ञान दे रहे हैं। उन्होंने गीता में श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। अगर श्रीकृष्ण हो तो सब उनको

चटक जायें क्योंकि उनमें बहुत कशिश है। सतयुग का फस्ट प्रिन्स है। श्रीकृष्ण की आत्मा अब सुन रही है और जो भी कृष्णपुरी की आत्मायें हैं वह भी सुन रही हैं। अब तुमको स्मृति आई है कि हम ही कृष्णपुरी अथवा लक्ष्मी-नारायणपुरी के हैं। बाप नॉलेजफुल है, बाप में जो नॉलेज है वह हमको दे रहे हैं। कौन सी नॉलेज? परमात्मा को बीजरूप कहा जाता है, तो सारे झाड़ की नॉलेज दे देते हैं। ज्ञान सागर है तब ही पतित-पावन है। जब लिखते हो तो समझ से लिखो। पहले पतित-पावन कहें या ज्ञान सागर कहें? जरूर ज्ञान है तब तो पतितों को पावन बनायेंगे। तो पहले ज्ञान सागर फिर पतित-पावन लिखना चाहिए। यह ज्ञान सागर बाप ही सुनाते हैं तो मनुष्य 84 जन्म कैसे लेते हैं। एक का थोड़ेही बतायेंगे। यह राजयोग की पाठशाला है। पाठशाला में तो बहुत होंगे। एक को थोड़ेही पढ़ायेंगे। हम कहते हैं बाप है, टीचर है तो बहुतों को पढ़ाते हैं। देखते हो बेहद के बच्चों को पढ़ाते हैं और वृद्धि होती जाती है। झाड़ धीरे-धीरे बढ़ता है। जब थोड़ा निकलता है तो चिड़ियायें खा जाती हैं। तुम देखते हो इस झाड़ को माया का तूफान ऐसा आता है जो अच्छे-अच्छे बिखर जाते हैं। बाबा शुरू में बच्चों की ऐसी चलन देखते थे तो कहते थे तुम्हारी चलन ऐसी है जो तुम ठहर नहीं सकेंगे, इसलिए श्रीमत पर चलो। वह कहते थे कुछ भी हो जाये हम भाग नहीं सकते। फिर भी वह भाग गये। तब गाया हुआ है आश्वर्यवत् सुनन्ती, कथन्ती, भागन्ती। तो तुम प्रैक्टिकल में देख रहे हो। ऐसे होता जा रहा है क्योंकि माया सामने खड़ी है, मल्लयुद्ध होती है। दोनों तरफ से पहलवान होते हैं। फिर कभी किसी की हार, कभी किसी की जीत। तुम्हारी अब माया से युद्ध है। माया से जीत पहन तुम राजाई स्थापन कर रहे हो।

बाप कहते हैं यह विनाश की निशानी है – बाम्बस। शास्त्रों में लिखा हुआ है कि पेट से मूसल निकाल अपने कुल का विनाश किया। तुम जानते हो कि बाबा आया है पावन दुनिया बनाने। तो पुरानी दुनिया का विनाश जरूर चाहिए। नहीं तो हम राजाई कहाँ करेंगे। इस पढ़ाई की प्रालब्ध है भविष्य नई दुनिया के लिए। और जो भी पुरुषार्थ करते हैं वह इस दुनिया के लिए है। संन्यासी जो पुरुषार्थ करते हैं वह भी इस दुनिया के लिए है। तुम कहते हो हम यहाँ आकर राजाई करेंगे। परन्तु गुप्त रूप होने के कारण घड़ी-घड़ी बच्चे भूल जाते हैं। नहीं तो बड़े आदमी कहाँ जाते हैं तो कितनी स्वागत करते हैं। लण्डन से रानी आई तो कितने धूमधाम से स्वागत की। परन्तु बाप कितनी बड़ी अर्थारिटी है, लेकिन बच्चों बिगर कोई जानते नहीं। हम शो भी नहीं कर सकते क्योंकि नई बात है। मनुष्य मूँझते भी हैं कि यहाँ ब्रह्मा कहाँ से आया? क्योंकि आजकल तो टाइटिल बहुत रख देते हैं। बाबा कहते अन्धेर नगरी है... कुछ भी नहीं जानते हैं। अगर समझो साधू सन्त, गुरुओं को मालूम पड़ जाए कि बाप आया है, जिसको हम सर्वव्यापी कहते थे, वह अब मुक्ति-जीवनमुक्ति आकर दे रहे हैं। अच्छा जान जायें तो आकर लेने लग जायें, ऐसा पांव पकड़ लें, जो मैं छुड़ा भी न सकूँ। ऐसा हो तो सब कहें कि इनके पास जादू है और गुरु का माथा खराब हो गया है। परन्तु अभी ऐसा होना नहीं है, यह पिछाड़ी में होना है। कहते हैं ना कन्याओं ने भीष्मपितामह को बाण मारे। यह भी दिखाते हैं – बाण मारने से गंगा निकल आई। तो सिद्ध है पिछाड़ी में ज्ञान अमृत सबको पिलाया है। मनुष्य तो कुछ भी जानते नहीं। कह देते हैं परमात्मा तो सर्वव्यापी है। बुद्ध को भी सर्वव्यापी कह देते हैं। इसको कहा जाता है पत्थर बुद्धि। हम भी पहले पत्थर बुद्धि थे। तो बाप आकर समझाते हैं कि गॉड फादर को कभी भी साकारी वा आकारी नहीं कहेंगे, वह तो निराकार है। उन्हें सुप्रीम सोल कहा जाता है। आधाकल्प तुमने भक्ति की। कहते हैं ना - भक्ति करते-करते भगवान मिलेगा तो जरूर है कि भक्ति करते-करते दुर्गति को पाया है फिर बाप आता है सद्गति करने। कहते भी हैं ना - सर्व का सद्गति दाता। तो मनुष्य थोड़ेही समझते हैं कि परमात्मा कब और किस रूप में आया, कह देते हैं द्वापर युग में श्रीकृष्ण रूप में आयेगा, इसको कहा जाता है घोर अन्धियारा। कहते हैं ना - कुम्भकरण को नींद से जगाया तो जागे नहीं। तो बाप ने अब डायरेक्शन निकाला है कि पवित्र बनो और भगवान से डायरेक्ट गीता सुनो। 7 रोज़ क्वारनटाइन में बिठाओ। दे दान तो छूटे ग्रहण। अभी सबको 5 विकारों का ग्रहण लगा हुआ है इसलिए पतित बन गये हैं। रावणराज्य है ना। अब बाप कहते हैं बच्चे तुम मेरा बनो, दूसरा न कोई। श्री-श्री 108 की श्रीमत पर चलने से तुम 108 विजयी माला का दाना बन जायेंगे। मैं माला का दाना नहीं बनता हूँ। मैं तो न्यारा हूँ जिसकी निशानी फूल है। युगल दाना ब्रह्मा-सरस्वती बनते हैं। प्रवृत्ति मार्ग है ना। निवृत्ति मार्ग वाले माला के दाने में आ नहीं सकते। हाँ, पवित्रता को धारण करते हैं तो फिर भी अच्छे हैं। परन्तु यह गुरु सद्गति देन सकें। सद्गति दाता एक ही सतगुरु है।

सतगुरु अकाल कहते हैं, सदगुरु तो एक परमात्मा को कहा जाता है। साकार गुरु लोग अकालमूर्त थोड़ेही बन सकते हैं। लौकिक बाप, टीचर, गुरु को तो काल खा जाता है। मुझको तो काल खा न सके। बाप कितनी अच्छी-अच्छी बातें समझाते हैं, जो इतनी सहज बातें नहीं समझ सकते तो बाबा उनको कहते अच्छा बाप को याद करो। चक्र को भी याद करना पड़े। बाप के साथ वर्से को भी याद करना पड़े। बाप को याद करो तो विकर्म भस्म हो। बाप तो सम्मुख आया हुआ है। बाप को अशरीरी कहा जाता है। ब्रह्मा विष्णु शंकर सबको अपना-अपना शरीर है। मुझे तो अपना शरीर है नहीं। तुम्हारे तो मामे, काके सब हैं। मेरा मामा, चाचा तो कोई है नहीं। आता भी हूँ। परन्तु तुम कैसे आते हो, मैं कैसे आता हूँ। बुलाते हैं गाँड़ फादर। परन्तु कहाँ से आता हूँ? परमधाम से। जहाँ से तुम आते हो, जिसको ब्रह्माण्ड कहा जाता है। इस समय तुम ब्रह्मा मुख वंशावली रूद्र यज्ञ के रक्षक हो। राजयोग की शिक्षा देने वाले, राजयोग सिखलाने वाले तुम टीचर हो गये ना। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) माला का दाना बनने के लिए यह धारणा पक्की करनी है कि मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। स्मृतिर्लब्धा बनना है।
- 2) श्री श्री 108 शिवबाबा की श्रीमत पर पूरा-पूरा चलना है। मेरा-मेरा छोड़ ग्रहण से मुक्त होना है।

**वरदान:-** ब्राह्मण जीवन में सदा सुख का अनुभव करने वाले मायाजीत, क्रोधमुक्त भव

ब्राह्मण जीवन में यदि सुख का अनुभव करना है तो क्रोधजीत बनना अति आवश्यक है। भल कोई गाली भी दे, इनसल्ट करे लेकिन आपको क्रोध न आये। रोब दिखाना भी क्रोध का ही अंश है। ऐसे नहीं क्रोध तो करना ही पड़ता है, नहीं तो काम ही नहीं चलेगा। आजकल के समय प्रमाण क्रोध से काम बिगड़ता है और आत्मिक प्यार से, शान्ति से बिगड़ा हुआ कार्य भी ठीक हो जाता है इसलिए इस क्रोध को बहुत बड़ा विकार समझकर मायाजीत, क्रोध मुक्त बनो।

**स्लोगन:-** अपनी वृत्ति को ऐसा पावरफुल बनाओ जो अनेक आत्मायें आपकी वृत्ति से योग्य और योगी बन जायें।

“मीठे बच्चे - तुम्हें इस पतित दुनिया से अपना बुद्धियोग निकाल बेहद का संन्यासी बनना है, संन्यासी माना पूरे पवित्र और पक्के योगी”

**प्रश्न:-** कौन सी अवस्था आते ही माया के तूफान समाप्त हो जाते हैं?

**उत्तर:-** जब मेरा पति, मेरा बच्चा.... इस मेरे-मेरे से बुद्धियोग टूट जायेगा। मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई - यह बुद्धि में पक्का होगा। एक बाप से ही पूरा बुद्धियोग लगा होगा तब माया के तूफान समाप्त हो जायेंगे।

**गीत:-** कौन आया मेरे मन के द्वारे....

**ओम् शान्ति**। भगवानुवाच - यह तो बच्चे समझ गये हैं कि आत्माओं का बाप, उसे कहा जाता है परमपिता परम आत्मा। बाप खुद समझाते हैं - मेरा कोई आकार में बड़ा रूप नहीं है। जैसे आत्मा के लिए कहते हैं स्टार है, भ्रकुटी के बीच में रहती है। वैसे मैं भी परम आत्मा हूँ, उसकी महिमा बड़ी है। ज्ञान सागर है। बाकी इतना बड़ा चित्र जैसे नहीं है। इतना बड़ा होता तो इस शरीर में घुस नहीं सकता। यह तो शिवलिंग की पूजा करते हैं तो बड़ा बनाते हैं। अंगूठे सदृश्य कहते हैं। आत्मा माना आत्मा सिर्फ उनको परम कहते हैं, जो परमधाम में रहते हैं। तुम जानते हो इस समय है डेविल वर्ल्ड, आसुरी सम्प्रदाय। सत्युग में इस भारत पर देवताओं का राज्य था, अब तो आसुरी राज्य है। देखो, क्या-क्या खा जाते हैं! मास मदिरा यह राक्षसी आहार है, इस बात को भी नहीं समझते हैं। स्कूल में भी कोई के अच्छे ख्यालात, कोई के रजोगुणी, कोई के तमोगुणी होते हैं। जो दूसरों को समझा नहीं सकते उनको बुद्धू कहेंगे। ब्रह्माकुमार कुमारियों में भी नम्बरवार महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे बहुत हैं जो अच्छी रीति समझा नहीं सकते हैं। ज्ञान पूरा न होने कारण डिसर्विस करते हैं। जितना जिसमें ज्ञान है, उतना समझायेंगे। नम्बरवार तो हैं। कहाँ भूलें भी करते हैं। बच्चों को नशा होना चाहिए कि हम तो देवता बन रहे हैं। बाप खुद कहते हैं मैं पतितों की दुनिया में आता हूँ। सत्युग में यही नारायण था - अब फिर इनके तन में आया हूँ, इनको ही नर से नारायण बनाता हूँ। नम्बरवन पूज्य भी यह था, अब नम्बरवन पुजारी भी यह बना है। फिर इनका ही आलराउन्ड पार्ट है। यह मेरा मुकरर तन है। यह चेन्ज नहीं हो सकता। ऐसे नहीं कब दूसरे को चांस दूँ। यह ड्रामा बना बनाया है। इसमें चेन्ज नहीं हो सकती। बाबा कहते हैं मैं आता हूँ पतितों की दुनिया में, परन्तु कोई को पतित कहो तो बिगड़ पड़ेंगे। परन्तु जब भगवानुवाच है कि सब आसुरी सम्प्रदाय हैं तो मानना पढ़ेगा। भगवान माना भगवान निराकार, न ब्रह्मा, न विष्णु, न शंकर, न कृष्ण... कहते हैं मैं परमात्मा भी तुम्हारे जैसा हूँ। भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाने आया हूँ। योग की कितनी महिमा है। बहुत योग आश्रम खुले हैं। उसमें हठयोग आदि सिखलाते हैं। परन्तु तुम योगबल से सारे विश्व को स्वर्ग बनाते हो। विश्व को परिवर्तन करते हो। सारी दुनिया तो योग में नहीं रहती, योग की कितनी महिमा है, जिससे खास भारत स्वर्ग बनता है। परन्तु कोई को पता नहीं तो इसको स्वर्ग किसने बनाया है? जरूर ऐसा कोई स्वर्ग बनाने वाला होगा। बाप कहते हैं मैं ही आकर देवता बनने का कर्म सिखलाता हूँ। यह तो बड़ा सहज है। वह बहुत यज्ञ करते हैं। यहाँ तुम कोई यज्ञ हवन करते हो क्या? धूप भी खुशबू के लिए जलाते। बाकी यहाँ कर्मकाण्ड की कोई बात नहीं। तो बाप अपना परिचय देते हैं कि मैं आत्मा हूँ जैसे तुम हो। परन्तु मैं पुनर्जन्म नहीं लेता हूँ, जन्म लेता हूँ परन्तु मरण में नहीं आता, मेरी जयन्ती मनाते हैं। मैं इस तन में पढ़ाने के लिए आता जाता रहता हूँ तो इसको मृत्यु नहीं कहेंगे। मैं आता हूँ देवता बनाने। अब जो आकर पढ़ेंगे..., पढ़ेंगे भी वही जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा होगा। बहुतकाल से बिछुड़े हुए वही सिकीलधे बच्चे हैं, दूसरे थोड़ेही 84 जन्मों में आते हैं, हम ही सारा 84 का चक्र लगाते हैं। मनुष्य तो बहुत जन्म लेने से तंग होते हैं, तुमको कहेंगे हम 84 के चक्र में नहीं आने चाहते हैं। परन्तु हम कितने पहलवान हैं जो और ही खुश होते हैं। हम इस 84 के चक्र को याद करते-करते चक्रवर्ती राजा बन जाते हैं। उन्होंने के झण्डे में भी चक्र है, फिर उन्होंने चर्खा बना दिया है। उनके सामने तुम्हारा कोट आफ आर्मस ठीक है। ऊपर में शिवबाबा, नीचे त्रिमूर्ति और चक्र बिल्कुल ठीक लगा है। यह तुम्हारा शिव का झण्डा बिल्कुल ठीक है।

तुमको समझाया है संन्यास दो प्रकार का है। एक है निवृत्ति मार्ग का संन्यास जो जंगल में जाते हैं, वह है हाफ संन्यास।

तुम्हारा है फुल संन्यास। किसका? सारी आसुरी दुनिया का संन्यास करते हो मेरा पति, मेरा बच्चा, मेरा गुरु... उन सब मेरे-मेरे से बुद्धियोग तोड़ते हो। मेरा तो एक शिवबाबा दूसरा न कोई। जब तक यह अवस्था नहीं आयेगी तब तक तूफान आते रहेंगे। ज्ञाने के खाते रहेंगे। बाप सारी आसुरी दुनिया का संन्यास कराते हैं क्योंकि यह सब भस्म होना है। वह ऐसे नहीं कहते सब भस्म होना है। तुम रहते सम्बन्धियों के बीच में हो परन्तु उनको देखते बुद्धि वहाँ लगी हुई है। मेरा कुछ है नहीं। तो काम क्रोध किससे होगा! यह युक्ति बहुत अच्छी है, परन्तु जब बुद्धि में बैठे। इसको राजयोग कहा जाता है। तुम योग लगाते हो, राजाई लेते हो। वह है हठयोग। यह गुह्य प्वाइंट्स हैं। योगी तो दुनिया में बहुत हैं। परन्तु बाबा कहते हैं एक का भी मेरे से योग नहीं है। मेरे बदले मेरे निवास स्थान ब्रह्म तत्त्व से योग है। जैसे भारतवासी अपने निवास स्थान, हिन्दुस्तान को अपना धर्म समझ बैठे हैं। वैसे वह भी अपने को ब्रह्म का बच्चा समझते हैं। बच्चे भी नहीं कहते। बच्चा कहें तो फिर वर्सा चाहिए। वह तो कहते कि तत्त्व में लीन होंगे। बाबा को तो अनुभव है। बहुत संन्यासियों, गुरुओं से अनुभव किया। अर्जुन को भी दिखाते हैं बहुत गुरु थे। तुम सब अर्जुन हो। इस समय सारी दुनिया पर रावण का राज्य है, सारी दुनिया लंका है। एक सीलान का बेटा (द्विष्ठ) लंका नहीं। वह हृषि की लंका है। परन्तु बैहेद की लंका तो सारी दुनिया है। अब सारी दुनिया पर रावण का राज्य है। राम के राज्य में इतने मनुष्य नहीं थे। जब रामराज्य है तो रावणराज्य नहीं। कहाँ चला जाता है? नीचे पाताल में चला जाता है। फिर रावण राज्य आता है तो रामराज्य नीचे चला जाता है। यह ड्रामा है ना। जब चक्र फिरता है तब सत्युग ऊपर आ जाता है। द्वापर, कलियुग नीचे चला जायेगा तो सत्युग त्रेता नीचे से ऊपर आ जायेगा। है चक्र की बात, उन्होंने ऐसे लिख दिया है। बाकी कोई सागर में नहीं चला जाता है वा सागर से निकल नहीं आता है।

बाप समझाते हैं यह बड़ी गुह्य समझने की बातें हैं। इसमें पवित्रता है फर्स्ट और योग पक्का चाहिए। इसको कहा जाता है कम्पलीट संन्यास। इस दुनिया से बुद्धियोग खलास। यह बातें तुम्हारे में भी कोई समझते होंगे। सब समझें तो ज्ञान गंगा बन जायें। छोटी नदी बनें, कैनाल्स बनें। अच्छा दुबका बन घर में सुनायें तो भी समझें कि कुछ समझा है। परन्तु घर में भी नहीं बता सकते। बाप कहते हैं कि कैसा भी गरीब हो परन्तु घर में गीता पाठशाला खोल सकते हैं। भल एक ही कमरा हो उसमें खाते पीते सोते हो। अच्छा काम उतार सफाई कर फिर यह क्लास लगाओ। तीन पैर पृथकी में इतनी बड़ी हॉस्पिटल खोल सकते हो। साहूकार की बातें छोड़ो। बाप तो गरीब निवाज़ है ना। साहूकार तो बोलते कि हमें तो यहाँ ही स्वर्ग है। तो बाबा कहते हैं अच्छा तुम अपने स्वर्ग में ही खुश रहो। मैं तुमको क्यों दूँ। दान भी गरीब को दिया जाता है। बड़ा आदमी तो यहाँ जमीन में बैठने से चमकेंगे। तो बाबा कहते हैं कि भल अपने महलों में रहो। मेरे पास तो गरीब आयें जो अच्छी तरह पढ़ें। अगर दूसरे को नहीं सुना सकते तो छोटा तालाब भी नहीं ठहरे। तुमको तो बड़ी नदी बनना है। मम्मा बाबा को फालो करना है। परन्तु घर में भी नहीं सुना सकते तो चुल्लू पानी (हथेली में पानी) की तरह भी नहीं ठहरे। बाबा को तो मजा आयेगा ज्ञान गंगाओं के सामने। कई बाबा के समुख सुनते हैं तो खुश होते हैं। परन्तु यहाँ से उठे सीढ़ी नीचे उतरे तो नशा भी उतरता जाता है। फिर घर पहुँचे तो फिर वही झारमुई झागमुई (परचितन) चालू। बाबा तो चलन से समझ जाते हैं। आते हैं मिलने। कहते हैं मेरा पति, मेरा बच्चा है। अरे तुमको पति कहाँ से आया? आती हो स्वर्ग में चलने फिर भी मेरे-मेरे में फंसी हो। अच्छा इतना डो़ज़ काफी है। देना इतना चाहिए जितना हज़म कर सकें। बाबा ने नटशेल में बताया है। योग से तुम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हो। बाकी बादशाही के लिए नॉलेज चाहिए। दो सब्जेक्ट हैं। बाबा भी योग में रहने का पुरुषार्थ करते हैं तब कहते हैं – न बिसरो न याद रहो। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) इस पुरानी दुनिया का कम्पलीट संन्यास करना है। पवित्रता और योग की सब्जेक्ट में फर्स्ट नम्बर लेना है।
- 2) ज्ञान गंगा बन पतियों को पावन बनाने की सेवा करनी है। मम्मा बाबा को फालो कर बड़ी नदी बनो।

**वरदान:- ब्राह्मण जीवन में कम खर्च बालानशीन करने वाले अलौकिकता सम्पन्न भव**

इस अलौकिक ब्राह्मण जीवन का विशेष स्लोगन है “कम खर्च बालानशीन”। खर्च कम हो लेकिन प्राप्ति शानदार हो अर्थात् रिजल्ट अच्छे से अच्छी हो। अलौकिकता सम्पन्न जीवन तब कहेगे जब बोल में, कर्म में खर्च कम हो। कम समय में काम ज्यादा हो, कम बोल में स्पष्टीकरण ज्यादा हो, संकल्प कम हो लेकिन शक्तिशाली हों—इसको कहा जाता है कम खर्च बालानशीन। जो सर्व खजाने कम खर्च करते हैं उनके भण्डारे भरपूर हो जाते हैं।

**स्लोगन:- बाप और सेवा से सच्चा प्यार है तो परिवार का प्यार स्वतः मिलता है।**

### मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य

अब यह जो शिरोमणी गीता में भगवानुवाच है बच्चे, जहाँ जीत है वहाँ मैं हूँ, यह भी परमात्मा के महावाक्य हैं। पहाड़ों में जो हिमालय पहाड़ है उसमें मैं हूँ और सांपों में काली नाग मैं हूँ इसलिए पर्वत में ऊँचा पर्वत कैलाश पर्वत दिखाते हैं और सांपों में काली नाग, तो इससे सिद्ध है कि परमात्मा अगर सर्व सांपों में केवल काले नाग में है, तो सर्व सांपों में उसका वास नहीं हुआ ना। अगर परमात्मा ऊँचे ते ऊँचे पहाड़ में है गोया नीचे पहाड़ों में नहीं है और फिर कहते हैं जहाँ जीत वहाँ मेरा जन्म, गोया हार में नहीं हूँ। अब यह बातें सिद्ध करती हैं कि परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। एक तरफ ऐसे भी कहते हैं और दूसरे तरफ ऐसे भी कहते हैं कि परमात्मा अनेक रूप में आते हैं, जैसे परमात्मा को 24 अवतारों में दिखाया है, कहते हैं कच्छ मच्छ आदि सब रूप परमात्मा के हैं। अब यह है उन्हों का मिथ्या ज्ञान, ऐसे ही परमात्मा को सर्वत्र समझ बैठे हैं जबकि इस समय कलियुग में सर्वत्र माया ही व्यापक है तो फिर परमात्मा व्यापक कैसे ठहरा? गीता में भी कहते हैं कि मैं फिर माया में व्यापक नहीं हूँ, इससे सिद्ध है कि परमात्मा सर्वत्र नहीं है।

2) अब यह तो हम जानते हैं कि जब हम निराकारी दुनिया कहते हैं तो निराकार का अर्थ यह नहीं कि उनका कोई आकार नहीं है, जैसे हम निराकारी दुनिया कहते हैं तो इसका मतलब है जरूर कोई दुनिया है, परन्तु उसका स्थूल सृष्टि मुआफिक आकार नहीं है, ऐसे परमात्मा निराकार है लेकिन उनका अपना सूक्ष्म रूप अवश्य है। तो हम आत्मा और परमात्मा का धाम निराकारी दुनिया है। जब हम दुनिया अक्षर कहते हैं, तो इससे सिद्ध है वो दुनिया है और वहाँ रहते हैं तभी तो दुनिया नाम पड़ा, अब दुनियावी लोग तो समझते हैं परमात्मा का रूप भी अखण्ड ज्योति तत्व है, वो हुआ परमात्मा के रहने का ठिकाना, जिसको रिटायर्ड होम कहते हैं। तो हम परमात्मा के घर को परमात्मा नहीं कह सकते हैं। अब दूसरी है आकारी दुनिया, जहाँ ब्रह्मा विष्णु शंकर देवतायें आकारी रूप में रहते हैं और यह है साकारी दुनिया, जिनके दो भाग हैं—एक है निर्विकारी स्वर्ग की दुनिया जहाँ आधाकल्प सर्वदा सुख है, पवित्रता और शान्ति है। दूसरी है विकारी कलियुगी दुःख और अशान्ति की दुनिया। अब वो दो दुनियायें क्यों कहते हैं? क्योंकि यह जो मनुष्य कहते हैं स्वर्ग और नक्क दोनों परमात्मा की रची हुई दुनिया है, इस पर परमात्मा के महावाक्य है बच्चे, मैंने कोई दुःख की दुनिया नहीं रची जो मैंने दुनिया रची है वो सुख की रची है। अब यह जो दुःख और अशान्ति की दुनिया है वो मनुष्य आत्मायें अपने आपको और मुझ परमात्मा को भूलने के कारण यह हिसाब किताब भोग रहे हैं। बाकी ऐसे नहीं जिस समय सुख और पुण्य की दुनिया है वहाँ कोई सृष्टि नहीं चलती। हाँ, अवश्य जब हम कहते हैं कि वहाँ देवताओं का निवास स्थान था, तो वहाँ सब प्रवृत्ति चलती थी परन्तु इतना जरूर था वहाँ विकारी पैदाइस नहीं थी, जिस कारण इतना कर्मबन्धन नहीं था। उस दुनिया को कर्मबन्धन रहित स्वर्ग की दुनिया कहते हैं। तो एक है निराकारी दुनिया, दूसरी है आकारी दुनिया, तीसरी है साकारी दुनिया। अच्छा - ओम् शान्ति।

‘मीठे बच्चे - भोलानाथ बाप एक है जो तुम्हारी झोली ज्ञान रत्नों से भरते हैं, वही कल्प वृक्ष का बीजरूप है, उनकी भेंट और किससे कर नहीं सकते’

**प्रश्न:-** बहुत बच्चे बाप को भी ठगने की कोशिश करते हैं, कैसे और क्यों?

**उत्तर:-** बाप को यथार्थ न पहचानने के कारण भूल करके भी छिपाते हैं, सच नहीं बताते हैं, सभा में छिपकर बैठ जाते हैं। उन्हें पता ही नहीं कि धर्मराज बाबा सब कुछ जानता है। यह भी सजाओं को कम करने की युक्ति है कि सच्चे बाबा को सच सुनाओ।

**गीत:-** भोलेनाथ से निराला....

**ओम् शान्ति**। बच्चे समझ गये हैं कि भोलानाथ सदा शिव को कहा जाता है। शिव भोला भण्डारी। शंकर को भोलानाथ नहीं कहेंगे। न और कोई को ज्ञान सागर कह सकते हैं। बाप कहते हैं मैं ही आकर बच्चों को आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज अथवा ज्ञान सुनाता हूँ। तो एक ही ज्ञान का सागर ठहरा, न शंकर, न अव्यक्त ब्रह्म। अव्यक्त ब्रह्म तो सूक्ष्मवत्तन में रहता है। बहुत इस बात में मूँझते हैं कि दादा को भगवान ब्रह्म क्यों कहते हैं? लेकिन अव्यक्त ब्रह्म को भी भगवान नहीं कह सकते। अब बाप समझते हैं कि मैं ही तुम्हारा पारलौकिक पिता हूँ। परलोक न स्वर्ग को, न नर्क को कहेंगे। परलोक है परे ते परे लोक, जहाँ आत्मायें निवास करती हैं इसलिए उनको कहते हैं परमप्रिय पारलौकिक परमपिता क्योंकि वह परलोक में रहने वाले हैं। भक्तिमार्ग वाले भी प्रार्थना करेंगे तो आंखे ऊपर जरूर जायेंगी। तो बाप समझते हैं कि मैं सारे कल्प वृक्ष का बीजरूप हूँ। एक शिव के सिवाय किसको भी क्रियेटर नहीं कह सकते। वही एक क्रियेटर है बाकी सब उनकी क्रियेशन हैं। अब क्रियेटर ही क्रियेशन को वर्सा देते हैं। सब कहते हैं हमको ईश्वर ने अथवा खुदा ने पैदा किया है। तो उस एक ईश्वर को सब फादर कहेंगे। गाँधी को तो फादर नहीं कहेंगे। बेहद का रचता बाप एक ही है। वही समझते हैं कि मैं तुम्हारा पारलौकिक परमपिता हूँ। बाकी आत्मायें तो सब एक जैसी हैं, कोई बड़ी छोटी नहीं होती। जैसे ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा, ज्ञान सितारे.. तो उस सूर्य चांद की साइज़ में तो फर्क है लेकिन आत्माओं का साइज़ एक जैसे है। बाबा कहते हैं मैं कोई साइज़ में बड़ा नहीं हूँ लेकिन परमधाम का रहने वाला हूँ इसलिए मुझे परम आत्मा कहते हैं। परमात्मा में ही सारा ज्ञान है। वह कहते हैं जैसे मैं अशरीरी हूँ वैसे आत्मा भी कुछ समय परमधाम में अशरीरी रहती है। बाकी स्टेज पर जास्ती समय रहती है। तो जैसे तुम आत्मा सितारे सदृश्य हो वैसे मैं भी हूँ। अगर मैं बड़ा होता तो इस शरीर में फिट नहीं होता। जैसे और सभी आत्मायें पार्ट बजाने आती हैं, वैसे मैं भी आता हूँ। बाबा का भक्तिमार्ग से पार्ट शुरू होता है। सत्युग त्रेता में तो पार्ट ही नहीं। अब खुद आकर हमको पूरा वर्सा देते हैं। अपने से भी दो रक्ती ऊपर ले जाते हैं। हमको ब्रह्माण्ड और सृष्टि दोनों का मालिक बनाते हैं। यह तो हर एक बाप का फर्ज होता है बच्चों को लायक बनाना, कितनी सेवा करते हैं। कोई के 7 बच्चे होते हैं, कोई डाक्टर, इन्जीनियर, वकील बनता है तो बाप फूला नहीं समाता। लोग भी उनकी सराहना करते हैं कि बाप ने सब बच्चों को पढ़ाकर लायक बनाया है। परन्तु सब एक जैसे तो नहीं बनते। कोई क्या बनता, कोई क्या। वैसे बाबा कहते हैं मैं तुमको कितना लायक बनाता हूँ। यह बाबा देखो कैसा है! इसका स्थूल नाम रूप कोई है नहीं। दूसरे के तन में प्रवेश कर पढ़ाते हैं। यह हूबहू कल्प पहले वाली पाठशाला है, तो जरूर गीता के भगवान ने गीता पाठशाला बनाई है। जहाँ सबको ज्ञान धास, ज्ञान अमृत खिलाया है। कोई कहते श्रीकृष्ण की गऊशाला, कोई कहते ब्रह्मा की। लेकिन है क्या, जो शिवबाबा को शरीर न होने कारण ब्रह्म से मिला दिया है। बाकी श्रीकृष्ण को तो गऊ पालने की दरकार नहीं। श्रीकृष्ण को पतित-पावन नहीं कहते। गाँधी भी गीता को उठाए मुख से सीताराम उच्चारते रहते थे क्योंकि वह राम, कृष्ण, कच्छ-मच्छ सबमें भगवान मानते हैं। पहले हम भी ऐसे समझते थे। हमारा भी बुद्धि का ताला बन्द था। अब बाप ने आकर जगाया। सभी को कब्र से निकाल वापिस ले जाते हैं, मच्छरों के सदृश्य। फिर उत्तरते धीरे-धीरे अपने समय पर हैं।

तुमको बाप समझते हैं कि मुझ एक को याद करो। स्टूडेन्ट को भी बाप टीचर याद रहता है। तुमको तो बाप पढ़ाते हैं। यही तुम्हारा गुरु भी है। तीनों का ही फोर्स है। फिर भी ऐसे बाप को भूल जाते हो! ऐसे भी (फुलकास्ट कहलाने वाले) बच्चे हैं

— जो 5 मिनट भी याद नहीं करते हैं। तब कहते हैं अहो मम् माया मैं बच्चों का ताला खोलता हूँ, तुम बंद कर देती हो। जरा भी विकार में गया तो बुद्धि का ताला लॉकप हो जाता है। फिर भी सच सुनाने से सज्जा कम हो जाती है। अगर आपेही जाकर जज को अपना दोष बताये तो कम सजा देंगे। बाबा भी ऐसे करते हैं, अगर कोई बुरा काम कर छिपाता है तो उसको कड़ी सजा मिलती है। तो धर्मराज से कुछ छिपाना नहीं चाहिए। ऐसे बहुत हैं जो विकार में जाकर फिर छिपकर सभा में बैठ जाते हैं लेकिन धर्मराज से क्या छिपा सकते हैं? निश्चय नहीं है तो ऐसे बाप को भी ठगने की कोशिश करते हैं। लेकिन साकार को भल ठग लें, निराकार बाबा तो सब जानते हैं, तुम्हें इस तन से शिक्षा भी वही दे रहे हैं। तुमसे बहुत पूछते हैं कि दादा के तन में परमात्मा कैसे आते हैं? यह तो गृहस्थी था। बाल बच्चे थे, इसमें कैसे आते हैं, क्यों नहीं कोई साधू सन्त के तन में आते हैं? लेकिन परमात्मा को तो पतितों को पावन बनाना है। जो पुजारी से पूज्य बना रहे हैं, ये भी जैसे बाजोली खेलते हैं। ब्राह्मण ही देवता फिर क्षत्रिय, वैश्य.... यह वर्ण भी भारत में हैं। और कहाँ वर्ण नहीं। अब मैं 15 मिनट भाषण किया। ऐसे तुम भी समझा सकते हो। बाबा करके डायरेक्ट बात करते हैं। तुम कहेंगे शिवबाबा ऐसे समझाते हैं शिव अलग है, शंकर अलग है — यह भी साफ-साफ समझाना है। यह है बाबा का परिचय देना। जब गवर्मेन्ट का किताब निकलता है — हूँ इज हूँ। वैसे ही हूँ इज हूँ प्रीआर्डीनेट ड्रामा। हम कहेंगे ऊँचे ते ऊँचा शिवबाबा फिर ब्रह्मा, विष्णु, शंकर फिर लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता फिर धर्म स्थापन करने वाले। इस रीति दुनिया पुरानी होती जाती है। तुम देवतायें वाममार्ग में चले जाते हो। अब बाप आकर जगाते हैं कहते हैं सब मेरे हवाले कर दो और मेरी मत पर चलो। श्रीमत तो उनकी कहेंगे।

बाकी लक्ष्मी-नारायण, सीता-राम, जिनको याद करते वह सब वाममार्ग में चले गये और कौन श्रीमत दे सकता है। भक्तों की मनोकामना भी बाबा ही पूरी करते, भल कोई कच्छ-मच्छ में भावना रखे तो उनकी भी भावना मैं पूरी करता हूँ। उसका अर्थ यह निकाला है कि कच्छ-मच्छ सबमें भगवान है। बाबा बहुत राजा समझाते हैं। लेकिन समझने वाले नम्बरवार हैं तो पद भी नम्बरवार हैं। ये डीटी किंगडम स्थापन हो रही है, धर्म नहीं। धर्म तो दूसरे धर्म वाले स्थापन करते हैं। शिवबाबा तो ब्रह्मा द्वारा राजाओं का राजा बनाते हैं। राजाओं का राजा का अर्थ भी तुमको समझाया है। तुमको विकारी राजायें पूजते हैं, तो कितना बड़ा पद तुमको मिलता है। बाबा की मीठी-मीठी बातें तुमको बहुत अच्छी लगती हैं परन्तु फिर उठकर चाय पी तो नशा कम हो जाता है। गांव में गये तो एकदम उतर जाता है। यहाँ तो जैसे तुम शिवबाबा के घर में बैठे हो। वहाँ बहुत फ़र्क पड़ जाता है। जैसे पति जब परदेश जाते हैं तो पत्नि आंसू बहाती है। वह तो कोई सुख देते नहीं, यह बाबा तो तुम्हें कितना सुख देते हैं, तो इनको छोड़ने में भी रोना आता है! बहुत कहते हैं हम यहाँ ही बैठ जायें। फिर आपके बाल बच्चे कहाँ जायेंगे? कहते हैं आप सम्भालो। हम कितनों के बच्चे सम्भालेंगे! लेकिन ठहरो, सर्विसएबुल बनो तो तुम्हारे बच्चों का भी प्रबन्ध हो जायेगा। शुरू में थोड़े थे तो उनके बच्चे सम्भाले, अब कितने हैं। उन्हों के बच्चे बैठ सम्भालें, उनसे कोई गुम हो जाये तो कहेंगे हमारा बच्चा गुम कर दिया। जिसको सम्भालने रखें — वह भी कहेंगे हम औरों का कर्मबन्धन क्यों सम्भालें। अच्छा फिर तो एक ही शिव बच्चे को सम्भालो तो वह तुम्हारे बच्चे सम्भालेंगे। बाकी ऐसे बाबा को कभी फारकती मत देना। ऐसे बहुतों ने फारकती दी है। उन्हों को मूर्खों के अवतार कहें। भल कोई ब्रह्माकुमार कुमारी से रूठ जाओ लेकिन शिवबाबा से कभी नहीं रूठना। वह तो तुमको राज्य-भाग्य देने आया है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) अपना सब कुछ बाप हवाले कर पूरा श्रीमत पर चलना है। कोई भी बुरा काम करके छिपाना नहीं है, जज को सच बताने से सजा कम हो जायेगी।
- 2) बाप से कभी रूठना नहीं है, सर्विसएबुल बनना है। अपने कर्मबन्धन स्वयं काटने हैं।

**वरदान:-** संगमयुग की हर घड़ी को उत्सव के रूप में मनाने वाले सदा उमंग-उत्साह सम्पन्न भव कोई भी उत्सव, उमंग उत्साह के लिए मनाते हैं। आप ब्राह्मण बच्चों की जीवन ही उत्साह भरी जीवन है। जैसे इस शरीर में श्वांस है तो जीवन है ऐसे ब्राह्मण जीवन का श्वांस ही उमंग-उत्साह है। इसलिए संगमयुग की हर घड़ी उत्सव है। लेकिन श्वांस की गति सदा एकरस, नार्मल होनी चाहिए। अगर श्वांस की गति बहुत तेज हो जाए या स्लो हो जाए तो यथार्थ जीवन नहीं कही जायेगी। तो चेक करो कि ब्राह्मण जीवन के उमंग-उत्साह की गति नार्मल अर्थात् एकरस है!

**स्लोगन:-** सर्व शक्तियों के खजाने से सम्पन्न रहना—यही ब्राह्मण स्वरूप की विशेषता है।

### मातेश्वरी जी के अनमोल महावाक्य

1) यह जो मनुष्य गीत गाते हैं ओ गीता के भगवान अपना वचन निभाने आ जाओ। अब वो स्वयं गीता का भगवान अपना कल्प पहले वाला वचन पालन करने के लिये आया है और कहते हैं हे बच्चे, जब भारत पर अति धर्म ग्लानि होती है तब मैं इसी समय अपना अन्जाम पालन करने (वायदा निभाने) के लिये अवश्य आता हूँ, अब मेरे आने का यह मतलब नहीं कि मैं कोई युगे युगे आता हूँ। सभी युगों में तो कोई धर्म ग्लानि नहीं होती, धर्म ग्लानि होती ही है कलियुग में, तो मानो परमात्मा कलियुग के समय आता है। और कलियुग फिर कल्प कल्प आता है तो मानो मैं कल्प कल्प आता हूँ। कल्प में फिर चार युग हैं, इसको ही कल्प कहते हैं। आधाकल्प सत्युग त्रेता में सतोगुण सतोप्रधान है, वहाँ परमात्मा के आने की कोई जरूरत नहीं। और फिर तीसरा द्वापर युग से तो फिर दूसरे धर्मों की शुरूआत है, उस समय भी अति धर्म ग्लानि नहीं है इससे सिद्ध है कि परमात्मा तीनों युगों में तो आता ही नहीं है, बाकी रहा कलियुग, उसके अन्त में अति धर्म ग्लानि होती है। उसी समय परमात्मा आए अधर्म विनाश कर सत् धर्म की स्थापना करता है। अगर द्वापर में आया हुआ होता तो फिर द्वापर के बाद तो अब सत्युग होना चाहिए फिर कलियुग क्यों? ऐसे तो नहीं कहेंगे परमात्मा ने घोर कलियुग की स्थापना की, अब यह तो बात नहीं हो सकती इसलिए परमात्मा कहते हैं मैं एक हूँ और एक ही बार आए अधर्म का विनाश कर, कलियुग का विनाश कर सत्युग की स्थापना करता हूँ तो मेरे आने का समय संगमयुग है।

2) अब यह तो हम जानते हैं कि मनुष्य आत्मा की किस्मत बनाने वाला कौन है और किस्मत बिगड़ने वाला कौन है? हम ऐसे नहीं कहेंगे कि किस्मत बनाने वाला, बिगड़ने वाला वही परमात्मा है। बाकी यह जरूर है कि किस्मत को बनाने वाला परमात्मा है और किस्मत को बिगड़ने वाला खुद मनुष्य है। अब यह किस्मत बने कैसे? और फिर गिरे कैसे? इस पर समझाया जाता है। मनुष्य जब अपने को जानते हैं और पवित्र बनते हैं तो फिर से वो बिगड़ी हुई तकदीर को बना लेते हैं। अब जब हम बिगड़ी हुई तकदीर कहते हैं तो इससे साबित है कोई समय अपनी तकदीर बनी हुई थी, जो फिर बिगड़ गई है। अब वही फिर बिगड़ी तकदीर को परमात्मा खुद आकर बनाते हैं। अब कोई कहे परमात्मा खुद तो निराकार है वो तकदीर को कैसे बनायेगा? इस पर समझाया जाता है, निराकार परमात्मा कैसे अपने साकार ब्रह्मा तन द्वारा, अविनाशी नॉलेज द्वारा हमारी बिगड़ी हुई तकदीर को बनाते हैं। अब यह नॉलेज देना परमात्मा का काम है, बाकी मनुष्य आत्मायें एक दो की तकदीर को नहीं जगा सकती हैं। तकदीर को जगाने वाला एक ही परमात्मा है तभी तो उन्होंका यादगार मन्दिर कायम है। अच्छा। ओम् शान्ति।

**‘‘मीठे बच्चे - हीरे जैसा जीवन बनाने वाले बाप को बहुत खुशी-खुशी से याद करो  
तो जंक निकल जायेगी’’**

**प्रश्न:-** माला का दाना कौन बनेंगे, उसका पुरुषार्थ क्या है?

**उत्तर:-** माला का दाना वही बनेंगे जिसे अन्त में कुछ भी याद न पड़े। ऐसे बच्चे जो कर्मातीत अवस्था को पायेंगे वही माला का दाना बनेंगे। कोई बहुत धनवान हैं, अनेक कारखाने आदि हैं... तो वह सब भूलना पड़े। किसी में भी ममत्व न रहे। मेरा-मेरा न हो। बस यह भाई (आत्मा) है, यही रुहानी कनेक्शन है और कोई कनेक्शन नहीं। ऐसे रुहानी कनेक्शन रखने वाले, सब कुछ भूलने वाले बच्चे ही माला में आ सकते हैं।

**ओम् शान्ति।** रुहानी बाप रुहानी बच्चों को समझाते हैं, यह तो जरूर पक्का निश्चय हो गया होगा कि हम आत्मा हैं और परमात्मा बाप के बच्चे हैं, तो सभी ब्रदर्स ही हैं। ब्रदर्स को बाप ने डायरेक्शन दिया है कि मुझ पतित-पावन बाप को याद करो। तो याद करते हो या बुद्धि का योग कहाँ और जगह भटकता है? माया भटकायेगी जरूर, न चाहते हुए भी तुम्हारी बुद्धि कहाँ न कहाँ भागती रहेगी। बच्चों के अन्दर चलना चाहिए कि बाबा ने हमको सृष्टि चक्र का ज्ञान दिया है, 84 जन्मों की कहानी पढ़ाई है। यह 84 का चक्र पूरा हुआ है। हम फिर से घर जाते हैं, अनेक बार हम याद की यात्रा से पवित्र बन करके घर गये हैं। तुम्हारी बुद्धि में आता है कि हम सब भाई-भाई हैं, इसमें जिस्म की कोई बात ही नहीं है। तुम जिस्म को याद नहीं करो। सिर्फ हम आत्मा हैं - हम ही पावन, सतोप्रधान थे, अब पतित बने हैं तो हीरे जैसा जीवन बनाने वाले बाप को खुशी से याद करना है, जिससे जंक निकल जाये। तो बाप समझाते हैं बच्चे पहले-पहले अपने को आत्मा समझो, यह भी ज्ञान है फिर बाप को याद करो - यह है विज्ञान क्योंकि आत्मा को ज्ञान से परे विज्ञान में, शान्त घर में जाना है। आत्मा का स्वर्धमं भी शान्त है और घर भी शान्त है। तो पहले हमको वहाँ पहुंचने का है। बाबा भी वहाँ से आये हुए हैं। परन्तु मनुष्यों को इन सब बातों का पता नहीं है।

यह पारलैकिक बाप सन्मुख बैठ करके समझाते हैं, बच्चों मैं परमधाम से तुम बच्चों के पास आया हुआ हूँ, ड्रामा के प्लैन अनुसार। क्यों आया हूँ? तुमको वापस ले जाने के लिये। अभी तुम पतित विकारी हो गये हो। जन्म-जन्मान्तर विकार से ही पैदा हुए हो इसलिए भ्रष्टाचारी कहा जाता है। तो हम भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी कैसे बनें - यह बाप समझाते हैं, बच्चे मुझे याद करो तो पवित्र श्रेष्ठाचारी बन जायेंगे। इस याद में तुम सबकुछ कर सकते हो। ऐसे नहीं कि धन्धाधोरी नहीं कर सकते हो।

बच्चे, बाप से पूछते हैं बाबा माला के दाने कौन बनेंगे? बच्चे, माला का दाना वही बनेंगे जो कर्मातीत अवस्था को पायेंगे। जिसको अन्त में कुछ भी याद न पड़े। कोई बहुत धनवान हैं, अनेक कारखाने आदि हैं... तो वह सब भूलना पड़े। तुम्हारे पास तो कुछ भी नहीं है। तुम जानते हो हम बाप के बच्चे हैं, भाई हैं। हमारा किसी में भी ममत्व नहीं है। मेरा-मेरा तो नहीं है ना! बस यह भाई है, यही कनेक्शन है और कोई कनेक्शन नहीं। इसे कहा जाता है रुहानी कनेक्शन। इतनी सारी आयु तो देह ही याद आई, आत्मा तो किसको याद ही नहीं आई। यह भी ड्रामा बना हुआ है, तो यह बातें बाप समझाते हैं और पावन बनने के लिए पुरुषार्थ कराते हैं। बाबा तुम बच्चों को टाइम तो देते हैं सिर्फ 8 घण्टा मुझे याद करो। वह है हृद की सर्विस, यह है सारे वर्ल्ड की सर्विस। जरूर खायेंगे, पियेंगे, सोयेंगे, घूमेंगे.... सारा दिन तो कोई याद भी नहीं कर सकते। तुम बरोबर अभी बेहद की सर्विस करते हो। जैसे बाप विचार सागर मंथन करते हैं, ऐसे तुम बच्चों को भी मंथन करना सिखलाते हैं, करन-करावनहार है ना, तो तुमको करके ही सिखलाते हैं। पुरुषार्थ करते-करते तुम्हारी विजयी माला बन जायेगी। सतयुग त्रेता में जो भी आते हैं वह विजयी होते हैं। फिर सब एक्टर्स इस नाटक में पार्ट बजाने के लिए नम्बरवार आते हैं। सब इकट्ठे तो नहीं आ जायेंगे। तुम सभी एक्टर्स के रहने का स्थान ब्रह्म लोक है, वहाँ से यहाँ आ करके शरीर लेते हो। यह सब बातें बहुत सहज हैं, जो तुम बच्चों को ही याद रहती हैं। तुम्हारा घर स्वीट होम, साइलेन्स होम है। दूसरा कोई भी अपने घर को नहीं जानता है। वह तो कह देते हैं हम लीन हो जायेंगे। जैसे सागर से बुद्बुदा

निकलता है फिर उसी में समा जाता है, ऐसे हम भी उस ब्रह्म में लीन हो जाते हैं.. फिर कह देते हैं जहाँ देखो वहाँ ब्रह्म ही ब्रह्म है। वो ब्रह्म को ही ईश्वर समझते हैं इसलिए तुम्हारी बातें उनकी बुद्धि में बैठती नहीं हैं। तुम उनको उल्टा समझेंगे वो तुमको उल्टा समझेंगे क्योंकि उनका धर्म ही अपना है। परन्तु तुम जानते हो सभी आत्मायें शान्तिधाम में जरूर जायेंगी। बाकी हर एक आत्मा को अपना-अपना पार्ट मिला हुआ है। इसको ही तो बन्दर कहते हैं। तुम बच्चे अभी कितनी महीनता में जाते हो, आत्मा कितनी छोटी है, कैसे पार्ट बजाती है। तो यह ज्ञान जैसे बाप के पास है, वह ज्ञान का सागर है, ऐसे तुम बच्चों के पास भी है, तुम अभी ऐसे ज्ञानवान बनते जाते हो। वह हैं भक्तिवान, तुम हो ज्ञानवान। भक्तिवान माना रात के रहने वाले और ज्ञानवान माना दिन के रहने वाले। आधाकल्प तुम सुखधाम में रहते हो, आधाकल्प दुःखधाम में रहते हो, इसको कहा जाता है दूरांदेशी, तुम्हारी बुद्धि अभी बहुत दूर-दूर जाती है - हम आत्मा स्वीट होम, ब्रह्माण्ड के रहने वाले हैं। बाप इस मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है, क्योंकि वह नॉलेजफुल है, उनको झाड़ की नॉलेज है। तुम अभी शरीर का भान मिटाने के लिये अपने को आत्मा समझते हो। दूसरी कोई भी चीज़ याद न आये। पूरा आत्म-अभिमानी बन जाना है। मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, मेरे पास कुछ है ही नहीं जो आत्मा को याद पड़े। गाया जाता है अन्तकाल जो जो सिमरे, तो अगर कोई भी चीज़ होगी तो जरूर वह याद आयेगी। यह विचार करने की बात है। अगर कुछ भी है, कोई मित्र सम्बन्धी आदि भी हैं तो याद आयेगा जरूर। तुमने तो अपना सब कुछ शिवबाबा को दे दिया, फिर ऐसे नहीं समझो कि यह मेरी चीज़ है। जब बाबा को दे दिया फिर तुमको याद ही क्यों आये, तुम भूल जाओ। अगर वह याद पड़ता रहता है तो वो भी पिछाड़ी में नुकसान कर देगा। अभी तुमको यह सब नई-नई बातें मिलती हैं। पुरानी कोई भी चीज़ तुम्हारे पास नहीं है। जैसे पुरानी चीजें सब करनीघोर को दे देते हैं ना। ऐसे तुम भी अपना सब कुछ दे देते हो फिर याद नहीं आनी चाहिए। बस यही याद रहे कि मैं भाई (आत्मा) हूँ, बाबा का बच्चा हूँ, मेरे पास कुछ भी है ही नहीं। शरीर भी नहीं है। फिर नई दुनिया में सब नई चीजें मिलेंगी। वहाँ तो हीरे जवाहरात के महलों में जायेंगे। तो वह भविष्य की बात हुई। बाबा पूछते हैं बच्चे तुम क्या बनेंगे, तो बच्चे कहते हैं बाबा हम तो नारायण बनेंगे। यह तो खुशी की बात हुई ना। परन्तु अभी जब कोई भी पुरानी चीज़ याद न आये तब माला का दाना बनेंगे। 108 की माला तो राजाई की है। मन्दिरों में फिर 16108 की भी माला रखी होती है। तो माला के दाने बहुत ही बनेंगे। जितना जल्दी आयेंगे उतना सुख पायेंगे। जो पीछे आते हैं उन्होंने इतना सुख नहीं पाया है, उनके लिए थोड़ा टाइम सुख है तो दुःख भी कम ही पायेंगे।

तो बाबा कहते हैं बच्चे यह ख्याल रखो कि पिछाड़ी में कुछ भी याद न आये। जो अर्पण किया हुआ है वह भी याद नहीं आना चाहिए। बाप कहते हैं मैं ऐसी कोई चीज़ नहीं लेता हूँ जो रह जावे और उसका वहाँ भरकर देना पड़े, क्योंकि मैं गरीब निवाज़ हूँ। कई हैं जो देकरके फिर जब कोई कारण से भागन्ती हो जाते हैं तो मांगने लग पड़ते हैं। माया उनको एकदम डस लेती है। नहीं तो कहते हैं चाहे मारो चाहे प्यार करो, यह मस्ताना तुम्हारा दर कभी नहीं छोड़ेगा। कभी नहीं भूलेगा। तुम बच्चे यहाँ नर से नारायण बनने के लिये आये हो, तुम्हें कितना बड़ा वर्सा मिलता है, फिर यह क्यों कहते हो कि हम देते हैं। तुम तो लेते हो ना। कौन कहता है तुम कुछ दो। बाकी कोई एक पैसा भी देंगे तो वहाँ उनके लिए महल बन जायेगा। जैसे सुदामा ने चावल मुट्ठी दी। तो बच्चे सुदामा मिसल दाल चावल ले आते हैं, समझते हैं कि हमको महल मिल जायेंगे। ऐसे बच्चों पर बाप बहुत खुश होते हैं वाह! इनके नई दुनिया में महल बनने वाले हैं क्योंकि बहुत प्यार और सद्भावना से ले आते हैं। अहो भाग्य ऐसे बच्चों का, बहुत ऊंचा पद पायेंगे।

अभी ड्रामा के प्लैन अनुसार बाबा और तुम बच्चों की कदम-कदम वही चाल चलती है जो कल्प-कल्प चली है। तुम्हारे कदम-कदम में पदम हैं। देवताओं के पैर में पदम दिखाते हैं तो इसका भी कोई अर्थ होगा ना। अभी तुम्हारी पदमों की आमदनी होती रहती है। तुम बाबा के पास पदमापदमपति बनने के लिए आते हो। तो तुम इतने महान, महान, महान भाग्यशाली हो परन्तु उसमें भी फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार हैं। तुम्हारा पुरुषार्थ कल्प-कल्प वही ड्रामा के प्लैन अनुसार चलता है, जैसेकि ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराता रहता है। ईश्वर भी ड्रामा के अनुसार तुम्हें मत देते हैं। तो ड्रामा के वश हुए ना। फिर यह ड्रामा किसके वश है? बच्चे, ड्रामा अनादि बना हुआ है, यह कोई नहीं कह सकता है कि ड्रामा कब बना? यह तो चलता ही रहता है। ड्रामा में नम्बरवन मत मिलती है ईश्वर की इसलिए उसको कहा जाता है – ईश्वरीय मत, जो

तुम्हें देवता बनाती है और मनुष्य की मत छी-छी बनाती है। ईश्वरीय मत से तुम मनुष्य से देवता बनते हो। फिर 21 जन्मों के बाद मनुष्य मत पर मनुष्य बन जाते हो। अभी यह गीता का एपीसोड संगमयुग है जबकि दुनिया बदलती है। तो यह बच्चों की बुद्धि में होना चाहिए और बच्चों को बहुत-बहुत मीठा बनना चाहिए। प्यार से चलना होता है। जो बच्चे शान्त और मीठे हैं, उनका पद भी ऊँचा होगा। अभी तुम्हें ईश्वरीय बुद्धि मिली है, तुम समझते हो कि हम बेहद के बाबा की सन्तान बने हैं, बाबा से वर्सा ले रहे हैं। तो अथाह खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं बच्चे स्वर्ग से भी यहाँ तुम्हारा बहुत-बहुत ऊँच पद है। बाप सिर्फ तुमको पढ़ाते हैं। भगवानुवाच, मैं तुमको डबल सिरताज राजाओं का राजा बनाता हूँ, तो अपनी तकदीर पर तुमको बहुत खुश रहना चाहिए। वाह! बाबा आ करके क्या हमारी तकदीर बनाते हैं, जो पत्थर जैसे जीवन को हीरे जैसा बना देते हैं! अच्छा!

मीठे मीठे सिकीलधे रुहानी बच्चों प्रति रुहानी बाप व दादा का याद प्यार और गुडमार्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।

### धारणा के लिए मुख्य सार:-

- 1) ऊँच पद पाने के लिए बहुत-बहुत शान्तचित्त रहना है, मीठा बनना है, सबके साथ प्यार से चलना है।
- 2) जो कुछ बाबा को अर्पण कर दिया, उसे भूल जाना है, उसकी याद भी न आये। कभी यह संकल्प भी न आये कि हम बाबा को देते हैं।

**वरदान:-** ब्राह्मण जीवन में काम महाशत्रु के साथ उसके सर्व साथियों को भी विदाई देने वाले सम्पूर्ण पवित्र भव

ब्राह्मण जीवन में जैसे काम महाशत्रु को जीतने के लिए विशेष अटेन्शन रखते हो, ऐसे उसके सभी साथियों को भी विदाई दो। कई बच्चे क्रोध महाभूत को तो भगाते हैं लेकिन क्रोध के बाल-बच्चों से थोड़ी प्रीत रखते हैं। जैसे छोटे बच्चे अच्छे लगते हैं ऐसे इस क्रोध के भी छोटे बच्चे कभी-कभी प्यारे लगते हैं, लेकिन सम्पूर्ण पवित्र तब कहेंगे जब कोई भी विकार का अंश न रहे। ऐसा पक्का व्रत लो तब कहेंगे सच्चे ब्राह्मण।

**स्लोगन:-** संगमयुग की मौज का अनुभव करना है तो माया की अधीनता से स्वतन्त्र रहो।

### कर्मों की गुह्य गति के ज्ञाता बनो

आज सर्व खजानों के देने वाले बाप सर्व बच्चों के जमा का खाता देख रहे थे। खजाने तो सर्व बच्चों को अखुट मिले हैं और सर्व को एक जैसा, एक द्वारा सर्व खजाने मिले हैं। एक खजाना नहीं लेकिन अनेक खजाने प्राप्त हुए हैं। फिर भी जमा का खाता हर एक का अलग-अलग है। कोई ने सर्व खजाने अच्छी रीति जमा किये हैं और कइयों ने यथा शक्ति जमा किया है। और जितना जमा किया है उतना ही चलन और चेहरे में वह रूहानी नशा दिखाई देता है, जमा करने का रूहानी फखुर अनुभव होता है। रूहानी फखुर की पहली निशानी यही है कि जितना फखुर है उतना बेफिर बादशाह की झलक उनके हर कर्म में दिखाई देती है क्योंकि जहाँ रूहानी फखुर है वहाँ कोई फिक्र नहीं रह सकता। यह फखुर और फिक्र दोनों एक समय, एक साथ नहीं रह सकते हैं। जैसे रोशनी और अंधकार साथ नहीं रह सकते हैं।

बेफिर बादशाह की विशेषता वह सदा प्रश्नचित्त के बजाए प्रसन्नचित्त रहते हैं। हर कर्म में स्व के सम्बन्ध में वा सर्व के सम्बन्ध में वा प्रकृति के भी सम्बन्ध में किसी भी समय, किसी भी बात में संकल्प-मात्र भी क्वेश्चन मार्क नहीं होगा कि ‘यह ऐसा क्यों’ वा ‘यह क्या हो रहा है’, ‘ऐसा भी होता है क्या’? प्रसन्नचित्त आत्मा के संकल्प में हर कर्म को करते, देखते, सुनते, सोचते यही रहता है कि जो हो रहा है वह मेरे लिए अच्छा है और सदा अच्छा ही होना है। प्रश्नचित्त आत्मा ‘क्या’, ‘क्यों’, ‘ऐसा’, ‘वैसा’ इस उलझन में स्वयं को बेफिर से फिक्र में ले आती है। और बेफिर आत्मा बुराई को भी अच्छाई में परिवर्तन कर लेती, इसलिए वह सदा प्रसन्न रहती।

आजकल के साइन्स के साधन से भी जो वेस्ट-खराब माल होता है, उसको परिवर्तन कर अच्छी चीज़ बना देते हैं। तो प्रसन्नचित्त आत्मा साइलेन्स की शक्ति से चाहे बात बुरी हो, सम्बन्ध बुरे अनुभव होते हों, लेकिन वह बुराई को अच्छाई में परिवर्तन कर स्वयं में भी धारण करेगी और दूसरे को भी अपनी शुभ भावना के श्रेष्ठ संकल्प से बुराई को बदल अच्छाई धारण करने की शक्ति देगी। कई बच्चे सोचते हैं, कहते हैं कि ‘‘जब है ही बुरी वा ग़लत बात, तो ग़लत को ग़लत तो कहना ही पड़ेगा ना! वा ग़लत को ग़लत तो समझना ही पड़ेगा ना!’’ लेकिन ग़लत को ग़लत समझना यह समझने के हिसाब से समझा। वह राइट और रांग समझना, जानना अलग बात है लेकिन नॉलेजफुल रूप से जानने वाले समझने के बाद स्वयं में किसी भी आत्मा की बुराई को बुराई के रूप में अपनी बुद्धि में धारण नहीं करेंगे। तो समझना अलग चीज़ है, समझने तक राइट है। लेकिन स्वयं में वा अपने चित पर, अपनी बुद्धि में, अपनी वृत्ति में, अपनी वाणी में दूसरे की बुराई को बुराई के रूप में धारण नहीं करना है, समाना नहीं है। तो समझना और धारण करना इसमें अन्तर है।

अपने को बचाने के लिए यह कह देते हैं कि यह है ही रांग, रांग को तो रांग कहना पड़ेगा ना। लेकिन समझदार का काम क्या होता है? समझदार अगर समझता है कि यह बुरी चीज़ है, तो क्या बुरी समझते हुए अपने पास जमा करेगा? अपने पास अच्छी रीति सम्भाल कर रखेगा? छोड़ देगा ना। या जमा करना ही समझदारी है? यह समझदारी है? और सोचो, अगर बुरी बात वा बुरी चलन को स्वयं में धारण कर लिया, तो क्या आपकी बुद्धि, वृत्ति, वाणी सदा सम्पूर्ण स्वच्छ मानी जायेगी? अगर जरा भी कोई डिफेक्ट वा दाग रह जाता है, किंचड़ा रह जाता है तो डिफेक्ट वाला कभी परफेक्ट नहीं कहला सकता, प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता। अगर कोई की बुराई चित्त पर है, तो उसका चित्त सदा प्रसन्नचित्त नहीं रह सकता और चित्त पर धारण की हुई बातें वाणी में जरूर आयेंगी, चाहे एक के आगे वर्णन करे, चाहे अनेक के आगे वर्णन करे। लेकिन कर्मों की गति का गुह्य रहस्य सदा सामने रखो। अगर किसी की भी बुराई वा ग़लत बात चित्त पर रखने के साथ वर्णन करते हो, तो यह व्यर्थ वर्णन ऐसा ही है जैसे कोई गुम्बज़ में आवाज़ करता है तो वह अपना ही आवाज़ और ही बड़े रूप में बदल अपने पास ही आता है। गुम्बज़ में आवाज़ करके देखा है? तो अगर किसी की बुराई करने के, ग़लत को ग़लत फैलाने के संस्कार हैं, जिसको आप लोग आदत कहते हो, तो आज आप किसकी ग्लानि करते हो और अपने को बड़ा समझदार, ग़लती से दूर समझकर वर्णन करते हो, लेकिन यह पक्का नियम है अथवा कर्मों की फिलॉसफी है कि आज आपने किसकी ग्लानि की और कल आपकी कोई दुगुनी ग्लानि करेगा क्योंकि यह ग़लत बातें इतनी फास्ट गति से फैलती हैं जैसे कोई विशेष बीमारी के जर्म्स (जीवाणु) बहुत जल्दी फैलते हैं और फैलते हुए जर्म्स जिसकी ग्लानि की

वहाँ तक पहुँचते जरूर हैं। आपने एक ग्लानि की होगी और वह आपको ग़लत सिद्ध करने के लिए आपकी दस ग्लानि करेंगे। तो रिजल्ट क्या हुई? कर्मों की गति क्या हुई? लौट कर कहाँ आई? अगर आपको शुभ भावना है उस आत्मा को ठीक करने की, तो ग़लत बात शुभ भावना के स्वरूप में विशेष निमित्त स्थान पर दे सकते हो, फैलाना रांग है। कई कहते हैं हमने किसको कहा नहीं, लेकिन वो कह रहे थे तो मैंने भी हाँ में हाँ कर दिया, बोला नहीं। आपके भक्ति-मार्ग के शास्त्रों में भी वर्णन है कि बुरा काम किया नहीं लेकिन देखा भी, साथ भी दिया तो वह पाप है। ‘हाँ’ में ‘हाँ’ मिलाना, यह भी कर्मों की गति के प्रमाण पाप में भागी बनना है।

वर्तमान समय कर्मों की गति के ज्ञान में बहुत इज़्जी हो गये हैं। लेकिन यह छोटे-छोटे सूक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्न रूप बनते हैं। इज़्जी बनने की निशानियाँ क्या हैं? वह सदा ऐसा ही सोचते-समझते कि यह तो और भी करते हैं, यह तो आजकल चलता ही है। या तो अपने आपको हल्का करने के लिए यही कहेंगे कि मैंने हंसी में कहा, मेरा भाव नहीं था, ऐसे ही बोल दिया। यह विधि सम्पूर्ण सिद्धि को प्राप्त होने में सूक्ष्म विघ्न बन जाता है इसलिए ज्ञान तो बहुत मिल गया है, रचता और रचना के ज्ञान को सुनना, वर्णन करना बहुत स्पष्ट हो गया है। लेकिन कर्मों की गुह्या गति का ज्ञान बुद्धि में सदा स्पष्ट नहीं रहता, इसलिए इज़्जी हो जाते हैं। कई बच्चों की अपने प्रति भी कम्लेन होती है कि जैसे बाप कहते हैं, बाप बच्चों में जो श्रेष्ठ आशाएं रखते हैं, जो चाहते हैं, जितना चाहते हैं उतना नहीं है। इसका कारण क्या है? ये अति सूक्ष्म व्यर्थ कर्म बुद्धि को, मन को ऊंचा अनुभव करने नहीं देते। योग लगाने बैठते हैं लेकिन काफी समय युद्ध में चला जाता, व्यर्थ को मिटाए समर्थ बनने में समय चला जाता है इसलिए क्या करना चाहिए? जितना ऊंचा बनते हैं, तो ऊंचाई में अटेन्शन भी ऊंचा रखना पड़ता है।

ब्राह्मण जीवन की मौज में रहना है। मौज में रहने का अर्थ यह नहीं कि जो आया वह किया, मस्त रहा। यह अल्पकाल के सुख की मौज वा अल्पकाल के सम्बन्ध-सम्पर्क की मौज सदाकाल की प्रसन्नचित्त स्थिति से भिन्न है। इसी को मौज नहीं समझना। जो आया वह बोला, जो आया वह किया हम तो मौज में रहते हैं। अल्पकाल के मनमौजी नहीं बनो। सदाकाल की रुहानी मौज में रहो। यही यथार्थ ब्राह्मण जीवन है। मौज में भी रहो और कर्मों की गति के ज्ञाना भी रहो। तब ही जो चाहते हो, जैसे चाहते हो वैसे अनुभव करते रहेंगे। समझा? कर्मों की गुह्या गति के ज्ञाना बनो। फिर खजानों के जमा की रिजल्ट सुनायेंगे। अच्छा!

चारों ओर के फिक्र से फारिंग बेफिक्र बादशाह आत्माओं को, सदा प्रसन्नचित्त विशेष आत्माओं को, सदा स्वयं प्रति और सर्व आत्माओं प्रति श्रेष्ठ परिवर्तन शक्ति को कर्म में लाने वाले कर्मयोगी आत्माओं को, सदा रचता-रचना के ज्ञाना और कर्म-फिलॉसफी के भी ज्ञाना – ऐसे ज्ञान-स्वरूप आत्माओं को बापदादा का याद, प्यार और नमस्ते।

### दादियों के साथ मुलाकात

वर्तमान समय किस बात की आवश्यकता है? कर्मों की गुह्या गति का ज्ञान मर्ज हो गया है, इसलिए अलबेलापन है। पुरुषार्थी भी हैं लेकिन पुरुषार्थ में अलबेलापन आ जाता है इसलिए अभी इसकी आवश्यकता है। बापदादा सभी की रिजल्ट को देखते हैं। जो चल रहा है वो अच्छा है। लेकिन अभी अच्छे ते अच्छा बनना ही है। बिज़ी रहना पड़ता है ना। ज्यादा समय बिजी किसमें रहना पड़ता है? किस बात में ज्यादा समय देना पड़ता है? चाहे आप लोगों की अपनी स्थिति न्यारी और प्यारी है, लेकिन समय तो देना पड़ता है। तो यही समय पॉवरफुल शक्तिशाली लाइट हाउस, माइट हाउस बन वायब्रेशन्स फैलाने में जाये तो क्या हो जायेगा? संगठित रूप में यही वातावरण हो, और कोई बात ही नहीं हो तो क्या वायब्रेशन विश्व में या प्रकृति तक पहुँचेगा? अभी तो सभी लोग इन्तजार कर रहे हैं कि कब हमारे रचता वा मास्टर रचता सम्पन्न या सम्पूर्ण बन हम लोगों से अपनी स्वागत कराते। प्रकृति भी तो स्वागत करेगी ना। तो वह सफलता की माला से स्वागत करे वो दिन आना ही है। जब सफलता के बाजे बजेंगे तब प्रत्यक्षता के बाजे बजेंगे। बजने तो हैं ही ना। अच्छा!

### दादी चन्द्रमणि जी सेवा पर जाने की छुट्टी ले रही हैं

आलराउन्ड बनना ही श्रेष्ठ सेवा है। अच्छा है, चक्कर लगाते रहो। चक्कर लगाने का पार्ट बच्चों का ही है। बाप तो अव्यक्त रूप में लगा सकते हैं। साकार रूप में भी चक्कर लगाने का पार्ट बाप का नहीं रहा, बच्चों का ही था। अच्छा!

**अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात -विजयी माला में आने के लिये तीव्र पुरुषार्थी बनो**  
 सदा तीव्र पुरुषार्थी आत्माएं हैं ऐसे अनुभव करते हो? जब ब्राह्मण बने तो पुरुषार्थी तो हैं ही। तीव्र पुरुषार्थी हैं वा सिर्फ पुरुषार्थी हैं? सुनने और सुनाने वाले को पुरुषार्थी कहेंगे या तीव्र पुरुषार्थी कहेंगे? सुनना और सुनाना, उसके बाद क्या होता है? तीव्र पुरुषार्थी किसको कहेंगे – सुनने वाले को या बनने वाले को? जो माला का 16108वाँ नम्बर है वह भी सुनता और सुनाता तो है ही। नहीं तो माला में कैसे आयेगा। लेकिन 108 की माला में कौन आयेगे? 108 की माला का नाम है विजयी माला। 16000 वाली माला का नाम विजयी माला नहीं है। तो सुनना और सुनाना, यह मैजारिटी करते हैं। लेकिन सुना और बना इसको कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थी। तीव्र पुरुषार्थी 108 हैं और पुरुषार्थी 16108 हैं। तो अपने आपको चेक करो कि तीव्र पुरुषार्थी हैं या पुरुषार्थी हैं? जो हैं, जैसा हैं वह मैजारिटी अपने आपको जान सकते हैं। कोई थोड़े ऐसे हैं जो अपने को नहीं भी जानते हैं, रांग को राईट समझकर भी चलते जाते हैं। मैजारिटी अपने मन में अपने आपको सत्य जानते हैं कि मैं कौन हूँ? इसलिए सदा अपने को देखो, दूसरे को नहीं।

अपने पुरुषार्थ को चेक करो और तीव्र पुरुषार्थ में चेंज करो। नहीं तो फाइनल समय आने पर चेंज नहीं कर सकेंगे। उस समय पढ़ाई का समय समाप्त होने पर, इम्तहान के समय पढ़ाई का चांस नहीं मिलता। अगर कोई स्टूडेन्ट समझे – एक प्रश्न का उत्तर नहीं आता है, किताब से पढ़कर उत्तर दे दें तो राइट होगा या रांग होगा? तो उस समय अपने को चेंज नहीं कर सकेंगे। जो है, जैसा है, वैसे ही प्रालब्ध प्राप्त कर लेंगे। लेकिन अभी चांस है। अभी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है, लेट का लगा है। लेट हो गये लेकिन टू लेट नहीं इसलिए फिर भी मार्जिन है। कई स्टूडेन्ट 6 मास में भी पास विद् ऑनर हो जाते हैं अगर सही पुरुषार्थ करते हैं तो। लेकिन समय समाप्त होने के बाद कुछ नहीं कर सकते। बाप भी रहम करना चाहे तो भी नहीं कर सकते। चलो, यह अच्छा है, इसको मार्क्स दे दो यह बाप कर सकता है? इसलिए अभी से चेक करो और चेंज करो।

अलबेलापन छोड़ दो। ठीक हैं, चल रहे हैं, पहुँच जायेंगे यह अलबेलापन है। अलबेले को इस समय तो मौज लगती है। जो अलबेला होता है उसे कोई फिक्र नहीं होता है, वह आराम को ही सबकुछ समझता है। तो अलबेलापन नहीं रखना। सदा अलर्ट! पाण्डव सेना हो ना। सेना अलबेली रहती है या अलर्ट रहती है? सेना माना अलर्ट, सावधान, खबरदार रहने वाले। अलबेला रहने वाले को सेना का सैनिक नहीं कहा जायेगा। तो अलबेलापन नहीं, अटेन्शन! लेकिन अटेन्शन भी नेचुरल विधि बन जाये। कई अटेन्शन का भी टेन्शन रखते हैं। टेन्शन की लाइफ सदा तो नहीं चल सकती। टेन्शन की लाइफ थोड़ा समय चलेगी, नेचुरल नहीं चलेगी। तो अटेन्शन रखना है लेकिन ‘नेचुरल अटेन्शन’ आदत बन जाये। जैसे विस्मृति की आदत बन गई थी ना। नहीं चाहते भी हो जाता है। तो यह आदत बन गई ना, नेचुरल हो गई ना। ऐसे स्मृतिस्वरूप रहने की आदत हो जाये, अटेन्शन की आदत हो जाये इसलिए कहा जाता है आदत से मनुष्यात्मा मजबूर हो जाती है। न चाहते भी हो जाता है इसको कहते हैं मजबूर। तो ऐसे तीव्र पुरुषार्थी बने हो? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् विजयी। तभी माला में आ सकते हैं।

बहुतकाल का अभ्यास चाहिए। सदैव अलर्ट माना सदा एवररेडी! आपको क्या निश्चय है विनाश के समय तक रहेंगे या पहले भी जा सकते हैं? पहले भी जा सकते हैं ना इसलिए एवररेडी। विनाश आपका इन्तजार करे, आप विनाश का इन्तजार नहीं करो। वह रचना है, आप रचता हो। सदा एवररेडी। क्या समझा? अटेन्शन रखना। जो भी कमी महसूस हो उसे बहुत जल्दी से जल्दी समाप्त करो। सम्पन्न बनना अर्थात् कमजोरी को खत्म करना। ऐसे नहीं यहाँ आये तो यहाँ के, वहाँ गये तो वहाँ के। सभी तीव्र पुरुषार्थी बनकर जाना। अच्छा!

**वरदान:- विश्व से अंधकार को मिटाकर रोशनी देने वाले मास्टर ज्ञान सूर्य भव**

मास्टर ज्ञान सूर्य वह हैं जो विश्व से अंधकार को मिटाकर रोशनी देने वाले हैं। वह स्वयं भी प्रकाश स्वरूप, लाइट-माइट रूप हैं और दूसरों को भी लाइट-माइट देने वाले हैं। जहाँ सदा रोशनी होती है वहाँ अंधकार का सवाल ही नहीं, अंधकार हो ही नहीं सकता। जो विश्व को रोशनी देने वाले हैं वह स्वयं अंधकार में नहीं रह सकते। सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् रोशनी। उनके पास अंधकार अर्थात् विकारों का अंश भी नहीं रह सकता।

**स्लोगन:- स्वभाव, संस्कार, सम्बन्ध-सम्पर्क में लाइट रहना ही मिलनसार बनना है।**